



620

॥ श्रीः ॥

श्रीभुवनेश्वरीविजयतेतराम् ।

पत्रीमार्गप्रदीपिका

वर्षदीपकं च ।

दैवज्ञवर्य्यश्रीमन्महादेवशर्मविरचिते,

तदात्मज-

रत्नललाम (रतलाम) नगरनिवासिपाठकोपाह्वौदुम्बर-

ज्यौ० श्रीनिवासशर्मकृत,

भाषाटीकासहिते ।

त एते

श्रीकृष्णदासात्मजेन खेमराजेन

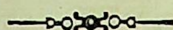
मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रालयेऽङ्कयित्वा

प्रकाश्यं नीते ।

वैशाख सम्वत् १९६०, शके १८२५.

भूमिका.



पाठकमहाशयो ! जिस सर्वमान्य वेदचक्षु ज्योतिषशास्त्रके द्वारा मनुष्योंका भूत, भविष्य, वर्त्तमान, शुभाशुभ फलज्ञान, जन्मपत्रद्वारा होता है, उसी जन्मपत्रके गणितके प्राचीन तथा अर्वाचीन अनेक ग्रंथ प्रस्तुत हैं परन्तु विशेष परिश्रम व परिज्ञान होनेके अतिरिक्त उनग्रंथोंसे सर्व साधारण तथा विशेषकर बालकोंसे भलीभाँति सुगमतापूर्वक गणित नहीं होसकता, यही सोचकर मेरे परमपूज्यपाद पिताजी श्रीश्री६श्रीदैवज्ञवर्य्य श्रीमहादेवजी महाराजने अनेक प्राचीन ग्रंथोंका सारांश लेके थोड़ेही परिश्रमसे भलीभाँति जन्मपत्रका गणित बनानेके योग्य होजाय ऐसा यह "पत्रीमार्गप्रदीपिका" नामक छोटासा ग्रंथ निर्माणकर अपने द्रव्यसे मुद्रित कराकर विनामूल्य विद्वज्जनोंकी सेवामें समर्पण किया था, किन्तु ईश्वरकी कृपासे थोड़ेही दिनोंमें इसका इतना आदर जनसमुदायमें हुवा कि कई यन्त्राधीश उपयोगी समझ छापनेके लिये आग्रह करने लगे, परन्तु मेरे पूज्यपाद पिताजीने श्रीमान् **खेमराजजी** सेठसे अधिक स्नेह होनेके कारण उन्हींको छापनेका सत्व दिया जिसकी आजतक कई आवृत्तियें छपचुकी हैं सो पाठकोंको विदितही है. इसग्रंथकी भाषाटीका करने बाबत मेरे कई मित्रोंका कितनेही दिनोंसे इसप्रकारका आग्रह था कि यदि ऐसे उपयोगी ग्रंथकी पूर्णरीतिसे भाषाटीका बनाई जाकर इसमें अन्यान्य आवश्यक विषयोंका समावेश भी कियाजाय तो यह ग्रंथ बालकोंको विशेष उपयोगी होगा. ऐसे २ कई प्रकारकी उत्तम उत्तेजनाओंसे उत्तेजित हो आज मैं (अल्पज्ञ) इसकी सरल हिन्दी भाषाटीका तथा उदाहरण तथा आवश्यक २ स्थानोंकी टिप्पणी और भी जो २ उपयोगी विशेष [illegible] इसमें आवश्यकता अवश्य थी, उनकाभी समावेश करके, आपलोगोंके दृष्टिगोचर [illegible] उद्यत हुवा हूं । सो इसमें कहीं दृष्टिदोषसे वा लेखप्रमादसे किसीप्रकारकी त्रुटि रही [illegible] विद्वज्जन कृपादृष्टिसे सुधारके अशुद्धियोंमें हास्य न करते शुद्धार्थसे संतुष्ट हो मेरे प[illegible] सफल करेंगे यही सविनय निवेदन है ।

इस ग्रंथका समग्र **अधिकार** मैं प्रसन्नतापूर्वक श्रीमान्मान्यवर सेठ श्रीकृष्ण[illegible] खेमराजजी "**श्रीवेङ्कटेश्वर**" स्टीम् प्रेसाध्यक्षको देता हूं कि जिन्होंने इस ग्रंथको प[illegible] तासे सुन्दर छापनेका आग्रह दिखाके मेरा उत्साह बढानेकी उदारता दिखाई इसका[illegible] धन्यवाद देता हूं ।

भवदीय–

ज्यौ० श्रीनिवास महादेवजी शर्मा–

रतलाम.

श्रीगणेशाय नमः।

अथ पत्रीमार्गप्रदीपिका।

सोदाहरणा भाषाटीकासहिता प्रारभ्यते।

अथ मंगलाचरण.

नत्वा श्रीशिवशारदागणपतिब्रह्मार्कमुख्यग्रहान्
पत्रीमार्गप्रदीपिकां स्फुटतरां कुर्वे महादेववित् ॥
यत्पक्षे हि घटंति शुद्धखचराः कार्यास्तु तत्पक्षकाः
स्वव्यक्षोदययोः खरामविहृतौ प्राप्ताः पलादिध्रुवाः ॥ १ ॥

भाषाटीकाप्रारंभः।

नत्वा श्रीगुरुपङ्कजं गजमुखं साम्बं शिवं श्रीधरं
पत्रीमार्गसुदीपिकाख्यविवृतिं कुर्वे सतां प्रीतये ॥
पाराशर्यकुलाभिजातगणकोऽहं श्रीनिवासाभिधो
विद्वन्मण्डितरत्नपूर्वसतिकृच्छ्रीपाठकोपाह्वयः ॥ १ ॥

भाषाकार विघ्नविच्छेदार्थ मंगलाचरणरूप गुरु गणपतिको प्रणामपूर्वक भाषारचनाका प्रयोजन तथा अपना गोत्र और निवासस्थान कहताहै—

श्री (शोभायुत) निजगुरु (महादेवजी) के चरणकमल और गजमुख (गणपति) पार्वतीसहित शङ्कर और लक्ष्मीसहित विष्णुभगवानको नमस्कार करके पराशरकुलमें उत्पन्न हुवा (पराशरगोत्र) पाठक ऐसे उपनामसे प्रसिद्ध विद्वन्मंडलीकरके सुशोभित रत्नपुर (रतलामशहर) में निवास करनेवाला मैं श्रीनिवासगणक (ज्योतिर्वित्) सज्जनोंके प्रसन्नहोनेके अर्थ पत्रीमार्ग प्रदीपिका ग्रंथकी भाषाटीका करताहूँ ॥ १ ॥

भाषाटीका—निर्विघ्नतासे ग्रंथ समाप्त होनेके अर्थ ग्रंथकर्ता प्रथम गुरु गणेशादिदेवोंको नमस्काररूप मंगलाचरण शार्दूलविक्रीडितवृत्तके पूर्वार्द्धसे करके ग्रन्थारम्भ करते हैं—

श्रीशिवजीको सरस्वतीजीको गणपतीजीको ब्रह्माजी और सूर्यको आदिले नवग्रहोंको नमस्कार करके महादेव ज्योतिर्विद अत्यंत सरल पत्रीमार्गप्रदीपिका (जन्मपत्रीके मार्गकी प्रकाशकरनेकी प्रदीपिका) नाम ग्रन्थ करे है आर्यब्रह्मसौरादिपक्षोंमेंसे अपने देशमें जिस पक्षके स्पष्टग्रह वेधकरनेसे दृक्तुल्य [illegible] वे उसी पक्षके स्पष्टग्रह करना स्वदेशोदय और लंकोदयोंके [illegible]

---

१ गणेशदैवज्ञः ॥ "लंकोदया विघटिका गजभानि गोङ्कदस्रास्त्रिप [illegible]
हीनान्विताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थैर्मेषादितो घटतउत्क्रमतस्त्विमे स्युः [illegible]

देना लब्धआवे वह पलादिक ध्रुव जानना (स्वदेशोदयके ३० तीसका भाग देनेसे स्वदेशोदयका पलादि ध्रुव और लंकोदयके ३० भाग देनेसे लंकोदयका पलादि ध्रुव होवे)

उदाहरण ।

रतलामशहरके मेषराशीके स्वदेशोदयपल २२७ के ३० तीसका भाग दिया लब्ध ७।३४आया यह मेष राशीका स्वदेशोदयका पलादि ध्रुव हुवा

	लंकोदयाः			रतलामके चरखंडाः	रत्नपुरस्यदेशोदयाः			
क्रमेण	मे.	२७८	मी.	५१	मे.	२२७	मी.	उत्क्रमेण
	वृ.	२९९	कुं.	४१	वृ.	२५८	कुं.	
	मि.	३२३	म.	१७	मि.	३०६	म.	
	क.	३२३	ध.	१७	क.	३४०	ध.	
	सिं.	२९९	वृ.	४१	सि.	३४०	वृ.	
	क.	२७८	तु.	५१	क.	३२९	तु.	

इसीप्रकार मेषराशीके लंकोदय पल २७८ के ३० तीसका भाग दिया लब्ध ९।१६ आये ये मेषराशीका लंकोदयका पलादिक ध्रुव हुवा इसीतरह स्वदेशोदय और लंकोदयकी बारहही राशियोंके पलादिक ध्रुव जानना ॥ १ ॥

मे०	वृ. १	मि. २	क. ३	सिं. ४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं. १०	मी. ११	
७ ३४	८ ३६	१० १२	११ २०	११ २०	१० ५८	१० ५८	११ २०	११ २०	१० १२	८ ३६	७ ३४	स्वदेशोदय पलादिध्रुव
९ ३६	९ ५८	१० ४६	१० ४६	९ ५८	९ १६	९ १६	९ ५८	१० ४६	१० ४६	९ ५८	९ १६	लंकोदय पलादिध्रुव

अथ लग्नदशमपत्रसाधनमाह ।

स्थापयेत्खं क्रियारंभे ततः स्वध्रुवकान्वितम् ॥
निरायनं भवेत्पत्रं लग्नस्य दशमस्य च ॥ २ ॥

भाषाटीका—अब लग्नपत्र दशमपत्र बनानेकी रीति कहते है. मेषराशीके आरंभमें (मेषराशीके० शून्य अंशके नीचे) तीन शून्य लिखना नंतर स्वदेशोदय और लंकोदयकी मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क आदिक राशियोंके पलादिक ध्रुव क्रमसे युक्त करना सो निरायनलग्नपत्र दशमपत्र होवे (स्वदेशोदयकी मेषादिक राशियोंके पलादिक ध्रुवयुक्त करनेसे लग्नपत्र [illegible]ोदयकी मेषादिक राशियोंके पलादिक ध्रुवयुक्त करनेसे दशमपत्र

उदाहरण ।

[illegible]में मेषराशीके आरंभमें तीन शून्य लिखके रत्नपुर (रत-

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृ०	पं०
सलवा	सजवा	९७	ग्रहचक्रे
स्वचरार्द्धेन	स्वचरार्द्धोन	९८	१
नाच	नीचे	९८	८
कोष्ठजं	कोष्ठजं	१०१	१
करना (उससे	करनाउससे)	१०२	२
युक्तं	युक्त	२०२	५
कोष्टकके अंतरकरे इष्टयुक्त कोष्टकमेंसे अल्पकोष्टककोंहीन करे	कोष्टकका अन्तर करना	१०२	६
न्यन	न्यून	१०३	१३
विंशोपकाः	विंशोपका	१०३	१६
मकरासंगल कन्याकका	मकरकामंगल कन्याका	१०८	५
ज्ञङ्गा	ज्ञाङ्ग	१०९	४
सितार्की	सितार्कि	१०९	१०
आशाक०	आशा	१०९	१४
घटेनं	घटेन	११०	१
द्रष्काण अशका ह्वाताअश	द्रेष्काणअंशका होताअंश	११०	टिप्पण्यां
नाच	नीच	११२	१९
राश्यंक	राश्यादि	११२	२३
शत्र	शत्रु	११३	८
मित्र	मित्र	१२१	१
त्रि क० ३०	त्रि क० ३	१२५	६

देना लब्धआवे वह पलादिक ध्रुव जानना (स्वदेशोदयके ३० तीसका भाग देनेसे स्वदेशोदयका पलादि ध्रुव और लंकोदयके ३० भाग देनेसे लंकोदयका पलादि ध्रुव होवे)

उदाहरण।

रतलामशहरके मेषराशीके स्वदेशोदयपल २२७ के ३० तीसका भाग दिया लब्ध ७।३४आया यह मेष राशीका स्वदेशोदयका पलादि ध्रुव हुवा

	लंकोदयाः			रतलामके चरखंडाः	रत्नपुरस्यदेशोदयाः			
क्रमेण	मे.	२७८	मी.	५१	मे.	२२७	मी.	उत्क्रमेण
	वृ.	२९९	कुं.	४१	वृ.	२५८	कुं.	
	मि.	३२३	म.	१७	मि.	३०६	म.	
	क.	३२३	ध.	१७	क.	३४०	ध.	
	सिं.	२९९	वृ.	४१	सिं.	३४०	वृ.	
	क.	२७८	तु.	५१	क.	३२९	तु.	

इसीप्रकार मेषराशीके लंकोदय पल २७८ के ३० तीसका भाग दिया लब्ध ९।१६ आये ये मेषराशीका लंकोदयका पलादिक ध्रुव हुवा इसीतरह स्वदेशोदय और लंकोदयकी बारहही राशियोंके पलादिक ध्रुव जानना ॥ १ ॥

मे०	वृ. १	मि. २	क. ३	सिं. ४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं. १०	मी. ११	
७ ३४	८ ३६	१० १२	११ २०	११ २०	१० ५८	१० ५८	११ २०	११ २०	१० १२	८ ३६	७ ३४	स्वदेशोदय पलादिध्रुव
९ ३६	९ ५८	१० ४६	१० ४६	९ ५८	९ १६	९ १६	९ ५८	१० ४६	१० ४६	९ ५८	९ १६	लंकोदय पलादिध्रुव

अथ लग्नदशमपत्रसाधनमाह ।

स्थापयेत्खं क्रियारंभे ततः स्वध्रुवकान्वितम् ॥
निरायनं भवेत्पत्रं लग्नस्य दशमस्य च ॥ २ ॥

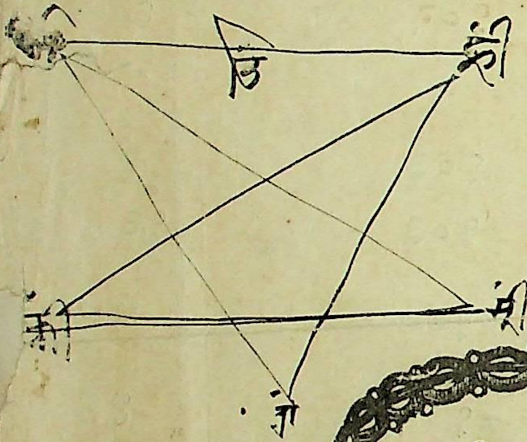
भाषाटीका—अब लग्नपत्र दशमपत्र बनानेकी रीति कहते है. मेषराशीके आरंभमें (मेषराशीके० शून्य अंशके नीचे) तीन शून्य लिखना नंतर स्वदेशोदय और लंकोदयकी मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क आदिक राशियोंके पलादिक ध्रुव क्रमसे युक्त करना सो निरायनलग्नपत्र दशमपत्र होवे (स्वदेशोदयकी मेषादिक राशियोंके पलादिक ध्रुवयुक्त करनेसे लग्नपत्र [illegible]ोदयकी मेषादिक राशियोंके पलादिक ध्रुवयुक्त करनेसे दशमपत्र

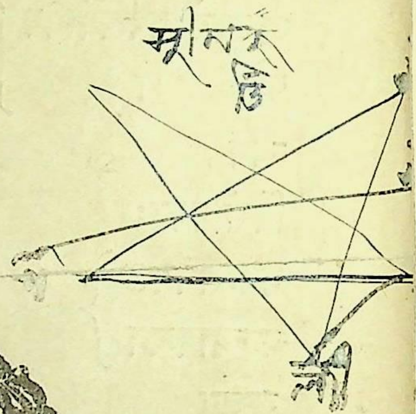
उदाहरण।

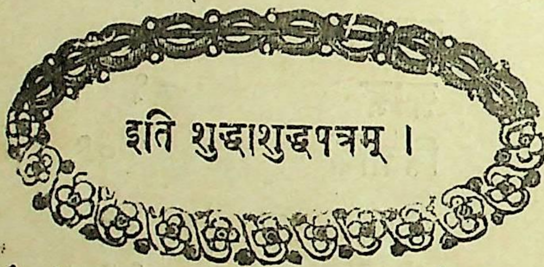
[illegible]में मेषराशीके आरंभमें तीन शून्य लिखके रत्नपुर (रत-

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृ०	पं०
सलवा	सजवा	९७	ग्रहचक्रे
खचरार्द्धेन	स्वचरार्द्धोंन	९८	१
नाच	नीचे	९८	८
कोष्ठजं	कोष्ठजं	१०१	१
करना (उससे	करनाउससे)	१०२	२
युक्तं	युक्त	२०२	५
कोष्टकके अंतरकेर इष्टयुक्त कोष्टकमेंसे अल्पकोष्टककोंहीन करे	कोष्टकका अन्तर करना	१०२	६
न्यन	न्यून	१०३	१३
विंशोपकाः	विंशोपका	१०३	१६
मकरामंगल कन्याकका	मकरकामंगल कन्याका	१०८	५
ज्ञज्ञा	ज्ञाज्ञ	१०९	४
सितार्कीं	सितार्किं	१०९	१०
आशाक०	आशा	१०९	१४
घटेनं	घटेन	११०	१
द्रष्काण अशका हाताअश	द्रेष्काणअंशका होताअंश	११०	टिप्पण्यां
नाच	नीच	११२	१९
राश्यंक	राश्यादि	११२	२३
शत्र	शत्रु	११३	८
मित्र	मित्र	१२१	१
त्रि क० ३०	त्रि क० ३	१२५	६

अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०
देखना	देखता	१२७	टिप्पण्यां
श्वेश	स्वेश	१३४	२४
वर्षाभ	वर्षप्र०	१३५	२४
रात्रौ ॥ जीवे	रात्रौजीवे	१३७	२
दशाः	दशा	१४२	१
सूयें	सूर्यें	१४३	१०
रिशं	रिंश	१४४	१
खाभ्रेभामा	खाभ्रेभाता	१४४	१३







[illegible]

विशेषसूचना.

हमारे यहां निम्नलिखित ग्रंथोंके अनुवाद तथा नवीन ग्रंथ तयार होरहेहैं सो समय २ पर मुद्रित होनेपर आपलोगोंके दृष्टिगोचर कराये जायँगे.

(जिनका अनुवाद होरहा है उन ग्रंथोंके नाम) **जातकतत्व** । (ज्यौतिषफलित)

इसकी विशेष प्रशंसा करनाही क्या है यह ग्रंथ समस्त फलित ग्रंथोंका सार ले सूत्रात्मक बना हुवा है इस ग्रंथकी हजारों प्रतियें कई आवृत्तिमें काशीमें छपचुकी हैं यह फलितका आद्वितीय ग्रंथ मानाजाता है इसग्रंथकी सरल भाषाटीका तयार होचुकी है–

ताजक सुधानिधी–(ज्यौतिषताजक)

यह नारायणभट्टकृत प्राचीन परमोपयोगी ताजिक ग्रंथ है इसमें दलीलग्रह, भावोंकी पंचवर्ग आदि अनेक नवीन विषय हैं ताजक फलका चमत्कारी ग्रंथ है इसकी भाषाटीका होरही है.

विजयाकल्प–(वैद्यशास्त्र)

यह विजयानुरागियोंके तथा वैद्योंके परमोपयोगी है इसमें विजया (भंग) की उत्पत्ति तथा गुण और प्रत्येक रोगोंमें सेवनकी रीति तथा विजयाकल्पके सिद्ध करनेकी मंत्रसहित विधि भलीभाँति वर्णन कीगई है इसकी भाषाटीका तयार है.

भैरवउड्डीस–(तंत्रशास्त्र)

यह साक्षात् भैरवकृत उड्डीस है इसमें अनेक प्रकारके सिद्ध मंत्र तंत्र विधि विधा सहित ऐसे चमत्कारिक हैं कि जिनके द्वारा साधक भलीभाँति अपना अभीष्टकार्य साधन करसके इसकी भी भाषाटीका तयार होरही है थोडीही बाकी रही है.

मुक्तात्मामिलापविधि भाषा–

इसमें मुक्तात्मासे मिलापकरनेकी तथा उनसे बातचीत करनेका शास्त्रोक्तप्रमाणोंसे मंत्र तंत्र सहित विधिविधान विस्तारपूर्वक लिखा है और चक्रकी विधि चक्रके नियम दुष्ट मुक्तात्माचक्रमें नहीं आसके उसका सरल उपाय तथा मुक्तात्मामिलापसे हानि लाभ भी भलीभाँति इसमें सरल भाषामें लिखा है जिसके द्वारा दृढमति स्वतः सहजमें अनुभव करसके ।

सर्वतो भद्र चक्रावलोकनविधि.

संस्कृत, हिन्दी, मराठी–गुजराती भाषाटीकासमेत । ज्योतिष–

समस्तदेश और प्राणिमात्रका शुभाशुभ और रसधान्य फलपुष्पादि समस्त वस्तुमात्रका समर्घ महर्घ (तेजीमंदी) जाननेका परमोपयोगी उपरोक्त सर्वतोभद्रचक्रके देखनेकी रीति विस्तारपूर्वक हम इसमें उपरोक्त चार भाषामें लिख रहे हैं जिसके द्वारा हरएक भाषा जाननेवाला प्रत्येक वस्तुकी तेजीमंदी सहजमें जानसके ।

नवीन ग्रंथ तयार हैं तथा होरहे हैं उनके नाम–दशाफलदर्पण– (ज्योतिष)

यह ग्रंथ समस्त फलितग्रंथोंमेंसे संग्रह करके दशाफल देखनेका एक परमोपयोगी अनूठा बन रहा है इसकी श्लोकसंख्या कमसेकम१०००० दशहजार दश १० भागमें विभक्त होगी जिसमें १–प्रथमविभागमें दशाप्रयोजन ४२ बैयालीस प्रकारकी दशाका भेद और उनके साधनकरनकी, उदाहरणसहित रीति और उन दशाओंके चक्र तथा उनमेंसे कौनसी दशा मुख्य है उसका निर्णय कहकर आगे संपूर्णादि अनेक प्रकारकी दशाफलके भेद विस्तारपूर्वक तथा दशाफल बोधक ग्रह और शुभाशुभ मध्यदशा निश्चयपूर्वक उच्चनीच मूलत्रिकोण स्वक्षेत्र अतिमित्र मित्रादि पांचों भेदसहित अस्त उदित वक्रमार्ग गतिस्थ फलसमेत दिग्बल स्वनवांश बलोपेत राहुयुतादि विशेष २

दशाफलका सूक्ष्म विचार । तथा देहसुख धन भ्रातृमातृ ग्रह ग्राममित्र वाहन विद्या बुद्धि पुत्र रोग शत्रु भार्या, मरण निधिलाभ भाग्यवृद्धि तीर्थयात्रा राज्यलाभ पदप्राप्ति पितृसुख धनादि लाभ व्ययादि बाराहि भावजनित फल किस २ दशामें होगा और किस २ दशामें उपरोक्त बातोंकी हानि होगी उसका विस्तारपूर्वक दशाके ऊपरही फल निश्चय विचार और भी विशेष मिश्रविचार तथा दशाप्रवेश लग्नसे दशाफलका सूक्ष्मविचार दशावाहन फल तथा जाग्रतादि, बालादि, दीप्तादि, गर्वितादि, शयनादि, अवस्थागत ग्रहोंका विशेषरूपसे दशाफल विचार है ।

२–दूसरे विभागमें सूर्यादि नवही ग्रहोंकी विंशोत्तरी महादशाका पृथक् २ महादशाफल विस्तारपूर्वक ऐसी युक्तिसे संग्रह किये हैं कि जिसके द्वारा एक २ ग्रहकी दशाके फलका विचार कमसेकम १०० सौ सौ श्लोकोंसे निश्चय करसके.

३–तीसरे विभागमें अंतर्दशासंबंधि समस्त सामान्य और सूक्ष्मफल विस्तारपूर्वक पृथक् २ ग्रहोंका ऐसा लिखा है कि समस्त अंतर्दशाका सूक्ष्मफल विस्तृतरूपसे विचार अनायास होसके ।

४--५--६--चौथे पांचवे छठें विभागमें क्रमसे उपदशा सूक्ष्मदशा प्राणदशाओंका विस्तारपूर्वक निःशेष फलविचार लिखा है ।

७–सातवेंमें अष्टोत्तरीकी पांचही प्रकारकी दशाका विस्तारपूर्वक फलविचार ।

८–आठमें विभागमें योगिनीदशाके दशांतर्दशादिकका समस्त फलविचार ।

९- नवमें विभागमें चर स्थिर रुद्र शूल वर्णदादि जैमिन्युक्त समस्तदशाओंका सूक्ष्मविचार अंतर्दशादि फलविचारोंसहित है ।

१०–दशम विभागमें उक्तदशाओंके अतिरिक्त शेष समस्त दशाओंका फलविचार और उपसंहार है इसप्रकार यह ग्रंथ दस विभागोंमें समाप्त होनेमें आया है ।

वर्षपद्धति ।

यह वर्षफल लिखनेकी अपूर्व पुस्तक है इसमें हायनरत्न, हिल्लाज, ताजिक भूषण, ताजिक सुधानिधी, कौस्तुभ, नीलकंठी आदि अनेक ताजिक ग्रंथोंसे वर्षका फल संग्रह ऐसी युक्तिसे किया है कि सिर्फ यह एकही पुस्तक जिसके पास होवे तो ताजिक संबंधी दूसरे ग्रंथकी अपेक्षा नहीं रहे और चमत्कारिक फल इसके द्वारा कहके फलितको नहीं माननेवाले नास्तिकोंको आस्तिक बनानेमें कुशल होजावे । (छपने योग्य तयार है)

आशुबोध ज्योतिष ।

यह ग्रंथ ज्योतिषशास्त्रको पढ़ना शुरूकरनेवाले बालकोंके लिये एक उपयोगी प्रथम पुस्तक है इसको पढ़नेसे ज्योतिषका मार्ग भलीभाँति समझ सक्ते हैं. यह भी छपने योग्य तयार है)

लघुपूजा अनुष्ठानपद्धति (कर्मकाण्ड)

यह पूजनविधि और अनुष्ठानादि अनेक कार्यके लिये अद्वितीय पुस्तक है । इसमें टिप्पणी भी प्रत्येक विषयपर है ।

दशांगदुर्गा (सप्तशति) मन्त्रशास्त्र ।

इसमें दुर्गाके दशअंग बडे प्रयत्नसे संग्रह करे ऐसी दुर्गा आजतक कहीं नहीं छपी है मंत्रवेत्ताके उपयोगी है (छपने योग्य ये भी तयार होचुकी है)

इनके सिवाय और भी कईएक ग्रंथोंका अनुवाद होरहा है ।

ज्यो० श्रीनिवासशर्मा,
ज्योतिषकार्यालय–रतलाम.

लाम) के स्वदेशोदयका मेषादिक राशियोंका पलादिक ध्रुव क्रमसे युक्त किया इसलिये यह रतलामका लग्नपत्र हुवा इसीप्रकार जिस ग्रामका लग्नपत्र करना हो उस ग्रामके स्वदेशोदयके पलादि ध्रुवकू युक्त करनेसे उस ग्रामका लग्नपत्र होजायगा और लंकोदयका पलादिक ध्रुव युक्त करनेसे सर्वदेशका दशमपत्र हुवा—

इयं रत्नपुरे लग्नपत्रनिरयनपलभा ५।८ चरखंडा ५१।४१।१७

रा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मे. ०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	
	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	०	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५४	१	९	१६	२४	३१	३९	७
	०	३४	८	४२	१६	५०	२४	२८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	३४
वृ. १	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	
	४७	५५	४	१२	२१	३०	३८	४७	५५	४	१३	२१	३०	३८	४७	५६	४	१३	२१	३०	३९	४७	५६	४	१३	२२	३०	३९	४७	५६	८
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	३६
मि. २	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	
	५	१५	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५८	८	१८	२९	३९	४९	५९	९	२०	३०	४०	५०	०	१०
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	१२
क. ३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	
	११	२२	३३	४६	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	११
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	६०	०	२०	४०	२०
सिं. ४	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	
	०	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३९	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	११
	५१	२०	४०	०	०	०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	३०	४०	०	२०	४०	२०
क. ५	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	
	३१	४२	५३	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	५२	४३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	१०
	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	३९	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	५८
तु. ६	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	
	०	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	१०
	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	१	५८
वृ. ७	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	
	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	११
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	१०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	६०	०	२०	४०	२०
ध. ८	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	
	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	१८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३७	११
	०	२०	४०	०	०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	६०	०	२०	४०	२०
म. ९	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	
	४९	५९	९	१९	२९	४०	५०	०	१०	२०	३१	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३	५३	४	१४	२४	३४	४४	१०
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	१२
कुं. १०	५१	५२	५२	५२	५२	५३	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	
	५५	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	२	१२	२१	२८	३८	४६	५५	४	१२	२१	२९	३८	४७	५५	४	१२	२१	३०	३८	४७	५५	४	८
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	३६
मी. ११	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	
	१३	२०	२८	३५	४३	५०	५८	५	१३	२१	२८	३६	४३	५१	५८	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१	५९	७	१४	२२	२९	३७	४४	५२	७
	०	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	३४

अथ निरयनदशमपत्रचक्रम्।

रा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मे. ०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	०
	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	३४	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	९
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	१६
वृ. १	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	०
	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	९
	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	५८
मि. २	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	०
	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	१०
	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४१	२८	१६	[illegible]
क. ३	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	०
	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	३९	४०	१	१२	[illegible]
	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	१४	४०	२६	१२	४८	३४	३०	६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१०	[illegible]
सिं. ४	२०	२०	२०	२०	२१	११	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	०
	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	९
	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	५८
क. ५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	०
	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	९
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	१८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	१६
तु. ६	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	०
	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	९
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	१६
वृ. ७	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	०
	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	९
	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	५८
ध. ८	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	०
	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	२२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	१०
	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	४६
म. ९	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	०
	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	१०
	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	५८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	४६
कुं १०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	०
	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	९
	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	५८
मी. ११	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०
	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	९
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	५०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	१६

अथ लग्नदशमसाधनमाह।

तत्र दशमेष्टसाधनमाह—

उदयादिष्टकालेषु द्युदलं हि प्रपातयेत् ॥
दशमस्य भवेदिष्टं सारी खांगै सुखांगने ॥ ३ ॥

भाषाटीका—अब लग्न दशमसाधन कहते हैं, जिसमें प्रथम दशमका इष्ट साधन कहते हैं ॥ सूर्योदयात्—घट्यादिक इष्टमेंसे दिनार्द्ध हीन करना (निकालना) शेष बचे वह दशमभावका इष्ट होवे । दशमभाव और लग्नमें छः राशी युक्त करनेसे सुखभाव और सप्तमभाव होते हैं (दशमभावमें छः राशी युक्त करनेसे चतुर्थभाव और लग्नमें छः राशि युक्त करनेसे सप्तमभाव होवे) ॥ ३ ॥

भांशजौ सायनार्कस्य खाङ्कांकौ स्वेष्टयुक्तौ ॥
कलाद्यास्तद्ध्रुवघ्नाः स्युर्विपलाद्यास्तु संयुताः ॥४॥
तदल्पकोष्ठजौ भांशौ ग्राह्यौ लिप्तादिकावियत् ॥
अल्पेष्टविवरात्पार्श्वान्तराप्तांशादिसंयुतौ ॥ ५ ॥
अयनांशादिवियुताल्लग्नं मध्यं स्फुटं भवेत्

भाषाटीका—सायन सूर्यकी राशी अंशके समान दशमपत्र और लग्नपत्रके कोष्टकमें अपना अपना घट्यादिक इष्ट युक्त करना (दशमपत्रके कोष्टकमें दशमका इष्ट, लग्नपत्रके कोष्टकमें जन्मसमयका इष्ट मिलाना) तदनंतर सूर्यकी कलाविकलाको सायन सूर्यकी राशीके ध्रुवसे गुणन करना गुणन करके आयेहुए अंकोंको इष्टयुक्त किये हुए कोष्टककी विपलमें युक्त करना ॥ ४ ॥ उस इष्ट युक्तकिये हुए कोष्टकसे अल्प(न्यून) कोष्टक जिस राशीअंशमें होवे-वो राशीअंश लेना उसके नीचे कलाविकला शून्यशून्य लिखना तदनंतर इष्टयुक्त कोष्टक और अल्पकोष्टकका अंतर करना शेष अंतरमें अल्पकोष्टक और उसके आगेके (ऐष्य) कोष्टकके अंतरका भाग देना लब्ध आवे वह अंश जानना शेषबचे उनको ६० साठगुणा करना फिर अंतरका भाग देना लब्ध कला आवे फिर शेषको ६० साठगुणा करके अंतरका भाग देना लब्ध विकला आवे ऐसे आये हुए अंशादि ३ तीन फलोंको इष्टयुक्त कोष्टकसे अल्पकोष्टकके आयेहुए राशी अंशादिकमें युक्त करना ॥ ५ ॥ अयनांश हीन करना सो लग्न और दशमभाव स्पष्ट होवे ॥

उदाहरण ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ स्वस्ति श्रीसंवत् १९२८ शके १७९३ प्रवर्तमाने अमात माघकृष्ण पौर्णिमांत फाल्गुन कृष्ण३ तृतीयायां भौमवासरे घ. २५।४९

१ शकमेंसे ४४४ चारसे चुम्मालीस हीन करनेसे अयनांश होते हैं । अयनांशोंको स्पष्टसूर्यमें मिलानेसे सायन सूर्य होता है ।

परं ४ चतुर्थ्यां हस्तनक्षत्रे घ. २९।९ परं चित्रानक्षत्रे गण्डयोगे. घ. ४४।५ बालवकरणे एवं पञ्चाङ्गशुद्धावत्र दिवसे. श्रीमन्मार्तण्डमण्डलार्द्धोदयादिष्ट-घटी ५६ पल ४८ विपल. १८ स्पष्टार्क १०।१६।५३।३९ लग्न. ०।२३ समये ज्यो० श्रीनिवासशर्मणो जन्मसमयःदिनमान२८।५०अयनांशाः २२।२९।०

अथ जन्माङ्गम्.

बु ११ सू
श ९
१२ मं
शु १०
८ के
१
७
रा २
गु ४
६ चं
३
५

रतलाममें तथा रतलामके समीपके ग्रामोंमें सौर पक्षके स्पष्टग्रह ग्रहवेधसे दृक्तुल्य मिलते हैं इसवास्ते सौरपक्षके स्पष्टग्रह ग्रहलाघवाख्य करणग्रंथसे किये ग्रंथगताब्दाः ३५१ चक्र ३१ अधिकमास ६ मा-सगण १३६ ऊनाह ६४ अहर्गण ४०३९

इष्टमध्यमाः खेटाः									अथ स्पष्टाः खेटाः								
सू.	चं.	उ.	रा.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	६	२	१	११	११	१	९	८	१०	५	११	१०	३	९	८	१	७
१५	३	२२	२५	१२	२३	२	६	२३	१६	२९	६	१०	०	१२	२४	२५	२५
३	५९	८	४०	३९	३१	४०	२	४४	५३	१९	१४	४४	४३	२६	४८	४०	४०
२१	४३	४०	३१	४८	९	१	४१	४६	३९	४९	५४	१८	१	८	२३	३१	३१
५५	७४८	६	३	२९	१७६	४	३५	१	६०	८०५	४८	१०८	२x	७४	५	३x	३x
५८	२३	१९	०	४४	२७	४४	१	५३	१९	१७	२६	४४	२६	८	२०	११	११

लग्नसाधनका उदाहरण ।

स्पष्टसूर्य १०।१६।५३।३९ में अयनांश २२।२९।० युक्तकिया ११।९।२२।३९ ये सायनसूर्य हुवा इसकी राशी ११ अंश ९ के समान लग्नपत्रका कोष्टक ५७।२१।६ में जन्मसमयका घट्यादिक इष्ट ५६।४८।१८ युक्तकिया ५४।९।२४ हुए इसकी विपलके २४ अंकमें सूर्यकी कलाविकला २२।३९ को सायनसूर्यकी ११ राशीके ध्रुव ७।३४ से गुणन करके आये हुए १७१ अंक युक्तकिये ५४।९।१९५ हुए विपल ६० साठसे अधिक हैं इसलिये साठका भाग दिया लब्ध ३ आये ये ऊपरकी पलके अंक९ में युक्तकिये ५४।१२।१५ये इष्टकोष्टक हुवा॥इससे अल्पकोष्टकलग्नपत्रमें५४।४।०दश(१०)राशी १५ अंशके कोष्टकमें मिलता है इसवास्ते १० राशी १५ अंशलिये इसके नीचे कलाविकला ०।० शून्य शून्य लिखनेसे १०।१५।०।० हुए तदनंतर अल्पकोष्टक ५४।४।० और इष्टयुक्त कोष्टक ५४।१२।१५ के अंतर क्रिया ०।८।१५ शेष बचे इन्में अल्पकोष्टक ५४।४।० और इसके आगेका (ऐष्य)

कोष्टक ५४।१२।३६ को अंतर ०।८।३६ का भाग दिया परंतु भाज्य८।१५ भाजक ८।३६ हैं इसलिये इनको सवर्णित करके भाग दिया भाज्य पिंड ४९५ भाजकपिंड ५१६ हुए भाज्यपिंडमें ४९५ भाजकपिंड ५१६ का भाग दिया लब्ध० अंश आया शेष ४९५ को ६० साठगुणा किये २९७०० हुवे इनमें भाजक ५१६ का भाग दिया लब्ध ५७ कला आई शेष २८८ बचे इनको६० साठगुणे किये १७२८० हुवे इनमें भाजक ५१६ का भाग दिया लब्ध ३५ विकला आई ऐसे अंशादिक फल तीन ०।५७।३५आये इनको१०।१५।०।० में युक्त किये १०।१५।५७।३५ हुवे इसमेंसे अयनांशा २२।२९।० हीन किये शेष९।२३।२८।३५बचे यह स्पष्टलग्न हुवा इसमें ६ छः राशी मिलानेसे३।२३। २८।३५ सप्तमभाव हुवा इसीप्रकार १० दशमभावका साधन किया उसका उदाहरणभी नीचे लिखा है— प्रथम दशमभावके इष्टका उदाहरण—सूर्योदयात् घटचादिक इष्ट ५६।४८।१८दिनार्ध १४।२५।० दिनार्द्धको सूर्योदयात् इष्टमेंसे हीन किया शेष ४२।२३।१८ बचे ये दशमका इष्ट आया— तदनंतर सायनसूर्य ११।९।२२।३९ की राशी ११ अंश ९ के समान दशमपत्रका कोष्टक ५६।४५।२४ में दशमका इष्ट ४२।२३।१८ युक्त किया ३९।८।४२ हुवे इसकी विपलके अंक ४२ में सूर्यकी कला २२ विकला ३९ को सूर्यकी राशी ११ के ध्रुव ९।१६ से गुणन करके आये हुवे २०९ अंकको युक्त किये ३९।८।२५१ विपलमें ६० का भाग दिया लब्ध ४ को पलके अंक ८ में मिलाये ३९।१२।११ ये इष्टयुक्त कोष्टक हुवा इससे अल्पकोष्टक ३९।७।६ राशी ७ अंश २७ के कोष्टकमें मिलते इसलिये ७ राशी २७ अंशलिये नीचे कला० विकला० शून्य लिखी ७।२७।०।० हुवे—तदनंतर अल्पकोष्टक ३९। ७।६ और इष्ट कोष्टक ३९।१२।११ का अंतर किया ०।५।५ शेष बचे इनमें अल्पकोष्टक ३९।७।६ और इसके आगेका (ऐष्य) कोष्टक ३९।१७।४ के अंतर ९।५८ का भाग दिया परंतु भाज्य भाजक दोनो पलादिक अंकके हैं इसलिये भाज्य भाजकको सवर्णित करके भाज्यपिंड ३०५ में भाजक ५९८ का भाग दिया लब्ध ० अंश आया शेष ३०५ को ६० साठ गुणा किया १८३०० हुवे इनमें भाजकपिंड ५९८ का भाग दिया लब्ध ३० कला आई शेष ३६० बचे इनको ६० साठ गुणे किये २१६०० हुवे इनमें भाजक

५९८ का भाग दिया लब्ध ३६ विकला आई ऐसे अंशादिक फल०।३०।३६ आये इनको ७।२७।०।० में मिलाये ७।२७।३०।३६ हुवे इसमेंसे अयनांश २२।२९।० घटाये ७।५।१।३६ शेष बचे यह दशमभाव स्पष्ट हुवा इसकी राशीमें ६ छः राशी युक्त करनेसे १।५।१।३६ चतुर्थभाव हुवा—

अथ भावसंधितच्चक्रसाधनमाह ।

लग्नं तुर्यात्सप्तमात्तुर्यभावं शोध्यं राशिः पञ्चभिस्ताडितोंऽशाः ॥
अंशाद्याश्चेद्दिग्घताः स्युः कलाद्याः लग्ने तुर्ये पञ्चवारं प्रदद्यात् ॥ ६ ॥
तन्वाद्याः संधिसहिता भावाः षट्षड्युताः परे ॥
यदंत्यारंभयोः संध्योरन्तस्थस्तद्गतोग्रहः ॥ ७ ॥

भाषाटीका—अब भावसंधि और चलितचक्रका साधन कहते हैं॥लग्नको चतुर्थ भावमेंसे चतुर्थ भावको सप्तमभावमेंसे शोधना (हीन करना) शेष राशीको ५ पांच गुणी करना अंश होवे और जो अंश कला विकलाको दशगुणा करे सो कलादिक होवे ऐसे अंशादिकको लग्नमें और चतुर्थभावमें(चतुर्थभावमेंसे लग्नको हीन किया हो तो लग्नमें सप्तमभावमेंसे चतुर्थभाव हीन किया हो तो चतुर्थभावमें) पांचवार युक्त करना ॥६॥ सो लग्नको आदिले संधिसहित ६ छः भाव होवें इन ६ छः भावोंमें छः छः राशी युक्त करनेसे शेष छःभाव होवें॥जिसभावकी अंत्य (आगेकी) और आरंभ (पीछेकी) संधियोंके मध्यमें (बीचमें) ग्रह होवे वह उसी भावमें स्थित जानना ॥ अर्थात् ग्रह जिसभावमें स्थित होवे उस भावकी आरंभ (पीछेकी) संधीसे न्यून होवे तो गतभावमें स्थित होवे और अंत्य (आगेकी) संधीसे अधिक हो तो आगेके भावमें स्थित होवेगा ॥ यदि इन दोनों संधियोंके बीचमें होवे (आरंभसंधीसे अधिक और विरामसंधिसे न्यून होवे) तो उसी भावमें ग्रह स्थित जानना ॥ ७ ॥

उदाहरण ।

लग्न ९ । २३ । २८ । ३५ । को चतुर्थभाव १ । ५ । १ । ३६ मेंसे हीन किया शेष ३ । ११ । ३३ । १ बचे इसकी राशीके अंक ३ को ५ गुणे करनेसे १५ हुवे ये अंश हुवे शेष अंशादिक ११ । ३३ । १ को दशगुणे किये ११० । ३३० । १० । ये कलाविकला प्रतिविकलादिक हुवे परंतु ये कला-

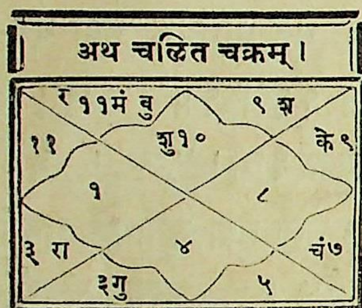
दिक ६० साठसे अधिक हैं इसलिये साठका भाग विकला ३३० में दिया शेष ३० विकला रही लब्ध ५ कलाके ११० अंकमें युक्त किया ११५ कला हुई इसमें भाग ६० साठका दिया शेष ५५ कला रही लब्ध १ अंश १५ में युक्त किया अंश १६ हुवे इसप्रकार राशीको ५ गुणी अंशादिकोंको १० दशगुणे करनेसे अंश १६ कला ५५ विकला ३० प्रतिविकला १० आई इनको लग्न ९ । २३ । २८ । ३५ । में युक्त किये १० । १० । २४ । ५ । १० ये दूसरे भावकी आरंभसंधी हुई इसमें फिर १६ । ५५ । ३० । १० अंशादिक युक्त किये १० । २७ । १९ । ३५ । २० यह धनभाव हुवा धनभावमें अंशादिक १६ । ५५ । ३० । १० युक्त किये ११ । १४ । १५ । ५ । ३० यह तृतीयभावकी आरंभसंधी हुई इसमें अंशादिक १६ । ५५ । ३० । १०मिलाये० । १ । १० । ३५ । ४० यह तृतीयभाव हुवा तृतीय भावमें १६ । ५५ । ३० । १० युक्त किये ० । १८ । ६ । ५ । ५० यह चतुर्थभावकी आरंभसंधी हुई इसमें अंशादिक १६ । ५५ । ३० । १० मिलाये १ । ५ । १ । ३६ । ० ये चतुर्थभाव हुवा—इसीप्रकार चतुर्थभाव १।५।१।३६ को सप्तमभाव ३।२३।२८। ३५ मेंसे हीन किया २।१८।२६।५९ शेष बचे इसकी राशी २ को ५ पांचगुणी और अंशादिक १८।२६।५९ को १० दशगुणे करनेसे १३ । ४ । २९।५० अंशादिक हुए इनको चतुर्थभावमें पांचवार युक्त किये सो चतुर्थको आदिले सप्तमभावपर्यंत संधिसहित भाव हुवे ऐसे लग्नादिक संधिसहित ६ छः भाव हुवे इन संधिसहित ६ छही भावोंकी राशीमें छः छः राशी युक्त करनेसे शेष सप्तमभावको आदिले संधिसहित ६ भाव हुए—

अथ ससंधयःद्वादशभावाः ।

१	सं	२	सं	३	सं	४	सं	५	सं	६	सं		
९	१०	१०	११	०	०	१	१	२	३	३	३		
२३	१०	२७	१४	१	१८	५	१८	१	१४	२७	१०		
२८	२४	१९	१५	१०	६	१	६	१०	१५	१९	२४		
३५	५	३५	५	३५	५	३६	५	३५	५	३५	५		
७	सं	८	सं	९	सं	१०	सं	११	सं	१२	सं		
३	४	४	५	६	६	७	७	८	८	८	९		
२३	१०	२७	१४	१	१८	५	१८	१	१४	२७	१०		
२८	२४	१९	१५	१०	६	१	६	१०	१५	१९	२४		
३५	५	३५	५	३५	५	३५	५	३५	५	३५	५		

जन्मकुंडलीमें सूर्य २ द्वितीयभावमें स्थित है द्वितीयभावकी आरंभसंधि १०।१० से सूर्य १०।१६ अधिक है और द्वितीयभावकी विराम (आगेकी) संधी ११।१४ से न्यून है इसलिये यह सूर्य अंत्य आरंभसंधीके बीचमें हुवा इससे द्वितीयभावमेंही स्थित रहा मंगल ११।६ यह तृतीयभावकी आरंभ-संधी ११।१४ से न्यून है इससे मंगल द्वितीयभावमें स्थित जानना ऐसेही गुरु ३।० है यह सप्तमभावकी आरंभसंधी ३।९ से अल्प है इसकारण ६ छठे भावमें स्थित हुवा इसीप्रकार शेष सर्व ग्रह भावोद्भव (चलित) चक्रमें जानना ॥

अथ चलित चक्रम् ।



अथ क्षय-चय-फल-विश्वानयनमाह ।

भावतुल्ये ग्रहे रूपं संधितुल्ये तु निष्फलम् ॥
भावसंध्यंतरेणाप्तं खेटसंध्यंतरं च यत् ॥ ८ ॥
भावान्न्यूनाधिके खेटे फलं वृद्धिक्षयाभिधम् ॥
फलस्याग्न्यंशको विश्वा यद्वा विंशहतं फलम् ९ ॥

भाषाटीका-अब क्षय चय फल विश्वा आनयनकी रीति कहते हैं-भावके अंश कला विकलाके समान (बरोबर) ग्रह होवै तो पूर्णफल होता है उस ग्रहका (१।०।० फल जानना) और संधीके अंश कला विकलाके तुल्य (बरोबर) ग्रह होवे तो निष्फल होता है (उस ग्रहका ०।०।० फल जानना) न्यूनाधिक होवे तो भावसंधीके अंतरका भाग देना ग्रहसंधीके अंतरमें (ग्रह जिस भावमें स्थित होवे उस भावसे न्यून होवे तो उस भावकी आरंभसंधिसे ग्रहभावका अंतर करना और भावसे ग्रह अधिक होवे तो विराम (आगेकी) संधीके साथ ग्रहभावका अंतर करना) जो फल लब्ध आवे वह ॥ ८ ॥ भावसे ग्रह न्यून होवे तो वृद्धि (चय) और भावसे ग्रह अधिक होवे तो क्षयसंज्ञक फल जानना फलका तृतीयांश (फलके तीनका भाग देना) विश्वा जानना अथवा आये हुवे फलको वीस गुणा करना सो विश्वा होवे ॥ ९ ॥

उदाहरण ।

सूर्य १०।१६।५३।३९ यह द्वितीय भावसे न्यून है अत एव द्वितीय

---

१ धरणीधरः ॥ "न्यूनसंधिग्रहाद्भावाच्छोध्यो भावाल्पके खगे ॥ तदग्रिमाच्च संशोध्यो ग्रहो भावस्तथाधिके" ॥ इति ॥

भावकी आरंभसंधि १० । १० । २४ । ५ से अंतर किया ० । ६ । २९ । ३४ यह ग्रहसंध्यंतर हुवा इस्में इसी आरंभसंधि १०।१०।२४।५ के साथ द्वितीयभाव १०।२७।१९।३५ का अंतर किया ० । १६ । ५५ । ३० ये भावसंध्यंतर हुवा इसका भाग दिया-भाज्य ग्रहसंध्यंतर भाजक भावसंध्यंतर दोनो अंशादिक हैं इसलिये इनको सवर्णित किये भाज्यपिंड २३३७४ में भाजक पिंड ६०९३० का भाग दिया लब्ध० शेष २३३७४ को ६० साठ गुणे किये१४०२४४०हुवे भाग६०९३०का दिया लब्ध २३ कला आई शेष १०५० बचे इनको ६० गुणे किये६३००० हुवे इन्में फिर भाजक भावसंध्यंतर६०९३०का भाग दिया लब्ध१विकला आई ऐसे फल३तीन आये०।२३।१ ये भावसे ग्रह न्यून है अतएव चयसंज्ञक सूर्यके फल हुए--इसीप्रकार चंद्रादि ग्रहोंके फल जानना--अब विश्वा आनयन कहते हैं सूर्यके फल २३।१ के ३ तीनका भाग दिया लब्ध ७।४० ये विश्वा हुवे अथवा फल २३।१ को २० वीसगुणा किया ४६०।२० साठ ६० का भाग दिया लब्ध ७ शेष ४० बचे ये विश्वा आये इसीप्रकार चंद्रादिकके विश्वा जानना.

अथ क्षयचक्रफलविश्वाचक्रम्.

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	
० २३ १	० ५३ २७	० २८ २२	० १ ११	० ५८ ५१	० ८० २०	० ४८ २३	० ३४ ४५	फल.
चय	चय	चय	चय	चय	क्षय	चय	चय	क्षय चय.
७ ४०	१७ ४७ ४०	९ २७ २०	० २३ ४०	१६ १३ ४०	३ ६ ४०	१६ ७ ४०	१३ ३५ ०	विश्वा.

अथ ग्रहाणामवस्थानयनमाह व्यङ्कटेशः ।

बालाद्यवस्थाः क्रमशो ग्रहाणामोजे समे तद्विपरीतमाहुः ॥
बालः कुमारोथ युवा च वृद्धो मृतोलवानामृतुभिः क्रमेण इंति॥१०॥

भाषाटीका--अब ग्रहोंकी अवस्था लानेकी रीति व्यंकटेश कहते हैं॥ ग्रहोंकी बालादिक अवस्था क्रमसे विषम (एकी) राशीमें छः छः अंशोंके क्रमसे बाल१

कुमार २ युवा ३ वृद्ध ४ मृत ५ कही है और सम (बेकी) राशीमें वह बालादि अवस्था विपरीतक्रमसे (मृत १ वृद्ध २ युवा ३ कुमार ४ बाल ५) कही है ॥ १० ॥

बालाद्यवस्थासारणीचक्रम्.							
६	१२	१८	२४	३०	अंशः		
बाल	कुमार	युवा	वृद्ध	मृत	विषम	राशी	
मृत	वृद्ध	युवा	कुमार	बाल	समरा	राशी	

उदाहरण ।

सूर्य १०।१६।५३।३९ यह विषमराशीका है और छःछःअंशके क्रमसे तीसरे विभागमें है अतएव तीसरी युवा अवस्थामें हुवा इसी प्रकार शेष चंद्रादि ग्रहकी अवस्था जानना ॥

अथ बालाद्यवस्थाचक्रम्.								
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	
युवा	बाल	वृद्ध	कुमार	मृत	युवा	मृत	बाल	

अथ दृष्टिसाधनमाह धरणीधरः ।

द्रष्टाविहीनदृश्यस्य क्रमादेकादिभे दृशः ॥
भागार्द्धं तिथियुग्भागा भागार्द्धोनशराब्धयः ॥ ११ ॥
भोग्यभागाद्द्विनिघ्नांशाः क्रमात्षड्भाधिके ग्रहे ॥
दिग्भ्यः शुद्धे लवार्द्धं च ज्ञेया लिप्तादिकादृशः ॥ १२ ॥

भाषाटीका--अब धरणीधर दृष्टिसाधन कहते हैं, द्रष्टाग्रहको हीन करना दृश्य ग्रहमेंसे क्रमसे एकको आदिले शेषराशीयोंकी दृष्टि जानना॥एकराशी शेष बचे तो राशी विना अंशोंको अर्द्ध (आधे) करना यदि २ दो राशी शेष रहे तो राशी विना अंशोंमें १५ पंदर युक्त करना और तीन राशी शेष बचे तो अंशोंको अर्द्ध (आधे) करना और ४५ पैतालीसमेंसे शोधना ॥ ११ ॥ चार ४ राशी शेष बचे तो भोग्यांश (राशी विना अंशोंको ३० तीसमेंसे हीन करना) यदि ५ पांच राशी शेष बचे तो राशी विना अंशोंको द्विगुण करना और क्रमसे छः ६ सात ७ आठ ८ नव ९ राशी शेष बचे तो शेष राश्यादिकोंको १० दश राशीमेंसे शोधना—शेष बचे उसके अंश करके अर्ध (आधे) करना जो आवे वह कलादिक दृष्टि जाननी ॥ १२ ॥

१ यस्य ग्रहस्य दृष्टिरानीयते असौ द्रष्टा—जिस ग्रहकी दृष्टि लाना हो वह द्रष्टा ।

२ यं ग्रहं प्रत्यानीयते असौ दृश्यः—जिस ग्रहपर दृष्टि लाना हो वह दृश्य होता है ।

अथ भौमस्य विशेषदृष्टिमाह ।

पंचेन्दुयुक्ताः खलु सार्द्धभागा द्विभेंऽगभे षष्टिकलास्तथैव ॥
भागोनषष्टिर्भवतीह दृष्टिस्त्रिभेऽद्रिभे भूमिसुतोनदृश्ये ॥ १३ ॥

भाषाटीका--अब मंगलकी विशेष दृष्टि कहते हैं मंगलको हीन करे दृश्यमेंसे और यदि दो २ राशी शेष बचे तो राशी विना अंशोंको डेढे (अंशादिकके २का भाग देके आवे वह उन्ही अंशादिमें युक्त करना) करना और १५ पंदर युक्त करना कलादिक दृष्टि होवे और ६ छः राशी शेष बचे तो ६० साठकला दृष्टि जानना तैसेही यदि तीन राशी ७ सात राशी शेष बचे तो राशी विना अंशादिकोंको ६० साठमेंसे शोधना सो कलादिक भौमकी विशेष दृष्टी होवे उक्तराशियोंके अतिरिक्त राशी शेष बचे उसकी श्लोक ११।१२ के अनुसार दृष्टि करना ॥ १३ ॥

अथ जीवस्य विशेषदृष्टिमाह ।

जीवोनदृश्यस्य तु वेदभे स्याद्विघ्नांशकोना खलु षष्टिरेव ॥
सार्द्धांशकोना गजभे तु षष्टिस्त्रिभेऽद्रिभेंशार्द्धयुतेषु वेदाः ॥ १४ ॥

भाषाटीका—अब गुरुकी विशेष दृष्टि कहते हैं गुरुको हीन करे दृश्यमेंसे और यदि ४ चार राशी शेष बचे तो राशी विना अंशादिकोंको २ द्विगुण कर्के ६० साठमेंसे हीन करना दृष्टि होवे और ८ आठ राशी शेष बचे तो अंशोंको डेढे (अंशोंको आधे कर्के उन्ही अंशोंमें मिला) कर्के साठ ६० मेंसे शोधना (हीन करना) शेष बचे वह दृष्टी जानना इसीप्रकार यदि तीन ३ राशी सात ७ राशी शेष बचे तो अंशोंको अर्ध (आधे) कर्के ४५ पैंतालीस युक्त करना सो कलादिक गुरुकी विशेष दृष्टि होवे ॥ १४ ॥

अथ मंदस्य विशेषदृष्टिमाह ।

द्विनिघ्नभागाविधुभेंतरस्याद्विभे तु भागार्द्धविहीनषष्टिः ॥
द्विघ्नांशकोना नवभे तु षष्टिस्त्रिशद्युतातद्गजभेऽर्कजस्य ॥१५॥ इति

भाषाटीका—अब शनिकी विशेष दृष्टि कहते हैं—शनिको हीन करे दृश्यमेंसे यदि १ एक राशी शेष बचे तो राशी विना अंशादिकको द्विगुण करनेसे कलादिक

दृष्टि होती है और यदि २ दो राशी शेष बचे तो अंशोंको अर्ध (आधे) करके साठमेंसे हीन करना इसीप्रकार ९ नवराशी शेष बचे तो राशिविना अंशोंको द्विगुण करके साठमेंसे शोधनेसे दृष्टी होती है और ८ आठ राशी शेष बचे तो राशी विना अंशोंमें ३० तीस युक्त करना शनीकी विशेष दृष्टी होवे ॥ १५ ॥

सर्वेषांदृष्टिसाधनकोष्टक.									भौमविशेषदृष्टि.				गुरुविशेषदृष्टिकोष्टक.				
१	२	३	४	५	६	७	८	९	२	३	६	७	३	४	७	८	
अंशा	अंशा	अंशा द्धं	अंशा	अंशा	अंशा द्धं	अंशा द्धं	अंशा द्धं	अंशा द्धं	अंशा देव	अंशा	०	अंशा	अंशा अर्द्धा	अंशा द्विधा	अंश अद्ध	अंशा देढा	
अद्धे	१६ युक्ता	४५ × शु.	३० × शु.	२ गुणा	६० × शु.	४५ × शु.	३० × शु.	१५ × शु.	१५ यु.	६० × शु.	६० कला द्र.	६० × शु.	४५ यु.	६० × शु.	४५ यु.	६० × शु.	

शनिविशेषदृष्टि.			
१	२	८	९
अंशा	अंशा अर्द्धा	अंशा	अंशा द्विधा
२ गुणा	६० × शु.	३० यु.	६० शु.

उदाहरण।

सूर्य१०।१६।५३।३९मेंसे द्रष्टा चंद्र ५।२९।१९।४९ हीन किया४।१७।३३।५० हुवे शेष चार राशी बची हैं इसकारण इसके अंशादिक१७।३३।५० को ३० तीसमेंसे हीन किये १२।२६ शेष बचे ये सूर्यपर चंद्रकी दृष्टी हुई— इसीप्रकार दृश्य सूर्यमेंसे भौम११।६।१४।५४ को हीन किया ११।१०।३८।४५ हुवे शेष ग्यारा राशी हैं इसकी दृष्टी नहीं है इसकारण सूर्यपर भौमकी दृष्टी ०।० सूर्य दृश्यमेंसे द्रष्टा बुध १०।१०।४४।१८ को हीन किया शेष ०।६।९।२१ बचे शून्यराशीकी दृष्टी उक्त नहीं है इसलिये सूर्यपर बुधकी दृष्टी ०।० हुई सूर्यमेंसे द्रष्टा गुरु ३।०।४३।१ हीन किया शेष ७।१६।१०।३८ बचे सात राशी शेष हैं इसलिये गुरूकी विशेष दृष्टी श्लोकमें कहे अनुसार अंशोंको आधे किये ८।५ हुवे इनमें ४५ युक्त किये १४।५३।५ ये सूर्यपर गुरूकी विशेष दृष्टी हुई—

ग्रहोंपरिग्रहाणांदृष्टिचक्रं.							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
०	०	०	०	०	०	०	
०	३८	०	०	३२	०	०	सू.
०	४६	०	०	२२	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	
१२	०	१३	१८	१४	३८	४०	चं.
२६	०	५०	३५	१८	२७	२८	
०	१	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	३५	०	५	मं.
०	०	०	०	३२	०	४३	
०	०	०	०	०	०	०	
०	३५	०	०	१०	०	०	बु.
०	२४	०	०	२	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	
५३	४३	५१	५०	०	५४	४८	गु.
५	३६	४४	१	०	८	१०	
०	०	०	०	०	०	०	
२	२२	११	०	३६	०	०	शु.
१३	३३	५४	०	३२	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	
४४	५०	५४	३१	५७	०	०	श.
१०	५८	१७	५०	२	०	०	

दृश्य सूर्यमेंसे शुक्र९।१२।२६।८ को हीन किया शेष १ । ४ । २७ । ३१ बचे शेष एक राशी है इसलिये अंश ४ । २७ । ३२ को आधे किये २ । १३ ये सूर्यपर शुक्रकी दृष्टी आई फिर दृश्य सूर्यमेंसे द्रष्टा शनि ८।२४।४८।२३ हीन किया१।२२।५।१६ शेष एकराशी बची इसवास्ते शनीकी विशेष दृष्टी श्लोक १५ में कहे अनुसार अंशादिक २२।५ को द्विगुण किये४४।१० ये सूर्यपर शनीकी दृष्टी हुई इसीप्रकार शेष ग्रहोंपर ग्रहोंकी दृष्टि तथा भाव दृश्यपर ग्रह द्रष्टाकी दृष्टी जानना—इति ॥

भावोपरिग्रहाणांदृष्टिचक्रं.												
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावा:
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	३३	३७	१९	१३	५४	३७	२०	७	०	सू.
०	०	०	७	५२	३४	१०	४७	५२	५६	५१	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३२	२	५९	४२	२८	१६	२	०	०	२	१६	४३	चं.
५६	०	४	१०	५	१	५६	०	०	५१	५१	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	
०	०	०	१४	५२	३८	१२	४२	०	३१	१७	०	मं.
०	०	०	२३	२४	५५	४६	१०	०	१३	३२	२७	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	०	१०	३९	३४	३३	२५	५१	३४	१७	४	०	बु.
०	०	१३	१७	४७	१०	२८	४२	४७	५१	४७	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
४८	३१	१४	०	०	०	०	१३	४५	५१	०	५३	गु.
३७	४२	४६	०	०	०	०	१८	१४	२४	५४	१९	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	७	३३	३३	११	२९	५४	३७	२०	३	०	०	शु.
०	२६	४४	४२	१६	४६	२९	३४	४०	४२	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	५८	४१	१९	१२	५८	४५	३२	४७	०	०	०	श.
०	४५	४९	४७	४४	४५	४०	३१	१६	०	०	०	

अथ राशीनां स्वामिनः । उक्तं च व्यंकटेशेन ।

भौमाच्छविच्चन्द्ररविज्ञशुक्रवक्रेज्यमंदार्कसुतामरेज्याः ॥
मेषादिभानामधिपाः क्रमेण तदंशकानामपि ते भवेयुः ॥ १६ ॥

भाषाटीका—अब राशियोंके स्वामी व्यंकटेश कहते हैं--भौम (मंगल १) अच्छ (शुक्र २) वित् (बुध ३) चंद्र (चंद्र४) रवि (सूर्य ५) ज्ञ (बुध ६) शुक्र (शुक्र ७) वक्र (भौम ८) इज्य (गुरु ९) मंद (शनि १०) अर्कसुत (शनि ११) अमरेज्य (गुरु १२) क्रमसे मेषादिक राशियोंके स्वामी जानना, और मेषादिक राशियोंके अंशादिकोंके (द्रेष्काण सप्तमांश नवमांश द्वादशांश आदिके)भी क्रमसे येही स्वामी होते हैं ॥ १६ ॥

अथ नैसर्गमैत्रीमाह विश्वनाथः ।

इन्द्वीज्यक्षितिजारवींदुतनयौ सूर्येन्दुजीवाः क्रमा-
द्भृग्वर्कौ शशिसूर्यभूमितनया ज्ञार्की ज्ञशुक्रौ मताः ॥
सूर्यादेः सुहृदः समाः शशिसुतःसर्वेऽपि मंदास्फुजि-
न्मंदाचार्यकुजाःशनिः कुजगुरू जीवः परे वैरिणः ॥ १७ ॥

भाषाटीका—अब स्थिरमैत्री विश्वनाथ कहते हैं—चंद्र गुरु भौम १,सूर्य बुध २,सूर्य चंद्र गुरु ३, शुक्र सूर्य४,चंद्र सूर्य भौम ५, बुध शनि६,बुध शुक्र७, क्रमसे सूर्यादिक ग्रहोंके मित्र कहे हैं और बुध१, सर्व ग्रह २ (मं० गु० शु० श०) शनि शुक्र ३ शनि गुरु भौम ४, शनि ५,भौम गुरु ६, गुरु ७,क्रमसे सूर्यादिक ग्रहोंके सम कहे हैं शेष (मित्रसमसे बाकी रहे वह) शत्रु जानना ॥ १७ ॥

नैसर्गमैत्री,							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
चं. गु. मं.	र. बु.	र. चं. गु.	सू. शु.	र. चं मं.	बु. श.	बु. शु.	मित्र.
बु.	मं.गु.शु.श.	श. शु.	श. गु. मं.	श.	मं. गु.	गु.	सम.
शु. श.	०	बु.	चं.	शु. बु.	सू. चं.	र. चं. मं.	शत्रु.

अथतात्कालिकपंचधामैत्रीसाधनमाह-सोमदैवज्ञः ।

गृहतोऽर्थतृतीय २ तोय ४ खाय ११ व्यय १२ संस्थाः सुहृदो नभश्चराः ॥ इतरालयगा द्विपो मुनी न्द्रैरिति तत्कालजमित्र शत्रवःस्युः ॥ १८ ॥

भाषाटीका–अब तात्कालिक पंचधा मैत्रीसाधन सोमदैवज्ञ कहतेहैं। जिस ग्रहसे २।३।४।१०।११।१२ वें स्थानमें जो ग्रह स्थित होवे वह मित्र जानना शेष १।५।६।७।८।९ स्थानमें गये हुवे ग्रह शत्रु जानना इसप्रकार मुनीलोगोंने तात्कालिक मित्र शत्रु कहे हैं ॥ १८ ॥

उदाहरण।

सूर्यसे २ भौम ११ शनि १२ शुक्र स्थित हैं इसकारण ये सूर्यके मित्र हुवे और १ बुध ६ गुरु ८ चंद्रमा स्थित हैं ये सूर्यके शत्रु हुवे इसीप्रकार चंद्रादि सर्व ग्रहोंके तात्कालिक मित्र शत्रु जानना इति।

तात्कालिकमैत्रीचक्रम्।							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
मं शु. श.	श. गु.	र. बु. शु. श.	मं. शु. श.	चं.	९. बु. मं. श.	र. शु बु. मं. चं.	मित्र
चं बु. गु.	र. मं. गु. शु.	चं. गु.	र. चं. गु.	र. मं. बु. शु. श.	चं. गु	गु.	शत्रु

अधिमित्रसमत्वमेति मित्रं समखेटस्तु सुहृद्रिपुत्वमेति ॥
रिपुरेति समाधिशत्रुभावं खलु तत्कालजमित्रशत्रुभावात् ॥ १९ ॥

भाषाटीका–नैसर्गमैत्रीका मित्र ग्रह तात्कालिक मैत्रीमें मित्र होवे तो अधिमित्र और शत्रु होवे तो समत्वभावको प्राप्त होता है (मित्रमित्र अधिमित्र मित्रशत्रु सम होताहै) और नैसर्गमैत्रीका समग्रह तात्कालिक मैत्रीमें मित्र होवे तो मित्र शत्रु होवे तो शत्रुभावको प्राप्तहोताहै (सममित्र--मित्र समशत्रु-शत्रु होताहै) एवं नैसर्ग मैत्रीका शत्रुग्रह तात्कालिकमैत्रीमें मित्रहोवे तो सम और शत्रु होवे तो अधिशत्रु-भावको प्राप्तहोताहै (शत्रुमित्र–समशत्रु शत्रु–अधिशत्रु होताहै) ॥ १९ ॥

उदाहरण।

यहाँ नैसर्गमैत्रीमें सूर्यके चंद्र गुरु मित्र हैं ये चंद्र गुरु तात्कालिक मैत्रीमें सूर्यके शत्रु हैं अतः चंद्र गुरु पंचधामैत्रीमें सूर्यके सम हुवे एवं नैसर्गमैत्रीमें भौम सूर्यका मित्रहै तात्कालिक मैत्रीमें भी मित्र है इस लिये भौम सूर्यके अधिमित्र हुआ पंचधामैत्रीमें; और नैसर्गमैत्रीमें सूर्यके बुध सम है यह बुध तात्कालिकमैत्रीमें सूर्यके शत्रु हैं अतः शत्रुभावको बुध प्राप्त

अथ पञ्चधा मैत्रीचक्रम्।							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
मं.	०	र.	शु.	चं.	श. बु.	बु. शु.	ऽधि. मि
०	श. गु.	शु. श.	श. मं.	०	मं.	०	मित्र
चं. गु. शु. श.	र. बु.	चं. गु. बु.	र.	र. मं.	र.	र. चं. मं.	सम.
बु	शु. मं.	०	गु.	श.	गु.	गु.	शत्रु
०	०	०	चं.	बु. शु.	चं.	०	ऽधि शत्रु

हुवा—इसीप्रकार नैसर्गमैत्रीमें सूर्यके शुक्र, शनि शत्रु हैं ये तात्कालिक मैत्रीमें मित्र हैं इसलिये सूर्यके शनि, शुक्र पंचधा मैत्रीमें सम हुवे ऐसेही शेष ग्रहोंके अधिमित्रादि जानना इति.

अथ षड्वगसाधनमाह केशवः ।

भेशो ऽथार्केन्दुहोरे अयुजियुजि शशिब्रध्नयोः स्वात्मजांक-
क्षेशास्त्र्यंशा नवांशा अजमकरतुलाकर्कितोऽर्कांशकाः स्वात् ॥
भौमार्कीज्यज्ञशुक्रा अयुजि शर ५ शर ५ ष्टा ८ द्रि ७ पंचां ५ शनाथा-
स्त्रिंशा युग्मे विलोमाः क्रमवलिन इमे षट्शुभैःसद्युगोध्वैः ॥ २० ॥इति।

भाषाटीका--अब केशवदैवज्ञका कहाहुवा षड्वर्गसाधन कहते हैं । राशियोंके स्वामी प्रथमश्लोक १६ में कहेहैं वे जानना. तदनंतर विषमराशीमें प्रथम विभागमें सूर्यकी, द्वितीयविभागमें चंद्रकी होरा जानना और सम राशीके प्रथम विभागमें चंद्रकी, दूसरे विभागमें सूर्यकी होरा जानना, प्रथम १ पंचम ५ नवम ९ राशीके स्वामी द्रेष्काणके स्वामी होतेहैं (ग्रह प्रथम विभागमें १० अंशमें) होवे तो अपनी राशीका स्वामी द्रेष्काणका स्वामी जानना—और ग्रह दूसरे विभागमें (१० अंशसे अधिक २० अंशपर्यंत--) होवे तो ग्रह जिस राशीका हो उस राशीसे पांचवीं राशीका स्वामी द्रेष्काणका स्वामी होताहै एवं ग्रह तृतीय द्रेष्काणमें (२० अंशसे अधिक ३० अंशपर्यंत) होवे तो ग्रह जिस राशीका हो उस राशीसे ९ नवमराशीका स्वामी द्रेष्काणका स्वामी जानना) मेष १ मकर १० तुला ७ और कर्क ४ से नवांश जानना अर्थात् ग्रह मेषका हो तो मेषराशीसे वृषभराशीका हो तो मकरराशीसे मिथुन राशीका हो तो तुलाराशीसे कर्कराशीका हो तो कर्कराशीसे इसी प्रकार सिंहादि सर्व राशीयों-में जितनी संख्याके नवांशविभागमें ग्रह होवे उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो

१५	३०	अंश
सू.	चं.	विषम
चं.	सू.	सम

१ होराका एक विभाग १५ पंद्रह अंशका होताहै ।

२ एक द्रेष्काणका विभाग दश १० अंशका होताहै

३ तिसं अंशके ९ नवमे हिस्सेको नवांश कहते हैं एक नवांश विभाग ३ अंश २० कलाका होता है।

मेष	मकर	तुला	कर्क
१	२	३	४
५	६	७	८
९	१०	११	१२

राशी आवे उसका स्वामी नवांशका स्वामी होता है द्वादशांशके स्वामी अपनी राशीसे जानना (ग्रह जिस राशीका होवे उसी राशीसे जितनी संख्याके द्वादशांश[१]-विभागमें ग्रह होवे उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो राशी आवे उसका स्वामी द्वादशांशका स्वामी होता है) ॥ और विषमराशीमें ५।५।८।७।५ इन अंशोंके मंगल, शनी, गुरु, बुध, शुक्र, क्रमसे त्रिंशांशके स्वामी कहेहैं अर्थात् विषम राशीमें ५ अंशपर्यंत भौम त्रिंशांशका स्वामी जानना ऐसेही इन ५ अंशोंके आगेके ५ अंशका स्वामी शनी इसके आगेके ८ अंश-

नवांशविभाग ।									द्वादशांशविभाग ।											
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

का स्वामी गुरु फिर इनके आगेके ७ अंशका स्वामी बुध इसके आगेके ५ अंशका स्वामी शुक्र त्रिंशांशका स्वामी जानना. और समराशीमें उक्त त्रिंशांशके स्वामी विलोम (उलटे) कहे हैं (५ शु० ७ बु० ८ गु० ५ श० ५ मं०) ये छही वर्ग क्रमसे उत्तरोत्तर बलवान् जानना (ग्रहसे होरा बलवान् होरासे द्रेष्काण द्रेष्काणसे नवांश नवांशसे द्वादशांश द्वादशांशसे त्रिंशांश अधिक बलवान् जानना) चार ४ से अधिक वर्ग शुभग्रहके आवे तो शुभ समझना ॥ २० ॥

त्रिंशांशचक्र					
५	५	८	७	५	अंशाः
मं.	श.	गु.	बु.	शु.	विषमराशी.
शु.	बु.	गु.	श.	मं.	समराशीमें
५	७	८	५	५	अंशाः

अथ सप्तवर्गसाधनमाह ।

नगांशपास्त्वोजगृहे तदीशाद्युग्मे ग्रहे सप्तमराशिपात्तु ॥
पूर्वोक्तवर्गैः सहितो नगांशः स्युः सप्तवर्गा मुनिभिः प्रदिष्टाः ॥ २१ ॥

भाषाटीका—अब सप्तवर्गसाधन कहते हैं। विषमराशीमें अपनी राशीके स्वामीसे सप्तमांशके स्वामी जानना और समराशीमें अपनी राशीसे सप्तम राशी (सातवीं

१ तीस अंशके १२ भागका द्वादशांश कहते हैं एक द्वादशांशविभाग अढाई अंशका होता है ।

राशी) के स्वामीसे सप्तमांशके स्वामी जानना ॥ (ग्रह विषम राशीका हो तो जिस राशीका है उसी राशीसे और समराशीका हो तो जिसराशीका ग्रह होवे उस राशीसे जो सातमी राशी है उससे जितनी संख्याके सप्तमांशविभागमें[1] ग्रह स्थित होवें उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो राशी आवे उस्का स्वामी सप्तमांशका स्वामी समझना) पूर्वोक्तषड्वर्गोंमें ये सप्तमांशयुक्त करनेसे सप्तवर्ग होते हैं ऐसा मुनिलोकोंने कहा है ॥ २१ ॥

उदाहरण।

सूर्य १०।१६।५३।३९ यह कुंभराशीका है इसका स्वामी शनि गृहका स्वामी हुवा--होरा--सूर्य, होराके दूसरे विभागमें है और विषमराशीका है इस कारण सूर्यकी होराका स्वामी चंद्र हुवा—द्रेष्काण--सूर्य दूसरे द्रेष्काणविभागमें है इसलिये सूर्यकी राशी ११ कुंभसे पांचमी राशी ३ मिथुनका स्वामी बुध आया ये द्रेष्काणका स्वामी हुवा. सप्तमांश—सूर्य विषम राशीका है और सप्तमाश-विभागमें ये चार ४ संख्याके विभागमें हैं अतः सूर्यकी राशी ११ कुंभसे चार पर्यंत गिननेसे चौथी राशी २ वृषभ आई इसका स्वामी शुक्र सप्तमांशका स्वामी हुवा—नवांश—सूर्य ६ छह संख्याके नवांशविभागमें है और कुंभराशीका है अतः तुलराशीसे ६ छह संख्यातक गिननेसे १२ मीन राशी आई इस्का स्वामी गुरु है यह सूर्यके नवांशका स्वामी हुवा—द्वादशांश—सूर्य ७ सातसंख्याके द्वादशांश-विभागमें है इसलिये अपनी राशी कुंभसे गिननेसे सातमी ७ राशी ५ सिंह आई इस्का स्वामी सूर्य द्वादशांशका स्वामी हुवा त्रिंशांश—सूर्य विषमराशीका है और १६ अंशका है इसलिये त्रिंशाश विभागमें तीसरे८अंशके विभागमें है इसकारण विषमराशीके तीसरे विभागका स्वामी गुरु सूर्यके त्रिंशांशका स्वामी हुवा-इसीप्रकार शेष चंद्रादि सर्वग्रहोंके सप्तवर्ग जानना. इति.

सप्तमांशविभाग.						
१	२	३	४	५	६	७
४	८	१२	१७	२१	२५	३०
१७	३४	५१	८	५	४२	०

---

१ एक सप्तमांश विभाग ४ अंश १७ कलाका होताहै।

अथ ग्रहाणां सप्तवर्गचक्रम् ।

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	छ.	
११ श स	६ बु स	१२ गु स	११ श मि	४ चं उऽमि	१० श ऽमि	९ गु श	१० श	गृह
४ चं स	५ र स	४ चं स	५ र स	४ चं ऽमि	४ चं ऽश	४ चं स	५ र	होरा
३ बु श	२ शु श उ	१२ गु स	३ बु स्व	४ चं ऽमि	२ शु स्व	५ र स	६ बु	द्रेष्काण
२ शु स	६ बु स	७ शु मि	१ मं मि	१० श श	६ बु ऽमि	२ शु ऽमि	९ गु	सप्तमांश
१२ गु स	६ बु स	५ र ऽमि	१० श मि	४ चं ऽमि	१ मं मि	८ मं स	५ शु	नवमांश
५ र स्व	५ सू स	२ शु मि	३ बु स्व	४ चं ऽमि	२ शु स्व	६ बु ऽमि	७ श	द्वादशांश
९ गु स	८ मं श	६ बु स	९ गु श	२ शु ऽश	१२ गु उश	३ बु ऽमि	१० र	त्रिंशांश
५	४	६	३	६	५	५	३	शुभयोग
२	३	१	४	१	२	२	४	पापयोग

विनापरिश्रम शीघ्र सुगमरीतिसे सप्तवर्गज्ञान होनेके लिये आगे सप्तवर्गसारणीचक्र मेषादि राशियोंके लिखे हैं—

उनमें ग्रह जिस राशीका होवे उस राशीके कोष्टकमें जितने अंशका होवे उतने अंशके नीचे पंक्तिमें जो सप्तवर्गके स्वामी राशीसहित लिखे हैं वे उस ग्रहके सप्तवर्गके स्वामी होवेंगे और षष्टयंशका स्वामी भी उसीके नीचे पंक्तिमें लिखाहै वह जानना ॥

उदाहरण ।

जैसे यहां सूर्य १०।१६।५३।३९ है इसलिये कुंभराशीके कोष्टकमें १७ अंशके नीचे पंक्तिमें लिखे सप्तवर्गके स्वामी और षष्टयंशका स्वामी आये ।

गृ. प.	हो. प.	द्रे. प.	स. प.	न. प.	द्वा. प.	त्रिं. प.	ष. प.
११ श	४ चं	३ बु	२ शु	१२ गु	५ र	९ गु	८ मं.

षष्ट्यंशोपेतमेषराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
ग्रह	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का.	म १	मं १	मं १	मं १	मं १	म १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
सप्त.	मं १	म १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	४ मं १७ ८ १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
नव.	मं १	म १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं ३ २० १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	६ शु ४० २	बु ३
द्वाद.	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	[illegible]
त्रिंशां.	मं १	म १	म १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
षष्ट्यं.	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३

अंश.	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
ग्रह.	मं १	मं १	म १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	म १	मं १	मं १	मं १	मं १	म १	मं १
होरा.	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
सप्त.	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	१७ चं ८ ३४ ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	२१ र २५ ४२ ५	बु ६	बु ६
नव.	र ५	र ५	र ५	१६ र ४० ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
द्वाद.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	म ८	मं ८	म ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
त्रिंशां.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
षष्ट्यं.	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९

मेषराशि सप्तवर्गपतिचक्रम् ।

८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०	अंश
मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	ग्रह
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	होरा
मं १	मं १	म १	मं १	१० मं ० १	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	द्रेष्का.
शु २	शु २	८ शु ३४/१७ २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	१२ बु ५१/२३ ३	चं ४	चं ४	च ४	च ४	सप्त.
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	१३ चं २० ४	र ५	र ५	र ५	नव.
चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	द्वाद.
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	शु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	त्रिं.
चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	षष्ट्यं.

२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०	अंश
मं १	मं १	मं १	मं १	म १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	ग्रह
चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	हो.
गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	द्रे.
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	२५ बु ४२/५१ ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	३० शु ० ७	सप्त.
शु ७	२३ शु २० ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२६ मं ४० ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	नव.
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	द्वा.
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	त्रिं.
श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	षष्ट्यं.

षष्ट्यंशोपेत.							वृषभराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।								
अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
ग्रह	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
सप्त.	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	४ मं १७/८ ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
नव.	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	२ श २० १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	५ श ४० ११	गु १२
द्वाद.	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
त्रिंशां.	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
षष्ट्यं.	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
ग्रह	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का.	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
सप्त.	श ११	श ११	श ११	श ११	१७ श ८/३४ ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	२१ गु २५/४२ १२	मं १	मं १
नव.	शु २	शु २	शु २	१६ शु ४० २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्वाद.	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
त्रिंशां.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
षष्ट्यं.	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०

वृषभराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०	अंश
शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	ग्रह
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	हो.
शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	द्रे.
गु ९	गु ९	८ गु ३४ १७ ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	१२ श ५१ २५ १०	श ११	श ११	श ११	श ११	सप्त.
गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	१३ मं २० १	शु २	शु २	शु २	नव.
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	द्वा.
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	त्रिं.
र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	षष्ट्यं.
२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०	अंश
शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	ग्रह
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	हो.
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	द्रे.
मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	२५ मं ४२ ५१ १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	स.
चं ४	१३ चं २० ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	२६ र ४० ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	नव.
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	द्वा.
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	त्रिं.
श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	षष्ट्यं.

षष्ट्यंशोपेतमिथुनराशिसप्तवर्गगतिचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
ग्रह	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का.	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
सप्त.	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	४ बु १७ ८ ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
नव.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	२ शु २० ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	६ मं ४० ८	गु ९
द्वाद.	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
त्रिंशां.	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
षष्ट्यं.	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
ग्रह	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४
द्रेष्का.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
सप्त.	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	१७ बु ८ ३४ ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	२१ शु २५ ४२ ७	मं ८	मं ८	मं ८
नवमां.	श ११	श ११	श ११	१६ श ४० ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
द्वाद.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
त्रिंशां.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
षष्ट्यंश	गु ९	श १०	श ११	गु २२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११

मिथुनराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् । (७)

८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०	अंश
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	ग्रह.
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	होरा
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	द्रेष्का.
चं ४	चं ४	८ चं ३४/१७ ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	१२ र ५१/२६ ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	सप्त.
गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	१३ श २० १०	श ११	श ११	श ११	नवां.
बु ६	शु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	द्वाद.
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	त्रिंशां.
बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	षष्ट्यं.

२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०	अंश.
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	ग्रह.
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	होरा.
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	द्रेष्का.
मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२५ मं ४२/५१ ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	सप्त.
मं १	२३ मं २० १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२६ शु ४० २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	नवां.
गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	द्वाद.
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	त्रिंशां.
गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	षष्ट्यं.

षष्ट्यंशोपेत कर्कराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
ग्रह	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४
द्रेष्का.	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४
सप्त.	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	४ श १७ ८ १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
नवां.	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	३ चं २० ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	६ र ४० ५	बु ६
द्वाद.	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
त्रिंशां.	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
षष्ट्यं.	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२३ ३०
ग्रह	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
होरा.	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का.	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
सप्त.	मं १	मं १	मं १	मं १	१७ मं ८ ३२ १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२१ शु २५ ४२ २	बु ३	बु ३
नवां.	मं ८	मं ८	मं ८	१६ मं ४० ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
द्वाद.	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
त्रिंशां.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
षष्ट्यं.	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२

कर्कराशिसप्तवर्गपत्रिचक्रम् ।															
८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०	अंश.
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	ग्रह.
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	होरा.
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	द्रेष्का.
श ११	श ११	८ श ३४/१७ ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	१२ गु ५१/२५ १२	मं १	मं १	मं १	मं १	सप्त.
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	१३ शु २० ७	म ८	मं ८	मं ८	नवां.
शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	द्वाद.
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	त्रिंशां.
शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	षष्ट्यं.

२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०	अंश
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	ग्रह
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	होरा
गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	द्रेष्का.
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	२५ बु ४२/५ ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	सप्त.
श १०	२३ श २०१०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	२६ श ४०११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	नवां.
मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	द्वाद.
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	त्रिंशां.
मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	षष्ट्यं.

षष्ट्यंशोपेतसिंहराशिसप्तवर्गचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
ग्रहं	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का.	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
सप्त.	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	४ र १७ ८ ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
नवां.	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	३ मं २० १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु ४० २	बु ३
द्वाद.	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
त्रिंशां.	म १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	म १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
षष्ट्यं.	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
ग्रह	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
सप्त.	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	१७ मं ८ ३४ ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	२१ गु २५ ४२ ९	श १०	श १०
नवमां.	र ५	र ५	र ५	१६ र ४० ५	बु ६	बु ३	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
द्वाद.	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
त्रिंशां.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
षष्ट्यंश	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १

षष्ट्यंशोपेतं सिंहराशिसप्तवर्गचक्रम् ।

८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०	अंश.
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	ग्रह.
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	होरा.
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	द्रेष्का.
बु ६	बु ६	८बु ३४ १७६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	१२शु १ २५७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	सप्त.
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	१३च ४	र ५	र ५	र ५	नवां.
म ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	द्वाद.
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	त्रिंशां.
मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	षष्ट्यं.

२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०	अंश
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	ग्रह
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	चं ४	होरा
मं १	मं १	मं १	म १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	द्रेष्का.
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	२५ श ४२ ५११०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	सप्त.
शु ७	२३ शु २०७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२६ मं ४०८	गु ९	गु ९	गु ९	ग ९	गु ९	गु ९	नवां.
शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	द्वाद.
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	त्रिंशां.
शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	म ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	षष्ट्यं.

षष्ठ्यंशोपेतंकन्याराशिसप्तवर्गचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
ग्रह	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ५
द्रेष्का.	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	घु ६	बु ६	बु ६	ब ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
सप्त.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	ग १२	४ गु १७१२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
नवां.	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	२ श २०१०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ६ ४० ११	गु १२
द्वाद.	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
त्रिंशां.	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
षष्ठ्यं.	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
ग्रह	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का.	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
सप्त.	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	१७ बु ८ ३४ ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	२१ चं २५ ४२ ४	र ५	र ५
नवमां	शु २	शु २	शु २	१६ शु ४० २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्वाद.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
त्रिंशां.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
षष्ठ्यंश	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २

षष्ट्यंशेऽयेतं कन्याराशिसप्तवर्गचक्रम् ।

८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०	अंश.
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	ग्रह.
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	होरा.
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	द्रेष्का.
मं १	मं १	८मं ३४ १७१	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	१२शु ५१ २५२	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	सप्त.
गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	१३ ० मं १	शु २	शु २	शु २	नवां.
गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	द्वाद.
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	त्रिंशां.
गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	षष्ट्यं.

२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०	अंश
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	ग्रह
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	होरा
शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	द्रेष्का.
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	२५ र ४२५ ४८	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	सप्त.
चं ४	२३ ० चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	२६ र ४० ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	नवां.
बु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	द्वाद.
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	त्रिंशां.
बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	१ ५	षष्ट्यं.

षष्ट्यंशोपेततुलाराशिसप्तवर्गचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
ग्रह	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
सप्त.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	४ शु १७ ८ ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
नवां.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	३ शु २० ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ६ ४० ८	गु ९
द्वाद.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
त्रिंशां.	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
षष्ट्यं.	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
ग्रह	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
सप्त.	श १०	श १०	श १०	श १०	१७ श ८ २५ १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	२१ श २५ ४२ ११	गु १२	गु १२
नवमां	श ११	श ११	श ११	१६ ४० श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
द्वाद.	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
त्रिंशां.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
षष्ट्यंश	मं १	शु २	र ३	चं ४	सू ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३

षष्ट्यंशोपेतं तुलराशिसप्तवर्गचक्रम् ।

८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०	अंश.
शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	ग्रह
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	होरा
शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	द्रेष्का.
मं ८	मं ८	८मं ३४ १५ ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	१२गु ५१ २४९	श १०	श १०	श १०	श १०	सप्त.
गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	१३श २०१०	श ११	श ११	श ११	नव.
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	द्वाद.
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	त्रिं.
श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	म ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	षष्ट्यं.

२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०	अंश.
शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	ग्रह
चं ४	च ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	हो.
बु ३	बु ३	चु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	द्रे.
गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	२५गु ४२ ५१ १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	सप्त.
मं १	२३मं २० १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२६शु ४० २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	नव.
बु ४	बु ४	बु ४	बु ४	बु ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	द्वा.
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	त्रिं.
चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	ग ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	षष्ट्यं.

षष्ट्यंशोपेतं वृश्चिकराशिसप्तवर्गचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
ग्रह	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
सप्त.	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	श २	शु २	४ १७ श ८ २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
नवां.	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	च ४	३ चं २० ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	६ र ४० ५	बु ६
द्वाद.	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
त्रिशां.	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
षष्ट्यं.	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	गु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
ग्रह	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	म ८	मं ८
होरा.	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
सप्त.	र ५	र ५	र ५	र ५	१७ ८ र २४ ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	ब ६	बु ६	बु ६	२१ बु २५ ४२ ६	शु ७	शु ७
नवां.	मं ८	मं ८	म ८	१६ ४० मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
द्वाद.	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
त्रिंशां.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
षष्ट्यं.	शु २	बु ३	श ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४

षष्ट्यंशोपेतवृश्चिकराशिसप्तवर्गचक्रम् ।

८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०	अंश
मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	ग्रह
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	होरा
मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	द्रेष्का.
बु ३	बु ३	८ ३४ १७ बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	१२ ५१ २५ चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	सप्त.
बु ६	बु ६	[illegible] ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	१३ ० ७ शु	मं ८	मं ८	मं ८	नवां.
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	द्वाद.
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	त्रिंशां.
श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	षष्ट्यं.

२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०	अंश
मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	ग्रह
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	होरा
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	द्रेष्का.
शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	२५ ४२ ५१ शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	सप्त.
श १०	२२ श २० १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	२६ ४० ११ श	गु १२	शु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	नवां.
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	द्वाद.
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	त्रिंशां.
र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	षष्ट्यं.

षष्ट्यंशोपेतधनराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश	३० ०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
ग्रह	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
सप्त.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	४ गु १७ ९ ८	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
नवां.	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	३ मं २० १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु ६ ४० २	बु ३
द्वाद.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
त्रिंशां.	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
षष्ट्यं.	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
ग्रह	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
सप्त.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	१७ गु [illegible] १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	२५मं [illegible] १	शु २	शु २
नवमां.	र ५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बु [illegible]	बु ६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बु [illegible]	[illegible]	शु [illegible]	शु [illegible]	शु [illegible]	शु ७
[illegible].	शु [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ४	[illegible] ४	[illegible] ४	[illegible]	[illegible] ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
त्रिंशां.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
षष्ट्यंश	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५

षष्ट्यंशोपेतं धनराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०	अंश.
गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	ग्रह
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	होरा
गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	द्रेष्का.
श १०	८ ३४ श्न १७ १०	श ११	श ११	श ११	श्न ११	श ११	श ११	श्न ११	श ११	१२ श्न ५१ २५ ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	सप्त.
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	च ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	१३ चं २० ४	र ५	र ५	र ५	नव.
गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	द्वाद.
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	त्रिं.
गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	शं १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	षष्ट्यं.

२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०	अंश.
गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	ग्रह
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	हो.
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	द्रे.
शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२५ ४२ शु ५१ २	बु ३	बु ३	चु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	सप्त.
शु ७	२३ शु २० ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२६ मं ४० ८	ग ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	नव.
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	द्वा.
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	त्रिं.
बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श्न १०	श्न ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	षष्ट्यं

षष्ट्यंशोपेतं मकरराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
ग्रह	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
सप्त.	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	४ १७ चं ८४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
नवां.	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	३ श २०१०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	६ श ४०११	गु १२
द्वाद.	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
त्रिंशां.	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
षष्ट्यं.	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
गृह	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
सप्तमां.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	१७ ८ शु २४ ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२१ मं २५ ४२ ८	गु ९	गु ९
नवमां.	शु २	शु २	शु २	१६ ४० शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्वादशां	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
त्रिंशां.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
षष्ट्यं.	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६

षष्ट्यंशोपेतमकरराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०	अंश
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	ग्रह
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	होरा
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	द्रेष्का.
र ५	र ५	९ ३४ १७ र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	१२ ५१ २५ बु ६	शु ७	श ७	शु ७	शु ७	सप्त.
गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	१३ २० मं १	शु २	शु २	शु २	नवां.
मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	द्वाद.
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	त्रिंशां.
मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	षष्ट्यं.

२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०	अंश
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	ग्रह
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	होरा
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	ब ६	बु ६	द्रेष्का.
गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	ग ९	गु ९	२५ ४२ ५१ गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	सप्त.
चं ४	२३ २० चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	२६ ४० र ५	बु ६	बु ६	बु ६	ब ६	ब ६	बु ६	नवां.
शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	द्वाद.
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	त्रिंशां.
शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	षष्ट्यं.

षष्ट्यंशोपेतकुंभराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
ग्रह	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का.	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
सप्त.	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	४ श १७ ८ ११	गु १२	गु १२	ग १२	गु १२	गु १२	गु १२
नवां.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	२ शु २० ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ६ ४० ८	गु ९
द्वाद.	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
त्रिंशां.	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
षष्ट्यं.	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	ग १२	मं १

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
ग्रह	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का.	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
सप्त.	शु २	शु २	शु २	शु २	१७ श ८ ३४ २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	२१ बु २५ ३३	चं ४	चं ४
नवमां.	श ११	श ११	श ११	१६ श ४० ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
द्वाद.	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
त्रिंशां.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
षष्ट्यंश	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७

षष्ट्यंशोपेतं कुंभराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०	अंश.
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गृह
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	होरा
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	द्रेष्का.
गु १२	गु १२	८ ३४ १७ गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	१२ ५१ २५ मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	सप्त.
गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	१३ २० १० श १०	श ११	श ११	श ११	नव.
शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	द्वाद.
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	त्रिं.
शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	षष्ट्यं.
२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०	अंश.
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गृह
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	हो.
शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	द्रे.
चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	चं ४	२५ ४२ ५२ चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	सप्त.
मं १	२३ २० मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२६ ४९ शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	नव.
मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	[illegible] १०	[illegible] १०	[illegible] १०	[illegible] १०	[illegible] १०	[illegible].
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	त्रिं.
मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	षष्ट्यं.

षष्ट्यंशोपेतं मीनराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०
गृह	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	ग १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	च ४
द्रेष्का.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	ग १२	गु १२	गु १२	गु १२
सप्त.	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	४ १७ बु ८ ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
नव.	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	३ चं २० ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	६ र ४० ५	बु ६
द्वाद.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
त्रिंशां.	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
षष्ट्यं.	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०
गृह	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का.	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
सप्तमां.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	१७ गु ८ ३४ ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	२१ श २५ ४२ १०	श ११	श ११
नवमां.	मं ८	मं ८	मं ८	१६ मं ४० ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
द्वादशां.	गु ६	गु ६	गु ६	गु ६	गु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
त्रिंशां.	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
षष्ट्यं.	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८

षष्ट्यंशोपेतमीनराशिसप्तवर्गपतिचक्रम् ।

८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०	अंश
गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गृह
चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	होरा
गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	च ४	चं ४	चं ४	चं ४	द्रेष्का.
शु ७	शु ७	८ ३४ शु १७ ७	म ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं [illegible]	म ८	१२ मं ५१ २५ ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	सप्त.
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	[illegible] ७	शु ७	शु ७	१३ शु २० ७	मं ८	मं ८	मं ८	नवां.
बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	द्वाद.
बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	त्रिंशां.
बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	षष्ट्यं.

२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०	अंश
गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	ग १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गृह
र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	होरा
मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	द्रेष्का.
श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	२५ श ४२ ५१ ११	गु १२	गु १२	गु १२	ग १२	ग १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	सप्त.
श १०	२३ श २० १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	२६ श ४० ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	ग १२	गु १२	नवां.
गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	द्वाद.
श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	त्रिंशां.
गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	षष्ट्यं.

दशांशसारणीचक्रम् ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	राशी	स०
१	१०	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८	विभा.३	१
२	११	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९	६	२
३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०	९	३
४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११	१२	४
५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२	१५	५
६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१	१८	६
७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२	२१	७
८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३	२४	८
९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२	७	४	२७	९
१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३	८	५	३०	१०

चरराशिमें मेष राशिको आदिले स्थिरमें सिंहको आदिले द्विस्वभावमें धन राशिको आदिले जितनी संख्याके विभागमें होवे उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो

षोडशांशविभाग (पाये.) .

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	
१	३	५	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	अं.
५२	४५	३७	३०	२२	१५	७	०	१२	४५	३७	३०	२२	१५	७	०	क.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	वि.

राशी आवे वह राशीका स्वामी षोडशांशका स्वामी होता है ।

अथदशवर्ग बनानेकी रीति कहते हैं ।

सप्तवर्गमें दशांश षोडशांश षष्ट्यंश मिलानेसे दशवर्ग होते हैं ।

अथाष्टवर्गानयनमाह ढुंढिराजः ।

स्वान्मंदात्कुजतो रविर्मृतितपोलाभार्थकेंद्रस्थितः शुक्रादस्तरिपुव्ययेषु चगुरोर्धर्मारिपुत्रात्तिषु ॥ चन्द्रात्प्राप्तिरिपुत्रिखेषु शशिजात्पंचत्रिनन्दव्ययारि प्राप्त्यभ्रगतस्तनोस्त्रिखसुखोपांत्यारिरिःफे शुभः ॥ २२ ॥

भाषाटीका—अब अष्टवर्ग बनानेकी रीति ढुंढिराज कहते हैं ।

प्रथम सूर्याष्टवर्ग कहते हैं ।

सूर्य अपने स्थानसे और भौमसे और शनिसे ८।९।११।२।१।४।७।१०में ानमें शुभ फल देता है और शुक्रसे ७ । ६ । १२ गुरुसे९।६।५।११ चंद्रसे

। १ । ६ । ३ । १० बुधसे ५ । ३ । ९ । १२ । ६ । ११ । १० लग्नसे ३ । १० । ४ । ११ । ६ । १२ स्थानमें शुभफल देता है इन शुभफलप्रद स्थानोंमें रेखा देना और शेष स्थानोंमें बिंदु (शून्य) देना सूर्यका अष्टवर्ग होवे ॥ २२ ॥

अथ रवेरष्टवर्गांकाः ४८.							
र	चं	मं	बु	गु	शु	श	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	५	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

अथ चंद्रस्याष्टवर्गः ।

भौमाद्भौर्नवधीधनोपचयगः षट्त्र्याप्तिधीस्थोर्कजा-
ल्लग्नाच्चोपचये रवेरुपचयाष्टास्तेषु शस्तो बुधात् ॥
धीरंध्रेशचतुष्टयं त्रिषु गुरोः केंद्राष्टलाभव्यये-
स्वादेकोपचयास्तगास्त्रिखभवास्तांबुत्रिकोणे भृगोः ॥ २३ ॥

भाषाटीका–चंद्राष्टवर्ग कहते हैं। चंद्रमा भौमसे ९ । ५ । २ । ३ । ६ । १० । ११ शनिसे ६ । ३ । ११ । ५ लग्नसे ३ । ६ । १० । ११ सूर्यसे ३ । ६ । १० । ११ । ८ । ७ बुधसे ५ । ८ । ११ । १ । ४ । ७ । १० । ३ गुरुसे १ । ४ । ७ । १० । ८ । ११ । १२ चंद्रसे १ । ३ । ६ । १० । ११ । ७ भृगुसे ३ । १० । ११ । ७ । ४ । ९ । ५ में स्थानमें शुभफल देता है इन स्थानोंमें रेखा देना शेष स्थानोंमें शून्य देना चंद्रका अष्टवर्ग होवे ॥ २३ ॥

अथ भौमस्याष्टवर्गमाह ।

स्वाद्भौमोष्टचतुष्टयायधनगो जीवात्षडायांत्यखे [illegible]
चन्द्रादायरिपुत्रिगो भृगुसुतादष्टांत्यलाभारिगः ॥ [illegible]कय
ज्ञात्पंचायरिपुत्रिगोर्कतनयात्केंद्राष्टधर्मायगः [illegible] ॥
सूर्याच्चोपचयात्मजेषु तनुतस्त्र्यायारिखाद्ये शु[illegible]ः भास्करैः कर्काद्यं वणिजांतकं

भाषाटीका–अब भौमका अष्टवर्ग कहते हैं । भौम[illegible]तफलैः संयुतं तत्सौख्यार्थनिरीक्षकं
७ । १० । ११ । १२ गुरुसे ६ । ११ । १२ । १० चंद्रमे

। १२ । ११ । ६ बुधसे ५ । ११ । ६ । ३ शनिसे १ । ४ । ७ । १० । ८ । ९ । सूर्यसे ३ । ६ । १० । ११ । ५ लग्नसे ३ । ११ । ६ । १० । १ स्थानमें शुभफल देताहै इन शुभफलप्रदस्थानमें रेखा देना शेष स्थानमें शून्य देना भौमका अष्टवर्ग होवे ॥ २४ ॥

अथ चंद्रस्याष्टवर्गांकाः ४९.								अथ भौमस्याष्टवर्गांकाः ३९							
र	च	मं	बु	गु	शु	श	ल	र	च	मं	बु	गु	शु	श	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३	३	३	१	३	६	६	१	१
६	३	३	३	४	४	५	६	५	६	२	५	१०	८	४	३
७	६	५	४	७	५	६	१०	६	११	४	६	११	११	७	६
८	७	६	५	८	७	११	११	१०		७	११	१२	१२	८	१०
१०	१०	९	७	१०	९			११		८				९	११
११	११	१०	८	११	१०					१०				१०	
		११	१०	१२	११					११				११	
			११												

अथबुधस्याष्टवर्गमाह ।

शुक्राद्दासुतधर्मलाभमृतिगः सौम्यःकुजार्कैस्तपः-
केंद्रायाष्टधने स्वतोप्युपचयान्त्यैकत्रिकोणे शुभः ॥
कोणान्त्यारिभवेरेवरिपुभवाष्टांत्ये गुरोरिन्दुतः
खायाष्टारिसुखार्थगः स्वखभवाष्टैकांबुपट्सूदयात् ॥ २५ ॥

भाषाटीका—अब बुधका अष्टवर्ग कहते हैं। शुक्रसे बुध १ । २ । ३ । ४ । ५ । ९ । ११ । ८ में स्थानमें शुभ फल देता है और मंगल शनिसे ९ । १ । ४ । ७ । १० । ११ । ८ । २ बुधसे ३ । ६ । १० । ११ । १२ । १ । ९ । ५ । सूर्यसे ९ । ५ । १२ । ६ । ११ । गुरुसे ६ । ११ । ८ । १२ चंद्रसे १० । ११ । ८ । ६ । ४ । २ लग्नसें २ । १० । ११ । ८ । १ । ४ । ६ स्थानमें शुभफलदेताहै इन उक्त स्थानोंमें रेखादेना शेषस्थानमें बिंदुदेना बुधका अष्टवर्ग होवे ॥ २५ ॥

अथ जीवास्याष्टवर्गमाह ।

...वागाष्टत्रिकेंद्रे स्वनवदशभवारातिधीस्थश्च शुक्रा-
त्स्वनवसु च कुजात्स्वाष्टकेंद्राय इंज्यः ॥
...म्बुधिरिपुषु शनेर्व्ययंत्यधावट्सु शस्तः ॥ २६ ॥

...सूर्य अपने स्थानसे औरेषु सहजनवाष्टायकेन्द्रार्थगोऽर्का-
...ानमें शुभ फल देता है औ...

अथ लग्नस्याष्टवर्गांका: ४९.

र	च	मं	बु	गु	शु	श	ल	
३	३	१	१	१	१	१	३	
४	६	३	२	२	२	३	६	
६	१०	६	४	४	३	४	१०	
१०	१२	१०	६	५	४	६	११	
११		११	८	६	५	१०		
१२			१०	७	८	११		
			११	९	९			
				१०	११			
				११				

स्थानानि यान्युक्तानि तेषु रेखा अन्यत्र बिन्दुः ॥ २९ ॥

इति रेखाष्टकम् ।

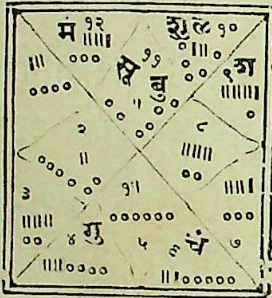
भाषाटीका—प्रथम जिसग्रहका अष्टवर्ग करना हो वह ग्रह जिसराशीमें स्थित हो उस राशीको आदिले जन्मकुंडली ग्रहसहित लिखना तदनंतर अपने अपने अष्टवर्ग जो जो स्थान शुभफलप्रद कहे हैं उन उन स्थानोंमें रेखा लिखना अन्य स्थानोंमें बिंदु (शून्य) लिखना—इसप्रकार सूर्यसे लग्नपर्यंत आठही ग्रहोंके अष्टवर्ग बनाना फेर बाराही राशियोंकी अष्टवर्गकी रेषाका योग पृथक् पृथक् करके अपनी अपनी रेखाका योग कुण्डलीमें लिखना सो समुदायाष्टवर्ग होवे तदनंतर इस समुदायाष्टवर्गमें मीन मेष वृषभ मिथुन राशीमें जितनी जितनी रेखा होवे उन सर्व रेखाका योग करना ये योग १२० एक सौ वीससे अधिक आवे तो प्रथम वयमें सौख्यार्थ विशेष प्राप्त होगा—एवं कर्क सिंह कन्या तुला राशीकी सर्व रेखाका योग १२० एक सौ वीससे अधिक आवे तो तरुण अवस्थामें सुख अर्थप्राप्ति आदि विशेष होगा—इसीप्रकार वृश्चिक धन मकर कुंभ राशियोंकी सर्व रेखाका योग १२० एक सौ वीससे अधिक आवे तो उत्तर वयमें सुख अर्थप्राप्ति आदि शुभफल विशेष होगा और १२० एक सौ वीससे अल्परेखैक्य जिस अवस्थामें आवे उस अवस्थामें मध्यम फल होगा ऐसा जानना ॥ २९ ॥

१ शंभुहोराप्रकाशे—मीनाद्यं मिथुनांतकं प्रथमकं प्रोक्तं वयः प्राक्तनैः कर्काद्यं वणिजांतकं तरुणतासज्ञश्च मध्यं बुधैः ॥ कुंभांतं स्थविरांतकं च बहुभिर्यत्सत्फलैः संयुतं तत्सौख्यार्थविशेषकं बलयुतेनेदं विशेषाच्छुभम् ॥ ११ ॥

उदाहरण ।

सूर्यरेखाष्टक करनाहै—यहाँ सूर्य कुंभराशीका है अतएव कुंभराशीको आदिले जन्मकुंडली ग्रहसहित लिखके श्लोक २२ के अनुसार शुभफलप्रद स्थानोंमें रेखा अन्यस्थानोंमें शून्य लिखी सर्वरेखाका योग किया ४८ हुवा ये सूर्यका अष्टवर्ग हुवा इसी प्रकार शेष ग्रहोंके अष्टवर्ग जानना ॥

सूर्याष्टवर्गैक्य ४८



रेखाष्टकचक्रम्

१	२	३	गु ४	५	चं ६	७	८	श ९	शु.ल १०	र.बु ११	मं १२	
३	२	६	४	२	३	५	६	७	३	२	५	सू ४८
६	५	४	५	३	४	४	६	३	२	४	२	चं. ४९
४	१	७	४	२	२	३	४	६	२	१	३	मं ३९
५	२	७	४	३	३	६	४	६	६	५	३	बु. ५४
५	७	५	४	२	२	७	५	३	४	६	४	गु. ५६
६	५	२	४	४	५	३	५	४	५	५	४	शु. ५२
२	४	३	३	२	२	३	६	५	३	४	२	श. ३९
३	६	२	३	४	३	३	६	५	४	४	६	ल. ४९
३४	३२	[illegible]	३१	२२	२७	३४	४२	२९	२९	३१	३०	योग

समुदायाष्टवर्ग उदाहरण ।

जैसे मेषराशीके सूर्याष्टवर्गमें रेखा ३ चंद्राष्टवर्गमें ६ भौमाष्टवर्गमें ४ बुधाष्टवर्गमें ५ गुरुके अष्टवर्गमें ५ शुक्राष्टवर्गमें ६ शनिके अष्टवर्गमें २ लग्नाष्टवर्गमें रेखा ३ हैं इन आठही वर्गोंकी मेषराशीकी रेखाका योग किया ३४ हुवे इसीप्रकार बाराही राशियोंके अष्टवर्गकी रेखाका योग किया इसको समुदायाष्टवर्ग जानना इस समुदायाष्टवर्गमें मीनराशीमें रेखा ३० मेषमें ३४ वृषभमें ३२ मिथुनमें ३५ रेखा हैं इनका योग किया १३१ आये ये १२० से अधिकहैं अतः प्रथमवयमें सुखार्थ वृद्ध्यादिश्रेष्ठ फल होगा एवं कर्कमें ३१ सिंहमें २२ कन्यामें २७

तुलामें ३४ रेखा हैं इनका योग ११४ आया ये १२० से अल्प हैं इसलिये मध्यवयमें मध्यम फल होगा—इसीप्रकार वृश्चिक ३८ धन ३९ मकर २९ कुंभ३१ राशीयोंकी रेखाका योग १४१ आया ये १२० से अधिक हैं इसलिये अन्त्य वयमें सौख्यार्थप्राप्त्यादि श्रेष्ठ फल होगा. ऐसा सर्वमें जानना ।

इति रेखाष्टकम् ।

समुदायाष्टवर्गकुंडली.

शु १० ल
२९
सू ११ बु
३१
मं १२
३०
१
२८
२
२२
३
३५
४
२१
५
२२
६
२७
७
३४
८
४२
३९ श ९

शुभाशुभफलचक्रम.		
आद्यावस्था	मध्यावस्था	अंत्यावस्था
१२१	११४	१४१
श्रेष्ठ.	मध्यम	श्रेष्ठ

अथ रश्मिसाधनमाह ।

सत्रिभं सायनार्कं सूर्यस्य व्यर्केन्दुचन्द्रस्य मध्यस्पष्टयोर्योगार्द्धं चलोच्चे हीनं भौमादिकानां चेष्टाकेंद्रम् ॥ तद्रसोर्ध्वेनिनभाच्छुद्धंशेषर्क्षे सैकं अंशाद्या द्विघ्ना चेष्टारश्मिः ॥ ३० ॥

भाषाटीका—अब रश्मिसाधन कहते हैं।अयनांशयुक्त किये हुवे स्पष्टसूर्यमें तीन राशी युक्त करना सूर्यका चेष्टाकेंद्र होवे और स्पष्टचंद्रमेंसे स्पष्टसूर्य हीन करनेसे चंद्रका चेष्टाकेन्द्र होता है और भौमादिक (भौम.बुध.गुरु. शुक्र शनि.) मध्यम ग्रहका और स्पष्टग्रहका योग करके अर्ध (आधे) करना और अपने अपने चलोच्च (शीघ्रोच्च) मेंसे हीन करना (सोधना) सो भौमादि पंचताराग्रहोंका चेष्टाके-

१ सोमदैवज्ञः ॥ मध्यमार्कसहितं चलकेंद्रं स्याद्बुधस्य च सितस्य चलोच्चम्।मेदिनीतनयजीवशनीनां मध्यमार्क उदितं तु चलोच्चम् ॥ १ ॥ बुध शुक्रके मध्यम शघ्रिकेंद्रमें मध्यम सूर्यको मिलानेसे बुध शुक्रका शीघ्रोच्च होता है और मंगल गुरु शनीका मध्यम सूर्य शीघ्रोच्च होता है ।

न्द्र होवे. वह चेष्टाकेन्द्र ६ छराशीसे अधिक होवे तो १२ बारा राशीमेंसे शोधना (निकालना) शेष बचे उसकी राशीमें एक मिलाना और अंशादिकको द्विगुण करना चेष्टारश्मीहोवै ॥ ३० ॥

अथ ग्रहाणामुच्चनीचराशीनाह ।

सूर्यात्स्युरुच्चाः क्रिय १ गो २ मृग १० स्त्री ६ कर्क ४ ऽन्त्य १२ जूका ७
दशभि १० र्हुताशैः ३ ॥ गजाश्वि २८ भिर्बाणकुभिः १५ शरै ५
र्भैर २७ र्नखै २० र्लवैरस्तगतास्तु नीचाः ॥ ३१ ॥

भाषाटीका—अब ग्रहोंकी उच्चनीच राशियें कहते हैं । मेष—राशीके १० अंशपर्यन्त(सूर्य)वृषभ १ राशीके ३ अंशपर्यन्त(चंद्र) मकर ९ राशीके २८ अंशपर्यन्त (भौम) कन्याराशीके १५ अंशपर्यन्त (बुध) कर्क ३ राशीके ५ अंशपर्यन्त (गुरु) मीन ११ राशिके २७ अंशपर्यन्त (शुक्र) तुला ६ राशिके २० अंश पर्यन्त (शनि) सूर्यको आदिले ग्रह क्रमसे उच्चराशियोंके होते हैं और अपनी उच्चराशीसे सातमी राशीमें गये हुवे नीचके होतेहैं ॥ ३१ ॥

उच्चनीचराशिचक्रम्.

र	चं	मं	बु	गु	शु	श		
०	१	९	५	३	११	६		उच्चराशि
१०	३	२८	१५	५	२७	२०		परमोच्चअंश.
६	७	३	११	९	५	०		नीचराशि.
१०	३	२८	१५	५	२७	२०		परमनीचअंश.

अथ उच्चरश्मिसाधनमाह ।

ग्रहनीचांतरङ्कार्यं षड्भादूनं यथातथा ॥
द्विघ्नांशादिः सरूपंभमुच्चरश्मिरयं स्मृतः ॥ ३२ ॥

भाषाटीका—अब उच्च रश्मि करनेकी रीति कहते हैं जैसे छह राशीसे अल्पशेष रहते होवे तैसे ही ग्रह और नीचके अंतर करना (ग्रहमेंसे नीच हीनकरनेसे ६ से अल्परहे तो ग्रहमेंसे नीच हीन करना और यदि नीचमेंसे ग्रह हीन करनेसे ६ राशि-से अल्पशेष रहते होवें तो नीचमेंसे ग्रहको हीन करना) शेष बचे राश्यादिककी राशिके अंकमें १ एक मिलाना अंशादिकको द्विगुण करना उच्चरश्मि होवे ॥ ३२ ॥

अथ स्पष्टरश्मिसाधनमाह।

चेष्टोच्चरश्मियोगार्द्धं स्फुटरश्मिः प्रकीर्त्यते॥
नखोनैक्ये दरिद्रीस्याद्विंशोर्ध्वेसम्पदान्वितः॥ ३३॥

भाषाटीका—अब स्पष्टरश्मिसाधन कहतेहैं। चेष्टारश्मि और उच्चरश्मि कायोग करके अर्ध (आधा) करना आवे वह स्पष्टरश्मि कहातीहै. उसस्पष्टरश्मिका ऐक्य २० वीससे अल्प आवे तो दरिद्री होवे और २० वीससे अधिक आवे तो सम्पदावान् होवे॥ ३३॥

इति रश्मिसाधनम्।

उदाहरण।

सूर्य स्पष्ट १०। १६। ५३। ३९ में अयनांश २२। २९। ० युक्तकरनेसे ११। ९। २२। ३९ सायन सूर्य हुवा इसकी राशिमें ३ तीन युक्त किये २। ९। २२। ३९ ये सूर्यका चेष्टाकेन्द्र हुवा एवं चंद्र स्पष्ट ५। २९। १९। ४९ मेंसे स्पष्ट सूर्य १०। १६। ५३। ३९ हीन किया ७। १२। २६। १० ये चन्द्रका चेष्टाकेंद्र हुवा. भौममध्यम ११। १२। ३९। ४८ भौमस्पष्ट ११। ६। १४। ५४ का योग २२। १८। ५४। ४२ हुवा इसको अर्धकिया ११। ९। २७। २१ हुवा इसको भौमके चलोच्च (मध्यमसूर्य) १०। १५। ३। २१ मेंसे हीन किया शेष ११। ५। ३६। ० भौमका चेष्टाकेंद्र हुवा एवं बुधके मध्यमस्पष्टके योगके अर्ध १०। १२। ५३। ४९ को बुधके चलोच्च (बुधशीघ्रकेंद्र ११। २३। ३१। ९ में मध्यम सूर्य १०। १५। ३। २१ को मिलाया १०। ८। ३४। ३० ये बुधका शीघ्रोच्च हुवा) १०। ८। ३४। ३० मेंसे हीनकिया ११। २५। ४०। ४१ बुधका चेष्टाकेंद्र हुवा—इसीप्रकार शेषग्रहोंका चेष्टाकेंद्र जानना सूर्यके चेष्टाकेंद्र २। ९। २२। ३९ में १ राशी युक्तकरके अंशादिकोंको द्विगुणकिये ३। १८। ४५। १८ सूर्यकी चेष्टारश्मि आई चंद्रका चेष्टाकेंद्र ७। १२। २६। १० छह राशीसे अधिक है अतएव १२ बरा राशीमेंसे शोधा शेष ४। १७। ३३। ५० हुवे इसीराशी ४ में १ मिलाया अंशादिकोंको द्विगुणकिये ५। ३५। ७। ४० चंद्रकी चेष्टारश्मि आई एवं भौमादिक ग्रहोंकी चेष्टारश्मि समझना॥ इति।

अथ चेष्टारश्मिचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
		११	१०	३	१०	८	मध्यम ग्रहाः
		१२	१५	२	१५	२३	
		३९	३	४०	३	४४	
		४८	२१	१	२१	५६	
		११	१०	३	९	८	स्पष्ट ग्रह.
		६	१०	०	१२	२४	
		१४	५४	४३	२६	४८	
		५४	१८	१	८	२३	
		२२	२०	६	१९	१७	मध्य स्पष्ट योग.
		१८	२५	३	२७	१८	
		५४	४७	२३	२९	३३	
		४२	३९	२	२९	९	
		११	१०	३	९	८	मध्य स्पष्ट योगार्ध.
		९	१२	५	२८	२४	
		२७	५३	४१	४४	१६	
		२१	४९	३१	४४	३४	
		१०	१०	१०	७	१०	चलोच्च.
		१५	८	१५	२१	१५	
		३	३४	३	६	३	
		२१	३०	२१	२	२१	
२	७	११	११	७	९	१	चेष्टा केन्द्र.
९	१२	५	२५	१३	२२	२०	
२२	२६	३६	४०	२१	२१	४६	
३९	१०	०	४१	५०	१८	४७	
३	५	१	१	५	३	२	चेष्टा रश्मि.
१८	३५	४८	८	३२	१५	४१	
४५	७	४८	३८	१६	१७	३३	
१८	४०	०	३८	२०	२४	३४	

उच्चरश्मिसाधन उदाहरण.

सूर्य १० । १६ । ५३ । ३९ सूर्यकी नीचराशी ६ । १० । ० । ० सूर्यमेंसे नीचको हीन करनेसे ६ छहराशीसे अल्पशेष बचता है इसवास्ते सूर्यमेंसे नीचको हीन किया ४ । ६ । ५३ । ३९ इसकी राशी ४ में एक मिलाया अंशादिकोंको दोगुणे किये ५ । १३ । ४७ । १८ सूर्यकी उच्चरश्मि हुई इसीप्रकार शेषग्रहोंकी उच्चरश्मि जानना ।

उच्चरश्मिचक्रम् ।							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ऐ.
५	२	५	२	६	४	४	
१३	७	४३	८	५१	३०	५०	
४७	२०	३०	३१	२६	५२	२३	
१८	२२	१२	२४	२	१६	१४	

स्पष्टरश्मि उदाहरण.

सूर्यकी चेष्टारश्मि ३ । १८ । ४५ ।
१८ सूर्यकी उच्चरश्मि ५ । १३ । ४७ ।
१८ का योग किया ८ । ३२ । ३२ ।
३६ हुवे इसको आधाकिया ४ । १६ ।
१६ । १८ आये ये सूर्यकी स्पष्टरश्मि आई इसीप्रकार शेषग्रहोंकी स्पष्टरश्मि जानना. स्पष्टरश्मिका योग २० से अधिकहै इसकारण संपदावान् होगा ऐसा फल समझना ॥ इति रश्मिसाधनम् ॥

अथ स्पष्टरश्मिचक्रम् ।							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ऐं.
४	३	३	१	६	३	३	२७
१६	५१	४६	३८	१२	५३	४५	२३
१९	१४	९	३५	२१	४	५८	३८
१८	१	६	१	११	५०	२४	५१

अथायुर्दायानयनमाह ।

कलिकृत्यग्रहं तत्र द्विशतार्तेर्कशेषकाः ॥
समाः शेषात्तु मासाद्याद्वादशादिहतैः क्रमात् ॥ ३४ ॥

भाषाटीका--अब आयुर्दाय आनयनकी रीति कहतेहैं।ग्रहकी कलो करके उसमें २०० दोसौका भागदेना लब्ध आवे उसके १२ बाराका भागदेना शेष बचे वह वर्ष जानना.तदनंतर कलाके दोसौका भाग देनेसे जो शेष बचेहैं उनको क्रमसे १२। ३० । ६० गुणाकरके२००दोसौंका भागदेनेसे लब्ध आवे वे मासादिक जानना अर्थात् शेषको प्रथम १२ बारागुणाकरना २०० का भाग देना लब्ध आवे वह मास जानना शेष बचे उनको ३० तीसगुणाकरना२०० का भागदेना लब्ध दिन आवे फेर शेष बचे उनको६० साठगुणाकरना२०० का भागदेना लब्ध घटी आवे शेषको फेर ६० साठगुणाकरना २०० का भागदेना लब्ध पल आवे ऐसे

१राशिको३०तीसगुणीकरके अंशमिलाना फेर उसको६०साठगुणाकरके कलामिलानेसे होतीहै।

क्रमसे आवे जो वर्षमासादिक वह ग्रहकी वर्ष मास दिन घटी पल विपलात्मक मध्यायु समझना ॥ ३४ ॥ इसप्रकार लग्नसहित सूर्यादिग्रहोंकी मध्यायुसाधन करके स्पष्टायुसाधनके संस्कार आगे कहते हैं ।

स्थिरारिभे हरेत्र्यंशं वक्रचारं विना ग्रहः ॥
शुक्रार्कजान्यस्त्वस्तस्य अर्द्धं नीचर्क्षगे दलम् ॥ ३५ ॥

भाषाटीका—वक्रगति ग्रहके विना जो ग्रह स्थिरमैत्रीमें (नैसर्ग मैत्रीमें) शत्रुराशिका होवे उस ग्रहकी आई हुई वर्षादि आयुमेंसे तृतीयांश (अपना तीसरा हिस्सा) हीन करना और शुक्र शनिके विना अन्य (दूसरा) ग्रह अस्तका होवे तो उसकी आयुको आधी करना नीच राशीका ग्रह होवे तो उसकी आई हुई आयुका दल (अर्ध) करना ॥ ३५ ॥

वक्रोच्चगे तत्रिगुणं द्विनिघ्नं वर्गोत्तमस्वांशकभत्रिभागे ॥
द्वित्रिघ्नतायां त्रिगुणं सकृद्धै द्वित्रीलवोने द्विलवोनमायुः ॥ ३६ ॥

भाषाटीका—वक्रगति ग्रह होवे वा उच्चराशीका होवे तो उस ग्रहकी वर्षादि आयुको त्रिगुण (३ तीनगुणी) करना और वर्गोत्तमी होवे वा स्वनवांशका होवे वा स्वराशीका होवे वा स्वद्रेष्काणका ग्रह होवे तो आईहुई वर्षादि आयुको द्विगुण (दोगुणी) करना और यदि जिस ग्रहकी वर्षादि आयुको द्विगुण करनेका और त्रिगुण करनेका दोनुं योग आवे तो उस ग्रहकी आयुको पृथक् पृथक् २ दोगुणी और ३ तीनगुणी नहीं करना केवल १ एकही बार त्रिगुण (तीनगुणी) करना एवं ग्रहकी वर्षादि आयुमेंसे द्वितीयांश और तृतीयांश दोनुं घटानेके योग आवे तो वर्षादिक आयुमेंसे केवल एकही बार द्वितीयांश (अपना अर्धभाग) हीन करना ॥ ३६ ॥

वामं व्ययात् सर्वदलत्रिपादं पंचाङ्गभागानशुभा हरन्ति ॥
संतोऽर्द्धमर्द्धं सबलम्बहूनामेकर्क्षगानामिति सत्यवाक्यम् ॥ ३७ ॥

भाषाटीका—लग्नसे बारमें १२ स्थानको आदि ले सप्तम स्थानपर्यन्त उलटे

१ आगे श्लोक २९ में कहा है—अथवा—जिस राशीका ग्रह होवे उसी राशीका नवांशमें आवे उसे वर्गोत्तमी जानना ।

(१२।११।१०।९।८।७) स्थानोंमें अशुभ (पाप)ग्रह स्थित होवें तो यथाक्रम आई हुई आयुर्दायमेंसे १२ सर्व (पूरी आयु) ११ आधी १० तृतीयांश ९ चतुर्थांश ८ पंचमांश ७ षष्ठांश हीन करना ॥ अर्थात् लग्नसे बारम स्थानमें जो अशुभ (पापग्रह स्थित होवे उसकी जो वर्षादिक आयु आई है वह सर्वहीन करना (उसग्रहकी आयु ०।० शून्य शून्य लिखना) और ११ एकादश स्थानमें जो पापग्रह स्थित होवे उसकी आयु जो वर्षादिक आई है उस्को आधी करना एवं दशम १० स्थानमें पापग्रह स्थित होवे उस ग्रहकी वर्षादि आयुमेंसे तृतीयांश (अपना तीसरा भाग) हीन करना और ९ नवम स्थानमें पापग्रह स्थित होवे उसकी वर्षादि आयुमेंसे चतुर्थांश (अपनी वर्षादि आयुक चारका भाग देके आवे वह) हीन करना एवं ८ अष्टम स्थानमें पाप ग्रह स्थित होवे उस ग्रहकी वर्षादि आयुमेंसे पंचमांश (अपनी वर्षादि आयुके पांचका भाग देनेसे आवे जो पांचमा हिस्सा वह) हीन करना—इसीप्रकार ७ सप्तम स्थानमें पापग्रह स्थित होवे उसकी आयुमेंसे षष्ठांश (अपना छठा हिस्सा) हीन करना और इन व्ययादि १२ । ११ । १० । ९ । ८ । ७ स्थानोंमें शुभ ग्रह स्थित होवे तो जो जो भाग अशुभ ग्रहकी आयुमेंसे हीन करनेका कहा है उसका आधा आधा भाग हीन करना अर्थात् (बारमें स्थानमें शुभ ग्रह स्थित होवे तो उसकी वर्षादि आयुको आधी करना और ११ ग्यारमें स्थानमें स्थित होवे उसकी वर्षादि आयुमेंसे चतुर्थांश (चौथा हिस्सा) हीन करना एवं १० दशम स्थानमें स्थित होवे उसकी आयुमेंसे षष्ठांश (छठा हिस्सा) हीन करना और ९ नवम स्थानमें स्थित होवे उस्की आयुमेंसे अष्टमांश (आठमा हिस्सा) हीन करना इसीप्रकार ८ अष्टम स्थानमें जो शुभ ग्रह स्थित होवे उस्की वर्षादि आयमेंसे दशम भाग (वर्षादि आयुके १० दशका भाग देके आवे जो दशांश वह) हीन करना—एवं सप्तम स्थानमें स्थित होवे उस्की वर्षादि आयुमेंसे द्वादशांश (अपना बारमां हिस्सा) हीन करना और इन्हीं व्ययादिक उक्तस्थानोंमें यदि एक राशीमें दो ग्रह स्थित होवें वा बहुत ग्रह स्थित होवें तो उनमेंसे जो ग्रह अधिक बलवान् होवे उसी एक ग्रहकी वर्षादि आयुमेंसे जिस स्थानमें स्थितका जो भाग

हीन करनेका पूर्व कहा है वह हीन करना. शेष ग्रहोंकी आयुमेंसे उस स्थानका भाग हीन नहीं करना ऐसा सत्याचार्यका वचन है ॥ ३७ ॥

लग्ने बलाढ्ये सहितं च वर्षैस्तुल्यैर्विलग्नस्य गृहैर्विधेयम् ॥
भागादिना भास्करसंगुणेन युक्तं दिनाद्यं भवति स्फुटं तत् ॥३८॥

भाषाटीका–लग्न बलवान होवे तो लग्नकी वर्षादि मध्यायुके वर्षके अंकमें लग्नकी राशीकी संख्याके समान (लग्न० राशीका होतो० शून्य९राशीका होतो ९ नव ऐसे जिस राशीका हो उतनेही) वर्ष युक्त करना और लग्नके अंशादिक (अंशकला विकला) को १२ बारागुणा करके उसी वर्षादि मध्यायुके दिनादिकमें युक्त करना सो लग्नकी स्पष्टायु होवे ॥ ३८ ॥

और लग्न बलवान् नहीं होवे तो जो मध्यायु आवे वही स्पष्टायु समझना ।

चरभवनेष्वाद्यंशाः स्थिरेषु मध्या द्विस्वभावेष्वन्त्याः वर्गोत्तमाः ३९

भाषाटीका–अब वर्गोत्तमराशी कहते हैं चर(१।४।७।१०)राशियोंमें आद्य (प्रथम ३।२०) नवांशके अंश स्थिर (२।५।८।११) राशियोंमें मध्य (पांचमां १६।४०) नवांशके अंश द्विस्वभाव (३।६।९।१२) राशियोंमें अंत्य (नवमां ३०।०) नवमांशके अंश वर्गोत्तमांश होते हैं अर्थात् चरराशीका ग्रह प्रथम नवांशमें होवे तो वर्गोत्तमी होता है एवं स्थिर राशीका ग्रह पांचमें नवांश १६।४० में होवे तो वर्गोत्तमांशमें होता है और द्विस्वभाव राशीका ग्रह अंत्य नवांशमें (२६।४० के उपरान्त ३०।० पर्यंत नवम नवांशमें) होवे वह वर्गोत्तमांशमें होताह ॥ ३९ ॥

स्वर्क्षकेंद्रोत्तमांशस्थाः स्वांशमित्रांशकान्विताः ॥
परिपूर्णबलैर्युक्ताः स्वोच्चमूलत्रिकोणगाः ॥ ४० ॥

भाषाटीका–अब ग्रहोंका बल कहते हैं। स्वराशीमें स्थित, केंद्र(१।४।७।१०) स्थानमें स्थित शुभग्रहोंके नवांशमें स्थित, स्वनवांशमें स्थित, मित्रनवांशयुक्त और अपनी उच्चराशी (श्लोक ३१ में कही है) में स्थित और मूलत्रिकोणराशीमें स्थित ग्रह परिपूर्ण बलवान् होता है ॥ ४० ॥

---

१ आगे श्लोक ४१ में कहा है।

२ सारावल्याम्–विंशतिरंशाः सिंहे त्रिकोणमपरे स्वभवनमर्कस्य ॥ उच्चं भागत्रितयं वृषइन्दोः स्यात्त्रिकोणमपरेंशाः ॥ १ ॥ द्वादशभागा मेषे त्रिकोणमपरे स्वभं तु भौमस्य ॥ उच्चमथो

स्वामीगुरुज्ञवीक्षितयुताहोरावलोत्कटा भवति ॥ ४१ ॥

भाषाटीका—अब लग्नका बल कहते हैं।लग्न अपने स्वीमीसे अथवा बुधगुरुसे युक्त होवे वा दृष्ट होवे तो बलवान् होता है॥ ४१ ॥लोमशोक्तसप्तवर्गबलसारणीचक्रसमाप्तिमें दिया है उससेभी ग्रहोंका सप्तवर्ग बल जानना ॥ इत्यायुर्दायः ॥

उदाहरण.

सूर्य १० । १६।५३ । ३९ । की कला १९०।१३ । ३९ में २०० दोसौंका भाग दिया लब्ध ९५ आये इनमें १२ बारेका भाग दिया शेष ११ रहे ये वर्ष हुये कलाके २०० का भाग देनेसे शेष १३ । ३९ बचे इनको १२ बारागुणे किये १६३ । ४८ हुवे इनमें २०० भाग दिया लब्ध ० शून्य मास आये शेष १६३ । ४८ को ३० तीसगुणे किये ४९१४ । ० फेर २०० का भाग दिया लब्ध २४ दिन आये शेष ११४ । ० बचे इनको ६० साठगुणे किये ५८४० । ० हुवे इन्में २०० का भाग दिया लब्ध ३४ घटी आई

कन्यायां बुधस्य तुङ्गांशकैः सदा चिंत्यम् ॥२॥ परतस्त्रिकोणजातं पञ्चभिरंशैः स्वराशिजं परतः॥ दशभिर्भागैर्जीवस्य त्रिकोणं धनुषि तत्परं स्वगृहम् ॥ ३ ॥ शुक्रस्य च तिथ्यंशास्त्रिकोणमपरं स्वभं तुलायां तु ॥ कुम्भे त्रिकोणं स्वगृहे रविजस्य रवेर्यथा सिंहे ॥ ४ ॥ इति--सूर्य सिंहराशीके २० वीस अंशपर्यंत मूलत्रिकोणका २० अंशके उपरांत शेष १० अंशमें स्वगृही होता है चन्द्र वृषभके तीन ३ अंशपर्यंत उच्चका ३ तीन अंशके नंतर शेष अंशमें मूलत्रिकोणका होता है, भौम मेपराशीके १२ अंशपर्यंत मूलत्रिकोणका १२ के नंतर शेष अंशमें स्वराशीका होता है, बुध कन्याराशीके १५ पंदरा अंशपर्यंत उच्चका १५ पंदरा अंशके नंतर ५ पांच अंशपर्यंत मूलत्रिकोणका ५ पांच अंशके नंतर शेष अंशमें (२० अंशके नंतर) स्वराशीका होता है गुरु धनराशिके १० अंशपर्यंत मूलत्रिकोणका १० दश अंशके नंतर शेष अंशमें स्वराशीका होता है,एवं शुक्र तुला राशिके १५ अंशपर्यंत मूलत्रिकोणका १५ पंदरा अंशके नंतर शेष अंशमें स्वराशीका होता है शनि कुंभराराशीके २० वीस अंशपर्यंत मूलत्रिकोणराशीका २० अंशके नंतर शेष १० अंशमें स्वराशीका जानना— इति ।

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	
मी ४	वृ १	मे ०	क. ५	ध. ८	तु ६	कुं १०	राशयः
मू २० स्व १०	उ ३ मू २७	मू. १२ स्व १८	उ. १५ मू. ५ स्व १०	मू १० स्व २०	मू १५ स्व १५	मू २० स्व १०	अंशाः

शेष ४०। ० बचे इनको फेर ६० साठगुणे किये २४००। ० हुवे इनमें २०० का भाग दिया लब्ध १२ पल आई ऐसे क्रमसे ११ । ० । २४ ।३४। १२ वर्षादि सूर्यकी मध्यायु आई इसीप्रकार शेष चन्द्रादि ग्रहोंकी और लग्नकी वर्षादि आयु जानना–अब इसमें श्लोक ३५ के अनुसार सूर्य स्थिरमैत्रीमें शत्रुकी राशीका है इसकारण सूर्यकी वर्षादि ११ । ० । २४ । ३४ । १२ आयु-

मध्यायुचक्रम् ।

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	ल	
११	५	१०	९	३	०	७	४	म-
०	९	१०	२	२	८	५	०	ध्या-
२४	१७	१४	१९	१	२३	९	५५	यु
३४	४०	५९	४४	२५	२	५	२७	
१२	१२	१२	२४	४८	२४	२४	०	
शत्रु रा. ३ भ.	०	०	अस्त-अर्ध	०	०	०	०	संस्कार श्लो ३५.
०	वर्गोत्त	०	स्वद्रे-ष्काण	वक्र उच्च वर्गोत्त	स्व-द्रे ष्काण	०	०	श्लो ३५.
	२ शु		२ शु	३ गु ३ शु २ शु	२ शु			
०	नवमे ४ चतु	०	०	सप्तम ६ षष्ठां श	०	वाम सर्वही	०	श्लो ३७
७	१०	१०	९	८	१	०	१३	स्प
४	१	१०	२	१०	५	०	९	ष्टा-
१६	२३	१४	१९	२	१६	०	२७	यु.
२२	२५	४९	४४	५५	४	०	१०	
४८	२१	१२	२४	५७	४८	०	०	

मेंसे अपना तृतीयांश (तीनका भाग देके ३) ८ ।८। ११ । २४ घटाया ७ ।४। १६ । २२ । ४८ सूर्यकी स्पष्टायु हुई चंद्रमा वर्गोत्तमी है इसकारण श्लोक ३६ के अनुसार इसकी आयु ५। ९ । १७ । ४० । १२ को द्विगुणकी ११ । ७ । ५ । २० ।२४ हुये इनमेंसे श्लोक ३७ के अनुसार चन्द्र ९नवम स्थानमें स्थित है इसलिये ४ चतुर्थांश हीन करना परन्तु ये शुभ ग्रह हैं इस कारण वर्षादि आयुके आठका भाग देके १ । ५ । ११ । ५५ । ३ आये हुवे अष्टमांशको हीन किया १० । १ । २३ । २५ । २१ ये वर्षादि चंद्रकी स्पष्टायु आई भौमके श्लोक ३५ । ३६ । ३७ के अनुसार कोई संस्कारका योग नहीं है इसकारण जो मध्यायु१०।१०। १४।४९।१२ है यही स्पष्टायु जानना-- बुध अस्तका है इसलिये बुधकी आयु ९ । २ । १९ । ४४ । २४ । को आधी करके श्लोक ३६ के अनुसार ये स्वद्रेष्काणका है इसवास्ते दोनुणीकी वि ९ । २ । १९ । ४४ । २४ ये बुधकी स्पष्टायु आई–

एवं गुरु वक्रगती है इसकी आयुको श्लोक ३६ के अनुसार ३ तीनगुणी करनेका और उच्चराशीका है इस कारण फेर ३ तीनगुणी करनेका और यही गुरु वर्गोत्तमांशका है इसलिये फेर२गुणी करनेका योग३तीन प्राप्त हुये हैं अतएव "द्वित्रिघ्नतायां त्रिगुण सकृद्" इसके अनुसार गुरुकी वर्षादि आयु३।२।१७।२५। ४८को एकही बार३ तीनगुणीकी ९ ।७।२२।१७।२४ हुई परंतु गुरु शुभग्रह है और ७ सप्तम स्थानमें स्थितहै इसकारण इसमेंस अपना बारमा हिस्सा ०।९ ।११।२१।२७ हीन किया ८।१०।२।५५।५७ ये गुरुकी स्पष्टायु हुई और शुक्र स्वद्रेष्काणका है इसलिये शुक्रकी आयु० ।८। २३।२।२४ को श्लोक ३६ के अनुसार द्विगुण करनसे १।५। १६ । ४८ आये ये शुक्रकी स्पष्टायु हुईएवं शनि बारमें स्थानमें स्थित है और यह अशुभ ग्रह है इसलिये इसकी आयु ५।९।५।२४ मेंसे सर्व (पूरि) आयु हीनकी शेष ०।०।०।०।० यह शनिकी स्पष्टायु हुई--वा लग्न बलवान् है इसलिये लग्नकी वर्षादि आयु ४।०। १५।२७। ० के वर्षके४अंकमें लग्नकी राशीकेसमान वर्ष ९ युक्त किये १३ वर्ष हुवे. शेषमासादिक ०।१५ ।२७।० में लग्नके अंशादिक २३।२८। ३५ को बारागुणा करके आये हुये मासादि ९।११।४३।० युक्त किये १३।९।२७।१० ।० ये वर्षादिक लग्नकी स्पष्टायु हुई ॥ इत्यायुर्दायः ॥ स्पष्टायुयोग ६१।९।०।३२।३०

अथ स्पष्टांशायुचक्रम् ।

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	ए.
७	१०	१०	९	८	१	०	१३	६१
४	१	१०	२	१०	५	०	९	९
१६	२३	१४	१९	२	१६	०	२७	०
२२	२५	४९	४४	५५	४	०	१०	३२
५८	२१	१२	२४	५७	४८	०	०	३०

दशासाधनमाह.

तत्रादौ विंशोत्तरी दशा ।

रवेः६ षडिन्दोर्दश १० सप्त ७ भूभुवो
गजेंद्वो १८ गोर्धिषणस्य षोडश १६

शनेर्नवाङ्गा १९ नगभूमिता १७ विदो
नगा ७ स्तुकेतोरनलान्नखाः २० कवेः ॥ ४२ ॥

भाषाटीका–अब दशासधन कहते हैं । जिसमें प्रथम विंशोत्तरी कहते हैं कृत्तिका नक्षत्रको आदिले क्रमसे प्रथम सूर्यकी ६ छह वर्षकी दशा फेर चंद्रकी १० वर्षकी मंगलकी ७ वर्षकी राहुकी १८ वर्षकी गुरुकी १६ वर्षकी शनिकी १९ वर्षकी बुधकी १७ वर्षकी केतुकी ७ वर्षकी शुक्रकी २० वर्षकी दशा जानना ॥ ४२ ॥

विंशोत्तरीदशाचक्रम् ।								
सू [illegible]	चं १०	मं. ७	रा. १८	गु. १६	श. १९	बु. १७	के ७	शु. २०
कृ उत्तर उ	रो ह श्र	मृ चि ध	आ स्वा श	पुन वि पू	पुष्य अ उ	आ ज्ये रे	म मू. अ	पू पू भ.

अष्टोत्तरीदशा ।

रवेः ६ षडिन्दोस्तिथयो १५ ऽष्ट ८ भूभुवो
नगेन्दवो १७ ज्ञस्य शनेर्दिशो १० गुरोः ॥
नवेंदवो १९ गोरवयः १२ समा सिते
धराश्विनो २१ वेदहुताशभे शिवात् ॥ ४३ ॥

भाषाटीका–अष्टोत्तरीदशाके वर्षादि मान कहते हैं । आर्द्रानक्षत्रको आदिले क्रमसे प्रथम चार नक्षत्र (आ०पु०पु०अ०) की सूर्यकी६ वर्षकी दशा फेर तीन नक्षत्र (म. पू. उ.) की चंद्रकी १५ वर्षकी फेर चार नक्षत्र (ह. चि. स्वा वि.) की भौमकी ८ वर्षकी फेर तीन नक्षत्र (अ. ज्ये. मू.) की बुधकी १७ वर्षकी फेर चार नक्षत्र (पू. उ. ऽभि. श्र.) की शनिकी १० वर्षकी फेर तीन नक्षत्र (ध. श. पू.) की गुरुकी १९ वर्षकी तदनंतर चार नक्षत्र (उ. रे. अ. भ.) की राहुकी १२ वर्षकी तदनंतर तीन नक्षत्र (कृ. रो. मृ.) की शुक्रकी २१ वर्षकी अष्टोत्तरी दशा जानना ॥ ४३ ॥

अष्टोत्तरीदशा.							
र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१
आ. पु. पु. आ.	म. पू. उ.	ह. चि. स्वा. वि.	अ. ज्ये. मू.	पू. उ. ऽभि. श्र.	ध. श. पू.	उ. रे. अ. भ.	कृ. रो. मृ.

अथ योगिनी दशा ।

जनुर्भे त्रियुक्तेऽष्टतष्टे दशा मंगला पिंगला धान्यका भ्रामरी च ॥
ततो भद्रिकोल्का च सिद्धा क्रमात्संकटास्तन्निषिद्धाःसमैकैकवृद्धाः॥४४॥

भाषाटीका--अब योगिनी दशा कहते हैं।जन्म नक्षत्रकी संख्यामें तीन मिलाना आठका भाग देना एकको आदि ले शेष बचे तो क्रमसे १ मंगला २ पिंगला ३ धान्या ४ भ्रामरी ५ भद्रिका ६ उल्का ७ सिद्धा ८ संकटा दशा एक एक वर्ष बढती हुई एक श्रेष्ठ एक नेष्ट इस क्रमसे जानना ॥ अर्थात् मंगला एक १ वर्षकी श्रेष्ठ, पिंगला २ वर्षकी नेष्ट,धान्या ३ वर्षकी श्रेष्ठ,भ्रामरी ४ वर्षकी नेष्ट, भद्रिका ५ वर्षकी श्रेष्ठ, उल्का ६ वर्षकी नेष्ट, सिद्धा ७ वर्षकी श्रेष्ठ, संकटा ८ वर्षकी नेष्ट जानना ॥ ४४ ॥

योगिनीदशा.								
मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	
चं.	र.	गु.	मं.	बु.	श.	शु.	रा.	
१	२	३	४	५	६	७	८	
आ. चि. श्र.	पु. स्वा. ध.	पु. वि. श.	अ. ऽनु. पू.भा.	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पू. मू. रे.	रो. उ. पू.षा.	मृ. ह. उ.षा.	

शुक्लेऽर्कस्य होरायां दिवा विंशोत्तरी दशा ॥
कृष्णे चन्द्रस्य होरायां रात्रावष्टोत्तरी मता ॥ ४५ ॥

अन्यथा योगिनी कार्या सदा कार्या महादशा ॥

भाषाटीका–अब दशाके योग कहते हैं। शुक्लपक्षका जन्म होवे और लग्नमें सूर्यकी होरा होवे तो विंशोत्तरी दशा करना एवं कृष्णपक्षमें जन्म होवे और लग्नमें चंद्रकी होवे रात्रिसमयमें जन्म हुवा होवे तो अष्टोत्तरी दशा करना ॥ ४५ ॥ इन दोनों योगोंका संभव नहीं होवे तो योगिनी दशा करना और महादशा सदा (सर्वदा) करना ॥

अथ दशाभुक्तभोग्यानयनमाह।

चन्द्रस्य लिप्ता खाभ्रेभै ८०० र्लब्धाः स्युर्गततारकाः ॥ ४६ ॥
शेषा हताः स्वपाकाब्दैर्हारेणाप्ताः समादिकाः ॥
गता दशा सा पाकाब्दे ऊनिता भोग्यसंज्ञिता ॥ ४७ ॥

भाषाटीका–अब दशाके भुक्त भोग्य लानेकी रीति कहते हैं। चंद्रमाकी कला करना आठसौका ८०० भाग देना लब्ध आवे वह गत नक्षत्र जानना शेष रहे कला उसको अपनी दशाके वर्षसे (विंशोत्तरीके भुक्त भोग्य करना होवे तो श्लोक ४२ के अनुसार कृत्तिकाको आदिले गिननेसे जन्मनक्षत्र जिस ग्रहकी दशामें आया होवे उस दशामें जन्म हुवा ऐसा जानना. जिस ग्रहकी दशामें जन्म हुवा उसके दशाके वर्ष जितने होवें उतने वर्षसे और योगिनीके भुक्त भोग्य करना होवें तो श्लोक ४४ के अनुसार जिस दशामें जन्म हुवा होवे उसके वर्षसे अष्टोत्तरी करना होवे तो श्लोक ४३ के अनुसार जिस ग्रहकी दशामें जन्म होवे उसकी जितने वर्षकी दशा होवे उतने वर्षसे) गुणी करना हारका ८०० भाग देना लब्ध आवे वह वर्ष जानना शेष बचे उनको १२ बारागुणे करना और ८०० आठसौका भाग देना लब्ध मास आवे शेषको ३० तीसगुणे करना ८०० आठसौका भाग देना लब्ध दिन आवे शेष बचे उनको ६० साठगुणे करना फेर ८०० आठसौका भाग देना लब्ध आवे वह घटी जानना शेष बचे उसको फेर ६० साठ गुणा करना ८००का भाग देना लब्ध आवे वह पल जानना ऐसे आवे जो वर्षादिक वह गतदशा (भुक्तदशा) होवे उस भुक्तदशाको दशाके वर्षमेंसे हीन करना (सोधना) शेष बचे वह भोग्य दशा समझना ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

१ विंशोत्तरी और योगिनीसे कुछ भिन्न रीति है इसकारण अष्टोत्तरीके भुक्त भाग्य लानेकी रीति अलग आगे लिखी है ।

विंशोत्तरी दशाका उदाहरण ।

स्पष्ट चन्द्रमा ५ । २९ । १९ । ४९ इसकी कला १०७५९ । ४९ इसके ८०० आठसौका भागदिया लब्ध १३ आये ये गतनक्षत्र हस्त हुआ शेष कला ३५९ । ४९ बची इसको श्लोक ४२ के अनुसार कृत्तिकाको आदि ले गिनने-से जन्मनक्षत्र चित्रा भौमकी दशामें आया इसलिये भौमके दशाके वर्ष ७ सातसे गुणे किये २५१८ । ४३ हुवे इनमें ८०० आठसौका भागदिया लब्ध ३ वर्ष आये शेष ११८ । ४३ बचे इनको १२ बारागुणे किये १४२४ । ३६ हुवे इनमें ८०० आठसौका भागदिया लब्ध एक मास आया शेष ६२४ । ३६ को ३० तीसगुणे किये १८७३८ । ० हुवे ८०० आठसौका भागदिया लब्ध २३ दिन आये शेष ३३८ । ० बचे इनको ६० साठगुणे किये २०२८० । ० हुवे इनमें ८०० आठसौका भागदिया लब्ध २५ घटी आई शेष २८० । ० को ६० साठगुणे किये १६८०० । ० हुवे फेर इनमें ८०० आठसौका भागदिया लब्ध २१ पल आई शेष० शून्य बची—इसप्रकार वर्षादि ३।१।२३।२५।२१ भौमकी भुक्त दशा आई इसको दशाके वर्ष ७ मेंसे घटाई शेष ३।१०।६।३४ ३९ बची यह भौमकी भोग्य दशा हुई ।

विंशोत्तरीदशायन्त्रम्.

भौ.भु.	भौ.भो.	रा.	गु.	श.	बु		योग
७	७	१८	१६	१९	१७		१२०
३ १ २३ २५ २१	३ १० ६ ३४ ३९	२१ १० ६ ४ ३९	३७ १० ६ ३४ ३९	५६ १० ६ ३४ ३९			वर्षाग- तवर्षादि
१९०८	१९ २	१९५०	१९ ६	९८५			संवत्
[illegible]	[illegible]	१८१५	१८३१	१८५०			शक.
१० १६ २३ ३९	८ २३ २८ १८	८ २३ २८ १८	८ २३ २८ १८	८ २३ २८ १८			उत्तीर्णांकं.

योगिनी दशाका उदाहरण ।

जन्मनक्षत्रकी संख्या १४ में ३ तीन मिलाये १७ हुये आठका भाग दिये

शेष १ बचा इसलिये १ पहली मंगला दशा वर्ष १ कीमें जन्म हुवा इसके वर्ष १ एकसे चंद्रमाकी कला १०७५९ । ४९ के आठसौका भाग देनेसे शेष बचे ३५९ । ४९ इनको गुणे किये ३५९ । ४९ हुये इनमें८०० आठसौका भाग दिया लब्ध ० शून्य वर्ष आया शेष ३५९ । ४९ को क्रमसे १२ । ३० । ६० ।६०। गुणेकर्के८००का भाग देके विंशोत्तरीवत् मासादिक लाये ये योगिनी मंगलाकी भुक्त दशा हुई ० । ५ । ११ । ५५ । ३ इसको मंगलाके वर्ष १ मेंसे हीन किया शेष ० । ६ । १८ । ४ । ५७ ये भोग्य दशा आई।

योगिनीदशाचक्रम्.

मं.भ.	पं.भो.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	
चं	चं.	र	गु.	मं.	बु.	श.	शु.	रा.	
१	१	२	३	४	५	६	७	८	
० ५ ११ ५३ ३	० ६ १८ ४ ५७	२ ६ १८ ४ ५७	५ ६ १८ ४ ५७	९ ६ १८ ४ ५७	१४ ६ १८ ४ ५७	२० ६ १८ ४ ५७	२७ ६ १८ ४ ५७	३५ ६ १८ ४ ५७	वयो· गत॰ वर्षा.
१९२८	१९२९	१९३१	१९३४	१९३८	१९४३	१९४९	१९५६	१९६४	संवत्
१७९३	१७९४	१७९६	१७९९	१८०३	१८०८	१८१४	१८२१	१८२९	शक.
१० १६ ५३ ३९	५ ४ ५८ ३६	५ ४ ५८ ३६	५ ४ ५८ ३६	५ ४ ५८ ३६	५ ४ ५८ ३६	५ ४ ५८ ३६	५ ४ ५८ ३६	५ ४ ५८ ३६	उत्ती- र्णाक.
	श्रे.	ने.	श्रे.	ने.	श्रे.	ने.	श्रे.	ने.	फलम्

अष्टोत्तरीदशा बनानेकी रीति कहते हैं।

प्रथम चंद्रमाकी कला करना उसमें ८०० आठसौका भाग देना, लब्ध आवे वह गत नक्षत्र जानना शेष कला बचे उसको श्लो॰ ४३ के अनुसार जिस ग्रहकी दशामें जन्म हुवा होवे उस ग्रहके दशाके वर्षोंसे गुणनकरके आठसौ ८०० का भाग देके विंशोत्तरी दशावत् वर्षादि भुक्त दशा लाना तदनंतर उस भुक्त दशामें जितने नक्षत्रकी दशा हो उतनेका (चार नक्षत्रकी हो तो ४ चारका तीन ३ की होतो ३ तीनका) भाग देके वर्षादिक ५ फल लाना

आवे वह एक नक्षत्रकी भुक्तदशा समझना फेर जितने नक्षत्रकी दशा होवे उसमेंसे जितनी संख्याके नक्षत्र गत होवे उतनी संख्यासे (१एक गत होतो १से२दो होतो२ दोसे ३ हो तो ३तीनसे) जितने वर्षकी दशा होवे उन वर्षोंको गुणे करना और उसमें चार नक्षत्रकी दशा हो तो ४ का तीनकी होतो ३ तीनका भाग देना आवे जो वर्ष मास वह उपर आई हुई एक नक्षत्रकी भुक्तदशाके वर्षमासमें मिलाना सो स्पष्ट भुक्त दशा होवे उस भुक्तदशाको दशाके वर्षमेंसे हीन करना भोग्य दशा होवे परंतु चंद्रमाकी कला १५२०० पंदरा हजार दोसौसे अधिक होवे तो चंद्रमाकी कलामेंसे १५२००पंदरा हजार दोसौ घटा देना शेष कला बचे

शनिदशानक्षत्रध्रुवखंडाचक्र.				
पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्रव.	नक्षत्र.
८०० ०	६०० ०	२५३ २०	७४६ ४०	ध्रुवखंडांका:
२ व. ६ मा.	२ व. ६ मा.	२ व. ६ मा.	२ व. ६ मा.	दशा. मा.

उसमेंसे क्रमसे नीचे लिखे हुवे कोष्टकमें जो नक्षत्रोंके ध्रुवके खंड हैं वे शोधना (हीन करना) जितने खंड निकले उतने निकाला जो खंड नहीं निकले वह अशुद्ध खंड समझना शेष बचे कला उसको ३० तीसगुणी करना और अशुद्ध खण्डका भाग देके मास दिन घटा पलात्मक चार फल लाना यदि मास १२बारासे अधिक होवे तो मासमें १२ बारका भाग देना लब्ध आवे वह वर्ष शेष मासादि समझना ऐसे आये हुवे वर्षादिकमें जितनी संख्याके खंड निकले होवें उतनीही प्रत्येक संख्याके २ दो वर्ष ६ मास मिलाना (अर्थात् एक खंड निकला होतो २ वर्ष ६ मास दो खंड निकले हो तो ५ वर्ष तीन खंड निकले हो तो ७वर्ष ६ मास.) आवे वह शनिकी भुक्त दशा समझना उसको अपने दशाके वर्ष १० मेंसे घटानेसे भोग्य दशा होवेगा. यह रीति केवल चंद्रमाकी कला १५२०० पंदरा हजार दोसौसे १७६०० सतरा हजार छः सौ पर्यंत होवे वहांतकही करना शेषमें नहीं करना अष्टोत्तरीदशाके भुक्त भोग्य होवे इति ।

अष्टोत्तरीदशा उदाहरण-

स्पष्टचंद्रमा ५ । २९ । १९ । ४९ इसकी कला १०७५९ । ४९ हुई इसमें ८००आठसौका भाग दिया लब्ध १३ गत नक्षत्र आया शेष ३५९ । ४९ बचे इनको श्लोक ४ ३के अनुसार हस्तको आदि ले चार नक्षत्रकी भौमकी दशामें जन्मनक्षत्र चित्रा मिलता है इसलिये भौमकी दशाके वर्ष ८ आठसे गुणेकिये २८।७८

३२हुवे इनमें ८००आठसौका भाग देके विंशोत्तरीवद्भावत् वर्षादि ३ । ७ । ५ । २५।२४लाये इनमें भौमदशा४ चार नक्षत्रकी है इसलिये चारका भाग दिया लब्ध वर्षादि ०।१०।२३।५१।२१ आये ये एक नक्षत्रकी भुक्त दशा हुई तदनन्तर यह चार नक्षत्रकी दशाहै इसमेंसे १ एक हस्त नक्षत्र गत है इसकारण १ एकसे दशाके वर्ष ८ को गुणे किये ८ हुवे इनमें ४ चारका भाग दिया लब्ध २ वर्ष आये ये एक नक्षत्रकी ऊपर आई हुई भुक्त दशा०।१०।२३।५१।२१ के वर्ष ० में युक्त किये सो वर्षादिक २।१०।२३।५१।२१ भौमकी स्पष्ट भुक्त दशा हुई इसको भौमके दशाके वर्ष ८ मेंसे घटाये शेष ५ । १ । ६ । ८ । ३९ भोग्यदशा हुई।

शनिंकी दशाका कल्पित उदाहरण.

शनिकी अष्टोत्तरीदशसाधन अभिजिन्नक्षत्रहोनेके कारण भिन्नरीतिसे किया जाता है उसके बनानेकी युक्ति प्रथम कहीही है परंतु बालकोंके सुबोधार्थ उसक एक कल्पित उदाहरण कहते हैं. स्पष्टचंद्र ९। १६ । ४० । ० इनकी कला-१७०२००।० सतराहजार दोसौ है यह कला पंदराहजार दोसौ१५२००।० सें अधिक है इसकारण चंद्रकी कला१७२००मेंसे१५२००।०पंदराहाजार दोसौ घटादिये शेष२०००।०कला चवीइसमेंसे पूर्वाषाढाके ध्रुवके खंडके अंक८००।० आठसौ घटाये शेष १२००।० बचे इसमेंसे फेर उत्तराषाढाके खंडके अंक ६०० छसौ घटाये शेष६००।० बचे इसमेंसे फेर अभिजित्के खंडके अंक२५३।२० घटाये ३४६ । ४० शेष बचे इसमेंसे ४चतुर्थ खंड श्रवणके अंक७४६ । ४० नहीं निकलते हैं, इसलिये ये अशुद्धखंड हुवा शेष कला३४६।४०कों३० तीस-गुणा करनेसे १०४००। ० हुवे इनमें अशुद्धखंड ७४६।४० का भाग देके मासादि चार फल लानाहै परंतु ये दोनुं भाज्य भाजक कलादिक हैं इसलिये सवर्णित किये भाज्य ६२४००० भाजक ४४८०० सवर्णित हुवे भाज्य ६२४००० में भाजक ४४८०० का भाग देके मास दिन घटी पलात्मक चार फल लाये १३ । २७ । ५१ । २५ आये- मास १३ बारासे अधिक हैं इसकारण १३ में १२ बाराका भाग दिया लब्ध १ वर्ष शेष १ मास हुवा ऐसे वर्षादिक १ । १ । २७ । ५१ । २५ आये इनमें पूर्वषाढा उत्तराषाढा

दशाके मान १२० का भाग देनेसे १।०।०।०।० वर्षादिक सूर्यमहादशामें शुक्रकी अंतर्दशा आई इसीप्रकार विंशोत्तरीमें चंद्रादि शेष ग्रहोंकी तथा अष्टोत्तरीयोगिनी आदि दशामें अंतर्दशा जानना इति ॥

(अथ विंशोत्तरीमध्ये अंतर्दशाचक्राणि)

सूर्यमध्येंतर्दशा.									चंद्रमध्येंतर्दशा.								
र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र
०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	१	१	१	१	०	१	०
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौममध्येंतर्दशा.									राहुमध्येंतर्दशा.								
मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	च	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं
०	१	०	१	०	०	१	०	०	२	२	२	२	१	३	०	१	१
४	०	११	१	११	४	२	४	७	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०	[illegible]	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्येंतर्दशा.									शनिमध्येंतर्दशा.								
गु	श	बु	के	शु	र	च	मं	रा	श	बु	के	शु	र	च	मं	रा	गु
२	२	२	०	२	०	१	०	२	३	२	१	३	०	१	१	२	२
१	६	३	११	८	९	४	११	४	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधमध्येंतर्दशा.									केतुमध्येंतर्दशा.								
बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु
२	०	२	०	१	०	२	२	२	०	१	०	०	०	१	०	१	०
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	४	२	४	७	४	०	११	१	११
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्येन्तर्दशा.								
शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के
३	१	१	१	३	२	३	२	१
४	०	८	२	०	८	२	१०	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

(अष्टोत्तरीमहादशामध्यैंतर्दशाचक्राणि)

सूर्यमध्यैंतर्दशा.								चंद्रमध्यैंतर्दशा.								
र	चं	मं	बु	श	गु	रा	शु	चं	मं	बु	श	गु	रा	शु	र	
०	०	०	०	०	१	०	१	२	१	२	१	२	१	२	०	व.
४	१०	५	११	६	०	८	२	१	१	४	४	७	८	११	१०	मा.
०	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

भौममध्यैंतर्दशा.								बुधमध्यैंतर्दशा.								
मं	बु	श	गु	रा	शु	र	चं	बु	श	गु	रा	शु	र	च	मं	
०	१	०	१	०	१	०	१	२	१	२	१	३	०	२	१	व.
७	३	८	४	१०	६	५	१	८	६	११	१०	३	११	४	३	मा.
३	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३	दि
२०	२०	४०	४०	०	०	०	०	२०	४०	४०	०	०	०	०	२०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शनिमध्यैंतर्दशा.								गुरुमध्यैंतर्दशा.								
श	गु	रा	शु	र	चं	मं	बु	गु	रा	शु	र	च	मं	बु	श	
०	१	१	१	०	१	०	१	३	२	३	१	२	१	२	१	व.
११	९	१	११	६	४	८	६	४	१	८	०	७	४	११	९	मा.
३	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३	दि.
२०	२०	०	०	०	०	४०	४०	२०	०	०	०	०	४०	४०	२०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

राहुमध्यैंतर्दशा								शुक्रमध्यैंतर्दशा.								
रा	शु	र	च	मं	बु	श	गु	शु	र	चं	मं	बु	श	गु	रा	
१	२	०	१	०	१	१	२	४	१	२	१	३	१	३	२	व.
४	४	८	८	१०	१०	१	१	१	२	११	६	३	११	८	४	मा.
०	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

योगिनी महादशामध्यैंतर्दशाचक्राणि.

मंगळामध्यैंतर्दशा.								पिंगलामध्यैंतर्दशा.								
मं	पिं	धा	भ्रा	भ	उ	सि	सं	पि	धा	भ्रा	भ	उ	सि	स	मं	
०	०	१	१	१	२	२	२	१	२	२	३	४	४	५	०	मा.
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

धान्यामध्यैंतर्दशा.								भ्रामरीमध्यैंतर्दशा.								
धा	भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं	पिं	भ्रा	भ	उ	सि	सं	म	पिं	धा	
३	४	५	६	७	८	१	२	५	६	८	९	१०	१	२	४	मा.
०	०	०	०	०	०	०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

और अभिजित इन तीन नक्षत्रोंके ध्रुवखंडे कलामेंसे सूर्यहै इसलिये ७सातवर्ष ६ छः मास मिलाये सोवर्षादि ८।७।२७।५१। २५ शनिकी भुक्तदशा आई– इसको दशाके वर्ष १० मेंसे हीन की शेष १।४।२।८।३५ वर्षादि भोग्य दशा हुई–इति अष्टोत्तरी दशा उदाहरणम्।

अष्टोत्तरीदशाचक्रम.

मं.भु.	मं.मे.	बु.	श.	गु.	रा.		
८	८	१७	१०	१९	१२		
२	५	३२	३२	५१	६३		
१०	१	१	१	१	१		वर्षांग.
२३	६	६	६	६	६		
५१	८	८	८	८	८		तद्वर्षादि
२१	३९	३९	३९	३९	३९		
१९२८	१९३३	१९५०	१९६०	१९७९	१९९१		संवत्
१७९३	१७९८	१८१५	१८२५	१८४४	१८५६		शक.
१०	११	११	११	११	११		
१६	२३	२३	२३	२३	२३		उत्तीर्णांकं.
५३	२	२	२	२	२		
३९	१८	१८	१८	१८	१८		

अथांतर्दशासाधनमाह।

दशा दशाहता कार्या स्वस्वमानेन भाजिता॥
लब्धमंतर्दशा ज्ञेया वर्षाद्याः क्रमशो बुधैः॥ ४८॥

भाषाटीका–अब अंतर्दशा बनानेकी युक्ति कहते हैं, दशाके वर्षको दशाके वर्षसे गुणन करना और अपनी अपनी दशाके मानका भागदेना लब्ध वर्षमासादिक आवे वह क्रमसे अपनी अपनी दशामें पंडित लोगोंने अंतर्दशा जानना अर्थात्. विंशोत्तरी महादशामें जिसग्रहमें अंतर्दशाचक्र बनाना होवे उसग्रहके दशाके वर्षको विंशोत्तरीके ९ नवही ग्रहोंके दशाके वर्षसे क्रमसे गुणन करना और विंशोत्तरी महादशाके मानका (की ष्टो- एकसौ वीसका) भाग देना एवं अष्टोत्तरीमें जिस ग्रहमें अंतर्दशाच[illegible] होवे उसग्रहके दशाके वर्षको अष्टोत्तरीके ८ आठहीग्रहोंके [illegible]सादिक क्रमसे गुणन करना और अष्टोत्तरीके मानका (१०८ एकसौ अ

देना ऐसेही योगिनी दशामें जिस दशामें अंतर्दशाचक्र बनाना होवे उसदशाके वर्षको योगिनीके आठही दशाके वर्षसे क्रमसे गुणन करना और योगिनी दशाके मानका (३६ छत्तीसका) भाग देना ऐसे जिसदशामें अंतर्दशा करना होवे उसका जो मान होवे उसीका भाग देके क्रमसे वर्ष मासादि लाना आवे वह अपनी २ दशामें अपनी २ अंतर्दशा जानना॥ ४८ ॥

उदाहरण।

जैसे विंशोत्तरी सूर्य महादशामें अंतर्दशाचक्र बनाना है सूर्यमहादशाके वर्ष ६है इस महादशाके वर्ष ६ को सूर्य दशाके वर्ष ६ से गुणन किये ३६ हुवे इनमें विंशोत्तरी दशाके मान १२० का भाग दिया लब्ध ० वर्ष शेष ३६ को १२ बारागुणे किये ४३२ हुवे १२० का भाग दिया लब्ध ३ मास आये शेष ७२ बचे इनको ३० तीसगुणे किये २१६० हुवे इनमें फिर १२० का भाग दिया लब्ध १८ दिन आये शेष ० बची इसको ६० गुणी करके १२० का भाग दिया लब्ध ०। ० घटी पल आई ऐसे वर्षादिक ०। ३। १८। ०। ० सूर्य महादशामें सूर्यकी अंतर्दशा आई—फेर सूर्य दशाके वर्ष ६ को चंद्रमहादशाके वर्ष-१० से गुणेकिये ६० हुवे इनमें १२० एकसौ वीसका भाग देके वर्षादिक क्रमसे लाये ०। ६। ०। ० ये सूर्य महादशामें चंद्रकी अंतर्दशा आई—एव दशाके वर्ष ६ को भौमदशाके वर्ष ७ सातसे गुणे किये ४२ हुवे १२० एकसौं वीसका भाग देके वर्षादिक लाये ०। ४। ६। ०। ० सूर्यमें भौमकी अंतर्दशा आई ऐसेही फेर सूर्य महादशाके वर्ष ६ को राहु दशाके वर्ष १८ अठारासे गुणन करनेसे १०८ आये इनमें दशाके मान १२० का भाग दिया लब्ध ०। १०। २४। ०। ० सूर्य महादशामें राहुकी अंतर्दशा आई इसीप्रकार दशाके वर्ष ६ को गुरुदशाके वर्ष १६ से गुणके १२० का भाग देनेसे ०। ९। १८। ०। ० वर्षादिक सूर्यमें गुरुकी तथा शनीके वर्ष १९ से दशाके वर्ष ६ को गुणन करके दशाके मान १२० का भाग देनेसे वर्षादि ०। ११। १२। ०। ० शनि[illegible] अंतर्दशा तथा बुधके वर्ष १७ से दशाके वर्ष ६ को गुणन करके १२० [illegible] देनेसे ०। १०। ६। [illegible]। ० सूर्यमें बुधकी अंतर्दशा तथा दशाके वर्ष [illegible]की दशाके वर्ष ७ गुण.. १२० का भाग देनेसे ०। ४। ६। ०। [illegible]ी दशाके वर्ष ६ को शुक्र महादशाके वर्ष २० से गुणन करके

भद्रिकामध्येंतर्दशा.								उल्कामध्येंतर्दशा.								
भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	
८	१०	११	१२	१	३	५	६	१२	१४	१६	२	४	६	८	१०	मा.
१०	०	२०	१०	२०	१०	०	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

सिद्धामध्येंतर्दशा.								संकटामध्येंतर्दशा.								
सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	
१६	१८	२	४	७	९	११	१४	२१	२	५	८	१०	१३	१६	१८	मा.
१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

अथांतर्दशामध्ये विदशानयनप्रकारमाह ।

अन्तर्दशाया दिवसाः स्वस्ववर्षैः क्रमाद्धताः ॥
स्वमानाद्वैर्हता प्राप्ता विदशा दिवसादिका ॥ ४९ ॥

भाषाटीका–अब विंशोत्तर्यादि दशाकी अंतदशामें विदशा करनेका प्रकार कहते हैं। अंतर्दशाके दिनोंको अपने अपने वर्षोंसे (विंशोत्तरीकी अंतर्दशाके दिनोंको विंशोत्तरीके सूर्यादि ग्रहोंके वर्षसे अष्टोत्तरीकी अंतर्दशाके दिनोंको अष्टोत्तरीके सूर्यादि ग्रहोंके वर्षसे योगिनीकी अंतर्दशाके दिनोंको योगिनीकी मंगलादि दशाके वर्षोंसे) क्रमसे गुणन करना और अपने अपने दशामानके वर्षोंका (विंशोत्तरीकी अंतर्दशामें विदशासाधनमें विंशोत्तरीके मानके १२० एकसौ वीसका एवं अष्टोत्तरीमें १०८ का योगिनीमें ३६ का) भागदेना लब्ध आवे वह दिवसादिक (दिनादिक) विदशा जानना ॥ ४९ ॥

उदाहरण ।

जैसे विंशोत्तरी सूर्य महादशामें सूर्यकी अंतदशा मास ३ दिन १८ की है इसमें विदशा करना है इसलिये इसके दिन किये १०८ हुवे इनको विंशोत्तरी दशाके सूर्यके वर्ष ६ से गुणन किये ६४८ हुवे इनमें विंशोत्तरी दशाके मानके वर्ष १२० एकसौ वीसका भागदिया लब्ध ५ दिन आये शेष ४८ बचे इनको ६० साठगुणे किये २८८० हुवे इनमें १२० एकसौ बीसका भागदिया लब्ध २४ घटी आई शेष० बची ६० साठ गुणा करके १२० का भाग देनेसे ०पल आई यह सूर्यकी अंतर्दशामें ५ दिन २४ घटीकी सूर्यकी विदशा हुई-- ऐसेही सूर्यकी अंतर्दशाके दिन १०८ को चंद्रादिकके वर्षोंसे क्रमसे गुणन करके १२० दशामानका भाग देनेसें दिनादिक सूर्यकी अंतर्दशामें विदशा हुई—इसी प्रकार विंशोत्तरी दशाकी शेष चंद्रादि ग्रहोंकी अंतर्दशामें तथा अष्टोत्तरी योगिनीकी अंतर्दशामें विदशा दिनादिक जानना ॥

सूर्यमध्येसूर्यांतरतन्मध्येविदशा									सूर्यमध्येचंद्रांतरतन्मध्येविदशा.									
र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	चं	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	मा.
५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९	दि.
२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

सूर्यमध्ये भौमांतरं तन्मध्ये विदशा.									सूर्यमध्ये राह्वंतरं तन्मध्ये विदशा.									
मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०	१	०	०	०	मा.
७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	दि.
२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

सूर्यमध्ये गुर्वंतरं तन्मध्ये विदशा.									सूर्यमध्ये शन्यंतरं तन्मध्ये विदशा.									
गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	
१	१	१	०	१	०	०	०	१	१	१	०	१	०	०	०	१	१	मा.
८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५	दि.
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

सूर्यमध्ये बुधांतरं तन्मध्ये विदशा.									सूर्यमध्ये केत्वंतरं तन्मध्ये विदशा.									
बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	
१	०	१	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा.
१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	दि.
२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	२१	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

सूर्यमध्ये भृग्वंतरं तन्मध्ये विदशा.									चंद्रमध्ये चंद्रांतरं तन्मध्ये विदशा.									
शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	
२	०	१	०	१	१	१	१	०	०	०	१	१	१	१	०	१	०	मा.
०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

चंद्रमध्ये भौमांतरं तन्मध्ये विदशा.									चंद्रमध्ये राह्वंतरं तन्मध्ये विदशा.									
मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	
०	१	०	१	०	०	१	०	०	२	२	२	२	१	३	०	१	१	मा.
१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१	दि.
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

चंद्रमध्ये गुर्वंतरं तन्मध्य विदशा.									चंद्रमध्ये शन्यंतरं तन्मध्ये विदशा.									
गु	श	बु	क	शु	र	चं	मं	रा	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु.	
२	२	२	०	२	०	१	०	२	३	२	१	३	०	१	१	१	२	मा.
४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

चंद्रमध्ये बुधांतरं तन्मध्ये विदशा।									चंद्रमध्ये केत्वंतरं तन्मध्ये विदशा।									
बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	
२	०	२	०	१	०	२	२	२	०	१	०	०	०	१	०	१	०	मा.
१२	२९	२५	२५	१२	२२	१६	८	२०	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	१९	दि.
१५	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

चंद्रमध्ये शुक्रांतरं तन्मध्ये विदशा.									चंद्रमध्ये सूर्यांतरं तन्मध्ये विदशा.									
शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	
३	१	१	१	३	२	३	२	१	०	०	०	०	०	०	०	०	१	मा.
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

भौममध्ये भौमांतरं तन्मध्ये विदशा।									भौममध्ये राह्वंतरं तन्मध्ये विदशा।									
मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०	२	०	१	०	मा.
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	दि.
३४	३	२६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घ.
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

भौममध्ये गुर्वंतरं तन्मध्ये विदशा।									भौममध्ये शन्यंतरं तन्मध्ये विदशा।									
गु	श	बु	क	शु	र	चं	मं	रा	श	बु	क	शु	र	चं	मं	रा	गु	
१	१	१	०	१	०	०	०	१	२	१	०	२	०	१	०	१	१	मा.
१४	२३	१७	१९	२६	१५	२८	१९	२०	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	दि.
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	प.

भौममध्य बुधांतरं तन्मध्ये विदशा।									भौममध्ये केत्वंतरं तन्मध्ये विदशा।									
बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	क	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	
१	०	१	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा.
२०	२०	२९	१७	१९	२०	२३	१७	२६	८	२४	७	१२	८	२२	१०	२३	२०	दि.
३४	४६	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	घ.
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	प.

भौममध्य शुक्रांतर तन्मध्ये विदशा।									भौममध्ये सूर्यांतर तन्मध्य विदशा।									
शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	क	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	
२	०	१	०	२	१	२	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मा.
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	दि.
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

भौममध्ये चंद्रांतरं तन्मध्ये विदशा ।

चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र
०	०	१	०	१	०	०	१	०
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये राह्वंतरं तन्मध्ये विदशा ।

रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	
४	४	५	४	१	५	१	२	१	मा.
२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	दि.
४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

राहुमध्ये गुर्वंतरं तन्मध्ये विदशा ।

गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा
३	४	४	१	४	१	२	१	४
२५	१६	२	२०	२४	१३	११	२०	९
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये शन्यंतरं तन्मध्ये विदशा ।

श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	
५	४	१	५	१	२	१	५	४	मा.
१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६	दि.
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

राहुमध्ये बुधांतरं तन्मध्ये विदशा ।

बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श
४	१	५	१	२	१	४	४	४
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
३	३३	०	५४	३०	३३	४१	३४	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये केत्वंतरं तन्मध्ये विदशा ।

के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	
०	२	०	१	०	१	१	१	१	मा.
२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३	दि.
३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

राहुमध्ये शुक्रांतरं तन्मध्ये विदशा.

शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के
६	१	३	२	५	४	५	५	२
०	२४	०	३	११	२४	२१	३	३
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये सूर्यांतरं तन्मध्ये विदशा.

र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मा.
१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४	दि.
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

राहुमध्ये चंद्रांतरं तन्मध्ये विदशा.

चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र
१	१	२	२	२	२	१	३	०
१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये भौमांतरं तन्मध्ये विदशा.

मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	
०	१	१	१	१	०	२	०	१	मा.
२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	दि.
३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

गुरुमध्ये गुर्वंतरं तन्मध्ये विदशा.

गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा
३	४	[illegible]	१	४	१	२	१	३
१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
२४	३६	४	४८	०	२४	०	४८	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्ये शन्यंतरं तन्मध्ये विदशा.

श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	
४	४	१	५	१	२	१	४	४	मा.
२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१	दि.
२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

गुरुमध्ये बुधांतरं तन्मध्ये विदशा.									गुरुमध्ये केत्वंतरं तन्मध्ये विदशा.									
बु	क	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	क	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	
३	१	४	१	२	१	४	३	४	०	१	०	०	०	१	१	१	१	मा.
२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९	१९	२६	१६	२८	१९	२०	१४	२३	१७	दि.
३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

गुरुमध्ये भृग्वंतरं तन्मध्ये विदशा.									गुरुमध्ये रव्यंतरं तन्मध्ये विदशा.									
शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	
५	१	२	१	४	४	५	४	१	०	०	०	१	१	१	१	०	१	म.
१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६	१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

गुरुमध्ये चंद्रांतरं तन्मध्ये विदशा									गुरुमध्ये भौमांतरं तन्मध्ये विदशा									
चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	
१	०	२	२	२	२	०	२	०	०	१	१	१	१	०	१	०	०	मा.
१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

गुरुमध्य राह्वंतरं तन्मध्ये विदशा									शनिमध्येशन्यंतरं तन्मध्ये विदशा									
रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	
४	३	४	२	१	४	१	२	१	५	५	२	६	१	३	२	५	४	मा.
९	२५	१६	४	२०	२४	१३	१२	२०	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	दि.
३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	१८	२५	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	प.

शनिमध्ये बुधांतरं तन्मध्ये विदशा									शनिमध्ये केत्वत तन्मध्ये विदशा									
बु	क	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	
४	१	५	१	२	१	४	४	५	०	२	०	१	०	१	१	२	१	मा.
१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६	दि.
१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१	घ.
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	प.

शनिमध्ये शुक्रांतरं तन्मध्ये विदशा.									शनिमध्ये सूर्यांतर्तन्मध्ये विदशा.									
शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	
६	१	३	२	५	५	६	५	२	०	०	०	१	१	२	१	०	१	मा.
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	१७	दि.
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शनिमध्ये चंद्रांतरं तन्मध्ये विदशा.									शनिमध्ये भौमांतरं तन्मध्ये विदशा.									
चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	मं	रा	गु	श	बु	क	शु	र	चं	
१	१	२	२	३	२	१	३	०	०	१	१	२	१	०	२	०	१	मा.
१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३	दि.
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	प.

शनिमध्ये राह्वंतरं तन्मध्ये विदशा.									शनिमध्ये गुर्वंतरं तन्मध्ये विदशा.									
रा	गु	श	ब	के	शु	र	चं	मं	गु	श	बु	क	शु	र	चं	मं	रा	
५	४	५	४	१	५	१	२	१	४	५	४	१	५	१	२	१	४	मा.
३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	१	२४	९	२३	२	१५	१६	१३	१६	दि.
५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

बुधमध्ये बुधांतरं तन्मध्ये विदशा।									बुधमध्ये केत्वंतरं तन्मध्ये विदशा।									
बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	
४	१	४	१	२	१	४	३	४	०	१	०	०	०	१	१	१	१	मा.
२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	दि.
४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	३६	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४	घ.
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	प.

बुधमध्ये शुक्रांतरं तन्मध्ये विदशा.									बुधमध्ये सूर्यांतरं तन्मध्ये विदशा.									
शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	
५	१	२	१	५	४	५	४	१	०	०	०	१	१	१	१	०	१	मा.
२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	दि.
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

बुधमध्ये चंद्रांतरं तन्मध्ये विदशा।									बुधमध्ये भौमांतरं तन्मध्ये विदशा।									
चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	मं	रा	गु	श	बु	क	शु	र	चं	
१	०	२	२	२	२	०	२	०	०	१	१	१	१	०	१	०	०	मा.
१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	१९	दि.
३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०	४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	प.

बुधमध्ये राह्वंतरं तन्मध्ये विदशा।									
रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	
४	४	४	४	१	५	१	२	१	मा.
१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३	दि.
४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

बुधमध्ये गुर्वंतरं तन्मध्ये विदशा.									बुधमध्ये शन्यंतरंतन्मध्ये विदशा.									
गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	
३	४	३	१	४	१	२	१	४	५	४	१	५	१	२	१	४	४	मा.
१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	दि.
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	प.

केतुमध्ये केत्वंतरंतन्मध्ये विदश.									केतुमध्ये शुक्रांतरंतन्मध्ये विदशा.									
के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	२	०	१	०	२	१	२	१	०	मा.
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	दि.
३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

केतुमध्ये रव्यंतरं तन्मध्ये विदशा.									केतुमध्ये चंद्रांतरंतन्मध्ये विदशा.									
र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१	०	०	१	०	मा.
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	दि.
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

केतुमध्ये भौमांतरंतन्मध्ये विदशा.									केतुमध्ये राह्वंतरं तन्मध्ये विदशा.									
मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०	२	०	१	०	मा.
८	२३	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	दि.
३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घ.
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

केतुमध्ये गुर्वंतरंतन्मध्ये विदशा.									केतुमध्ये शन्यंतरंतन्मध्ये विदशा.									
गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	
१	१	१	०	१	०	०	०	१	२	१	०	२	०	१	०	१	१	मा.
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	दि.
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	प.

केतुमध्ये सौम्यांतरंतन्मध्ये विदशा.									शुक्रमध्ये शुक्रांतरंतन्मध्ये विदशा.									
बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	क	
१	०	१	०	०	०	१	१	१	६	२	३	२	६	५	६	५	२	मा.
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०	दि.
२४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्रमध्ये रव्यतरं तन्मध्ये विदशा ।									शुक्रमध्ये चंद्रांतरं तन्मध्ये विदशा ।									
र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	
०	१	०	१	१	१	१	०	२	१	१	३	२	३	२	१	३	१	मा.
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्रमध्ये भौमांतरं तन्मध्ये विदशा ।									शुक्रमध्ये राह्वंतरं तन्मध्ये विदशा ।									
मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	
०	२	१	२	१	०	२	०	१	५	४	५	५	२	६	१	३	२	मा.
२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	दि.
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्रमध्ये गुर्वंतरं तन्मध्ये विदशा ।									शुक्रमध्येशन्यंतरं तन्मध्ये विदशा ।									
गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	
४	५	४	१	५	१	२	१	४	६	५	२	६	१	३	२	५	५	मा.
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्रमध्ये सौम्यांतरं तन्मध्ये विदशा ।									शुक्रमध्ये केत्वंतरं तन्मध्ये विदशा ।									
बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	
४	१	५	१	२	१	५	४	५	०	२	०	१	०	२	१	२	१	मा.
२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	दि.
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

इति विंशोत्तरीमध्ये सर्वेषां ग्रहाणामंतर्दशामध्ये विदशा—एवं अष्टोत्तर्यादीनामपिज्ञेया

ऊर्ध्वं स्थाप्यो जन्मशाकः शकाधो जन्मोत्पन्नः पद्मिनीप्राणनाथः ।
तद्वर्षाद्यंतर्दशाब्दादियुक्तं तस्मिन्शाके स्पष्टसूर्यो दशांते॥९०॥इतिदशा

भाषाटीका—अब भुक्त भोग्यदशा अंतर्दशा विदशामें जन्मका शक और स्पष्टसूर्य जोडनेकी रीती कहते हैं ऊपर जन्मका शक लिखना और शकके नीचे जन्मसमयका स्पष्टसूर्य लिखना उसमें वर्षादिक भोग्यदशा युक्त करनेसे भोग्यदशाके उत्तीर्ण समयका शक और सूर्य होताहै ऐसेही दशाके आरंभका शक

और सूर्य अंतर्दशामें युक्तकरनेसे अंतर्दशाके उत्तीर्ण समयका शक और सूर्य होताहै और अंतर्दशाके आरंभका शक और सूर्य विदशामें युक्त करनेसें विदशाके उत्तीर्ण समयका शक और सूर्य होता है

उदाहरण ।

स्पष्ट है विंशोत्तरी योगिनी अष्टोत्तरी दशाके चक्रमें शक और सूर्य युक्त किया है उनचक्रसे समझना ।

इति दशांतर्दशाविदशानयनप्रकारः ।

अथागाम्यब्दसाधनम् ।

सौरवर्षदिनाद्येन हतेनाब्दाः कतुल्यजः ॥
जन्मोत्थद्युगणेनाढ्या ईज्याद्वर्षमुखे गणः ॥ ५१ ॥

भाषाटीका—अब आगामि वर्षसाधन कहते हैं दिनादिक सौरवर्ष ३६५। १५।३१।३० सें गतवर्षोंकोंगुणन करना और उसमें जन्मसमयका ब्रह्मतुल्यका[1] सावयव[2] अहर्गण युक्तकरना गुरुवारकों[3] आदिले वर्षके आरंभसमयका सावयव (वर्षप्रवेशकी इष्टघटी पल विपल सहित) अहर्गण होवे ॥ ५१ ॥

विश्वनाथः ।

गणोधस्त्रियुक् स्वाक्षिगोंगांशयुक्तः त्रिषट्भक्त आप्तावमैर्युक्त ऊर्ध्वः॥खरामैर्हता सैकशेषं तिथिःस्यात्फलं मासवृन्दं ततोऽधो द्विनिघ्नात् ॥ ५२ ॥ रसांगान्वितस्वेभनेत्राङ्क ९२८ लब्धाविहीनादगाङ्का ९७ प्तभागोन ऊर्ध्वः ॥ हतो भानुभिः १२ शेषकं यात मासा गताब्दाः फलंसेषुखेशं ११०५ शकःस्यात् ॥ ५३ ॥

भाषाटीका—अहर्गणकों नीचे लिखके उसमें ३ तीन मिलाना और२दो जगे लिखना एक जगे स्थापन किये उसमें ६९२ छः सो बानवेका भाग देना लब्ध

---

१ ब्रह्मतुल्यका अहर्गण बनानेकी युक्ति आगे श्लोक ५४ में कही है ।

२ जन्मसमयकी इष्टघटी पल विपल सहित

३ अहर्गणके सातका भाग देना शेष० बचे सो गुरुवार१बचे तो शुक्रवार २ बचे तो शनिवार इसक्रमसें गुरुवारकों आदि ले शेषबचे उसपर्यंत गिननेसे वर्षप्रवेशका बार होता है ।

आवे वह दूसरीजगे लिखे हैं उसमें युक्त करना और उसके ६३ तिरसठका भागदेना लब्ध आवे वह ऊनाह जानना—ऊनाहकों ऊपर लिखे हुवे अहर्गणमें युक्त करना और ३० तीसका भागदेना शेष बचे उनमें १ एक मिलाना सो शुक्ल प्रतिपदाकों आदिले वर्षप्रवेशकी तिथि होवें और लब्ध आवे वह मास गण जानना—फेर मासगणको नीचे लिखना और उसको दो२गुणा करना५२ फेर उसमें ६६ छाछठ मिलाके दो जगे लिखना एक जगे ९२८ नोसो अट्ठाईसका भागदेना लब्ध आवे वह दूसरी जगे लिखे हुवेमेंसें हीन करना शेष बचे उसके ६७ सतसठका भाग देना लब्ध आवे वह ऊपर लिखे हुवे मासगणमेंसे निकालना और उसमें १२ बाराका भागदेना शेष बचे वह चैत्रशुक्ल प्रति पदाकों आदिले गतमास जानना और लब्ध आवे वह गताब्द समूह जानना उनगताब्द समूहमें ११०५ इग्यारासो पांच मिलाना सो वर्षप्रवेशका शालिवाहन शक होवै ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

गणेशदैवज्ञः।

विश्वेंद्रम्यरुणैर्युक्तः १२३११३ ग्रहलाघव जो गणः। चक्रघ्नं
नृपखाब्ध्याढ्यं ४०१६ ब्रह्मतुल्योगणो भवेत् ॥ ५४ ॥

इत्यागाम्यब्दप्रवेशः।

भाषाटीका—अब ग्रहलाघवके अहर्गणपर ब्रह्मतुल्यका अहर्गण साधनकरनेकी युक्ति गणेशदैवज्ञ कहते हैं ग्रहलाघवके अहर्गणमें १२३११३ मिलाके फेर उसमें चक्रसें ४०१६ को गुणन करके मिलाना सो ब्रह्मतुल्यका अहर्गण होवे ॥ ५४ ॥

उदाहरण।

ग्रहलाघवका अहर्गण ४०३९ में १२३११३ मिलाये १२७१५२ हुवे इनमें ४०१६ को चक्र ३१ से गुणन करनेसे १२४४९६ आये इनको युक्तकिये २५१६४८ हुवे ये ब्रह्मतुल्यका अहर्गण हुवा इसके नीचे जन्मसमयकी इष्टघटी ५६ पल ४८ विपल १८ लिखनेसे २५१६४८।५६। ४८।१८सावयव ब्रह्मतुल्यका अहर्गण हुवा ऐसे प्रथम ब्रह्मतुल्यका अहर्गण साधन किया अब आगामि वर्ष ३१ मा साधन करना है उसका उदाहरण ये है दिना-

दिक सौर वर्ष ३६५।१५।३१।३० सें गताब्दसंख्या ३० कों गुणन किये १०९५७।४५।४५।० हुवे इनमें जन्मसमयका सावयव ब्रह्मतुल्यका अहर्गण २५१६४८।५६।४८।१८ युक्त किया २६२६०६।४२।३३।१८ ये वर्षारंभसमयका सावयव अहर्गण हुवा अहर्गण २६२६०६ में ७ सातका भाग दिया शेष १ एक बचा गुरुवारको आदिले गिननेसें शुक्रवार आया इसलिये शुक्रवारके दिन इष्ट घटी ४२ पल ३३ विपल १८ से वर्ष ३१ इकतीसमां प्रवेश होगा परंतु किस शकके कोनसे मासकी कोनतिथीमें प्रवेश होगा इसका निश्चय होनेके वास्ते आगे उदाहरण श्लोक ५२।५३ का लिखते हैं—

अहर्गण २६२६०६ को नीचे लिखा २६२६०६ इसमें ३ तीन मिलाये २६२६०९ हुवे इनकों दो जगे लिखे २६२६०९ इसमें ६९२ छः सो बानवेका भाग दिया लब्ध ३७९ आये इनको दूसरी जगे लिखे हुवे २६२६०९ में युक्त किये २६२९८८ हुवे इनमें ६३ तिरसठका भागदिया लब्ध ४१७४ ऊनाह आये इनकों अहर्गण २६२६०६ में युक्त किये २६६७८० हुवे इसके ३० तीसका भाग दिया शेष २० बचे इनमें १ एक युक्त किया २१ हुवे ये वर्ष प्रवेशकी तिथी हुई अर्थात् २१ इकईसमी तिथिके दिन वर्षप्रवेश होगा २१ इकईसमी तिथी शुक्ल प्रतिपदाकों आदिले गिननेसं कृष्णपक्षकी ६ षष्ठीकों आती है इसलिये कृष्णपक्षकी छठके दिन वर्षप्रवेश होगा । और ३० का भाग देनेसें लब्ध ८८९२ आये ये मासगण हुवा इसको नीचे लिखा८८९२ दो गुणा किया १७७८४ इसमें ६६ छांछट मिलाये १७८५० हुवे इनको दो जगे लिखे १७८५० इसमें ९२८ नो सो अठाईसका भागदिया लब्ध १९आये ये दूसरी जगे लिखे १७८५० मेंसे हीनकिये शेष १७८३१ बचे इनको ६७ सतसठका भागदिया लब्ध २६६ आये इनको मासगणमें ८८९२ में से घटाये शेष ८६२६ बचे इसके १२ बाराका भागदिया शेष १० बचे इसलिये चैत्र शुक्ल १ प्रतिपदाकों आदिले गिननेसें माघ शुक्ल प्रतिपदातक गत १० मास हुवे और माघशुक्ल १ प्रतिपदाके आगे ११ माघमास वर्षप्रवेशका मास हुवा और लब्ध बाराका भाग देनेसे आये ७१८ इनमें ११०५ युक्त किये १८२३ ये वर्ष प्रवेशका शालिवाहनशक हुवा—अर्थात्—शके १८२३ में—अमांत माघ

कृष्ण ६ षष्ठी शुक्रवारकों श्रीसूर्योदयात् इष्टघट्यादि ४२।३३।१८ में ३१ इकतीसमां वर्षप्रवेश होगा. ऐसेही अभीष्ट गताब्दके सर्व आगामिवर्ष साधन करना॥ इत्यागाम्यब्दप्रवेशः ।

विद्यालये मालवसंज्ञदेशे रत्नावतीरम्यनिवासवासी ॥
औदुंबरः पाठकवंशजातः सुपूज्यविद्यान्वितनंदरामः ॥५५॥
तत्पौत्रमन्त्रशास्त्रज्ञरेवाशङ्करसूनुना ॥
महादेवेन रचिता पत्रीमार्गप्रदीपिका ॥ ५६ ॥
माघस्य शुक्लपञ्चम्यां शाके माझछकैर्मिते ॥
संपूर्णा भार्गवे वारे पत्रीमार्गप्रदीपिका ॥ ५७ ॥

भाषाटीका—विद्याकास्थान ऐसे मालवसंज्ञकदेशमें अतिरमणीय रत्नावती नगरी (रतलाम शहर) में निवास करनेवाले औदुम्बर ज्ञातीय पाठकवंशमें उत्पन्न उत्तम विद्यायुक्त नन्दरामजी हुये ॥ ५५॥ उनके पौत्र मोतीरामजीके पुत्र मंत्रशास्त्रके जानने वाले रेवाशंकरजी हुये, उनके पुत्र महादेव ज्योतिर्विद्ने पत्रीमार्गप्रदीपिका नाम ग्रन्थ बनाया ॥ ५६ ॥ वह पत्रीमार्गप्रदीपिका शालिवाहन शके १७९५ सतरासे पंचाणवेमें माघ शुक्ल पंचमी भृगुवारकेदिन संपूर्ण हुई ॥५७॥

इति श्रीमहादेवकृतपत्रीमार्गप्रदीपिका संपूर्णा ॥

मार्गशीर्षसिते पक्षे द्वादश्यां गुरुवासरे॥ कक्ष्यष्टभूमिते शाके कृतेऽयं विवृति र्मया ॥ १ ॥

इति श्रीज्योतिर्विद्वरश्रीमन्महादेवकृतपत्रीमार्गप्रदीपिकायां तदात्मज श्रीनिवास ज्योतिर्विद्विरचितासोदाहरणभाषाटीका समाप्तिमगमत् ॥

---

१ कटपयवर्गभवैरिहपिंडांत्यैरक्षरैरंकाः ॥ नाञे च ज्ञेयं शून्यं तथा स्वरे केवले कथितम्॥ १ ॥ इस प्राचीन कारिकाके वचनानुसार म—के ५ झ—के ९ छ—के ७ क—को १ ऐसे मा झ छ क के अंकों का अङ्कानां वामतो गतिः इस क्रमसें १७९५ सतरासे पंचानबे होते हैं—

अथ लोमशोक्तं सप्तवर्गबलचक्रम्.

स्व. २०	ऽमित्र १८	मित्र १५	सम १०	शत्रु ७	ऽशत्रु ५		
५ ०	४ ३०	३ ४५	२ ३०	१ ४५	१ १५		गृह.
२ ०	१ ४८	१ ३०	१ ०	० ४२	० ३०		होरा.
३ ०	२ ४२	२ १५	१ ३०	१ ३	० ४५		द्रेष्का.
२ ३०	२ १५	१ ५२ ॥	१ १५	० ५२ ॥	० ३७ ॥		सप्त.
४ ३०	४ ३	३ २२ ॥	२ १५	१ ३४ ॥	१ ७ ॥		नवां.
२ ०	१ ४८	१ ३०	१ ०	० ४२	० ३०		द्वाद.
१ ०	० ५४	० ४५	० ३०	० २१	० १५		त्रिंशां.

दशवर्गसंज्ञा.

२	३	४	५	६	७	८	९	१०
पारिजात	उत्तम	गोपुर	सिंहासन	पारावतांश	देवलोकांश	देवलोकांश	ऐरावत	वैशिषीक

चरकारकाः ।

आत्म	अमात्य	भ्राता	माता	पिता	पुत्र	ज्ञाति	स्त्री	

सर्व ग्रहोंमें अधिक अंशका हो वह आत्मकारक उससे अल्पअल्प अंशके क्रमसे कारक जानना.

इति पत्रीमार्गप्रदीपिका ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

भाषाटीका सहितं

श्रीमन्महादेवदैवज्ञविरचितं

वर्षदीपकम् ।

नत्वा गुरुपदाम्भोजं हेरम्बं शिवशारदम् ॥
वर्षदीपकग्रन्थस्य नृभाषाविवृतिं लघुम् ॥ १ ॥
कुर्वे वै श्रीनिवासोऽहं बालानां सुखहेतवे ॥
यदत्रोनं ममाज्ञानाद्विबुधाश्च क्षमन्तु तत् ॥ २ ॥

भाषाकार विघ्नविनाशार्थ गुरु गणपतीको नमस्काररूप मंगलाचरण करके भाषारचनाके प्रयोजनपूर्वक क्षमापन मांगता है

श्रीगुरु (महादेवजी) के चरणकमलको हेरम्ब (गजानन) को शङ्कर और शारदा (सरस्वति) को नमस्कार करके मैं श्रीनिवासशर्म्मा वर्षदीपकग्रंथकी बालकोंको सुखसे बोध होनेके लियें लघु (छोटीसी) भाषाटीका करताहूं, इस्मे यदि मेरे अज्ञानसे जो कुछ क्षति रही हो उसे पंडितलोग बारम्बार क्षमा करें, यह प्रार्थना है ॥ १ ॥ २ ॥

प्रथम शिष्टाचारपरिपालनार्थ और निर्विघ्नतासे ग्रन्थपरिसमाप्त्यर्थ ग्रन्थकर्ता स्वेष्टदेवको नमस्कररूप मंगलाचरण करते हैं ॥

श्रीगणेशं गुरुं नत्वा शुद्धां श्रीभुवनेश्वरीम् ॥
महादेवं महादेवः कुरुते वर्षदीपकम् ॥ १ ॥

भाषाटीका–श्रीगणेशजीको गुरुजीको शुद्धस्फटिकसदृश निर्मलस्वरूपा श्रीभुवनेश्वरीजीको और शंकरको नमस्कार करके महादेव ज्योतिर्वित् वर्षदीपक (वर्षके गणितमार्गका प्रकाश करनेवाला दीपक) नाम ग्रन्थ करे हैं ॥ १ ॥

प्रतिवर्षं जन्मग्रहादयात्पूर्वं जानीयात् ॥ २ ॥

भाषाटीका--वर्षवर्षके प्रतिजन्मके इष्ट वार ग्रह लग्नादि प्रथम जानना (हरवर्ष बनानेके समय जन्माक्षरमें लिखेहुवे जन्मका वार इष्टघटी स्पष्टसूर्य लग्न आदि पहले जानके वर्षके गणितका आरम्भ करना) ॥ २ ॥

सौरवर्षारंभाच्छकप्रवृत्तिर्वेदितव्या ॥ ३ ॥

भाषाटीका–सौरवर्षके आरंभसे (मेषसंक्रांति जिस दिन प्रवेश होवे उस दिनसे) शककी प्रवृत्ति जानना ॥ तात्पर्य यह है कि चैत्रशुद्ध, प्रतिपदासे " मधोः सितादेर्दिनमासवर्षयुगादिकानां युगपत्प्रवृत्तिः" इत्यादि वचनोंसे जो भि-सम्वत् शककी प्रवृत्ति होती है तथापि "वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात् " इस वचनसे जबतक मेषसंक्रांति प्रवेश न होवे तबतक शकप्रवेश नहीं होता इस कारण मेषसंक्रांतिके प्रवेशके प्रथम और चैत्रशुद्ध १ प्रतिपदाके अनंतरका वर्ष करना हो तो पिछाडीके शकसे करना ॥ जैसे सम्वत् १९५५ में मेषसंक्रांति वैशाखकृष्ण ६ षष्ठी भौमवारके दिन प्रवेश हुई है उसी दिनसे १८२० का शक प्रवेश हुवा इसलिये वर्षसाधनमें वैशाखकृष्ण ६ षष्ठिके पहले शके ॥ १८१९ ॥ ही मानके वर्ष करना ॥ ३ ॥

इष्टशके जनुः शकहीने गताब्दाः ॥ ४ ॥

भाषाटीका–अभीष्टशकमेंसे (जिस शकका वर्ष करना हो उस शकमेंसे) जन्मसमयका शक हीन करनेसे शेष बचे वह गताब्द (गतवर्ष) होवे ॥ ४ ॥

जन्मार्कतुल्योर्को यत्समये वर्षप्रवेशस्तत्रैव ॥ ५ ॥

भाषाटीका--जन्मसमयके सूर्यके समान (बरोबर) सूर्य जिसदिन जिस समय आवे उसदिन उससमयही वर्षप्रवेश होता है ॥ ५ ॥

याताब्दाः सप्ताधिकसहस्रहताः खाभ्रे भासा जन्मवारादि
युता वर्षप्रवेशवारादिबोधकाः ॥ ६ ॥

भाषाटीका–गताब्दोंको (गतवर्षोंको) १००७ एक हजारसातसें गुणे करना ८०० आठसेका भागदेना लब्ध आये हुवे वार घटी पल विपला-त्मक चार फलमें जन्मसमयके वारादिक (वार इष्ट घटी पल विपल) युक्त करना वर्षप्रवेशके वारादिक (वार इष्ट घटी पल विपल) का बोधहोवें अर्थात् (गत वर्षोंको १००७एकहजार सात गुणे करके८०० आठसेका भागदेना लब्धआवे वह वार जानना शेष बचे उनको ६० साठ गुणे करना और ८००का भाग देना लब्ध घटी आवे शेष बचे उनको ६० साठ गुणे करना ८०० का भाग देना

१ सिद्धान्तशिरोमणौ–रवेश्चक्रभोगोऽर्कवर्षं प्रदिष्टमिति ॥

लब्ध पल आवें शेष बचे उनकों ६० साठ गुणे करना और ८०० आठसेका भागदेना लब्ध विपल आवें ऐसे ८०० का भागदेके वार घटी पल विपलात्मक चार फल लाना उनमें जन्मसमयके वार इष्टघटी पल विपलादिक युक्त करना वर्ष प्रवेशके वारादिक होवें) ॥ ६ ॥

शिवघ्ना गताब्दाः स्वखाद्रीन्दुलब्धाढ्या जन्मतिथ्यन्वितास्तेषु
खाग्निशेषेऽब्दवेशातिथिः ॥ ७ ॥

भाषाटीका—इग्यारा गुणे किये हुवे गताब्दोंमें अपना १७० एकसो सत्तरमां भाग युक्तकरना और जन्मतिथि मिलाना तीस ३० का भाग देना शेष बचे वह वर्ष प्रवेशकी तिथि जानना (गताब्दोंको ११ गुणे करके २ जगे लिखना एक जगे १७० का भागदेना लब्ध आवे वह दूसरी जगे युक्तकरना उसमें शुक्लप्रतिपदाको आदिले जन्मतिथिकी संख्या मिलाना ३० तीसका भागदेना शेष बचे वह शुक्ल प्रतिपदाको आदिले वर्ष प्रवेशकी तिथि होवे) ॥ ७ ॥

क्वचिद्धूने भूयुतेवा ॥ ८ ॥

भाषाटीका—कोई समय गणितसे लाईहुई वर्षप्रवेशकी तिथीके दिन वर्ष प्रवेशका वार नहिं मिले तो आईहुई तिथिमें एक घटादेना वा एक युक्तकर देना (तिथीसे वर्षप्रवेशका वार पिछे होतो १ घटादेना आगे होतो १ मिला देना) ॥ ८ ॥

जन्मार्कांशादियुग्वारतोऽब्दप्रवेशनिर्णयः ॥ ९ ॥

भाषाटीका—जन्मसमयके स्पष्टसूर्यकी राशी अंशके समान राशी और अंश और वषप्रवेशके वारसे वर्षप्रवेशका निर्णय जानना (जन्मके सूर्यके राशी अंश और वर्षप्रवेशका वार ये तीनो जिस दिन मिले उस दिन वर्षप्रवेश हो वेंगा.) ॥ ९ ॥

इत्यब्दप्रवेशाध्यायः ॥ १ ॥

उदाहरण।

स्वस्ति श्री सम्वत् १९२८ शके १७९३ प्रवर्तमाने अमांत माघ कृष्ण ३ तृतीयापरं ४ चतुर्थ्यां भौमवासरे चित्रानक्षत्रे श्रीसूर्योदयादिष्टघटयादि ५६ । ४८ । १८ स्पष्टार्क १० । १६ । ५३ । ३९ ल ९ । २३ । २८ । २९ चंद्र ५ । २९ । १९ । ४९ समये ज्योतिर्विच्छ्रीनिवासशर्मणो जन्म इस

अथ जन्माङ्गम्.

बु ११ सू
श ९
१२ मं
शु १०
८ के
१
७
रा २
गु ४
६ चं
३
५

जन्म पत्रका वर्षपत्र अभीष्टशक १८२१ का करना है इसलिये शके १८२१ मेंसे जन्मशक १७९३ घटाया २८ शेष बचे गताब्द हुवे इनको १००७ से गुणे किये २८१९६ हुवे इनमें ८०० आठसेका भाग दिया लब्ध ३५ वार आये शेष १९६ बचे इनको ६० साठ गुणे किये ११७६० हुवे फेर इनमें ८०० आठसेका भाग दिया लब्ध १४ घटी आई शेष ५५० बचे इनको फेर ६० साठ गुणे किये ३३६०० हुवे ८०० का भाग दिया लब्ध पल ४२ आई शेष ० बची इस्को ६० गुणी करनेसे ० हुई ८०० का भाग दिया लब्ध ० शून्य विपल आई० ऐसे आठसेंका भाग देके लब्ध वार३५ घटी १४ पल ४२ विपलात्मकचारफल आये इन्में जन्म समयके भौमवारके ३ इष्टघटी ५६ पल ४८ विपल १८ मिलायें ३९ । ११ । ३० । १८ हुवे वार ७ सातसें अधिक है अतः वार ३९ में सातका भाग दिया शेष ४ । ११ । ३० । १८ ये वर्ष प्रवेशके वार घटी पल विपल हुवे.

तिथि साधन ।

गताब्द २८ को ११ गुणे किये ३०८ हुवे इनको दो जगे लिखे ३०८ एक जगे १७० का भाग दिया लब्ध १ एक आया ये ३०८ में युक्त किया ३०९ हुवे इनमें कृष्णपक्षकी ४ चतुर्थीका जन्म है इससे शुक्र प्रतिपदासे ४ पर्यंत गिननेसे जन्मतिथि १९हुई ये मिलाये३२८ हुवे इनमें३०तीसका भाग दिया शेष २८ बचे ये वर्ष प्रवेशकी तिथि हुई शुक्लप्रतिपदाको आदि ले गिननेसे २८ अठाईसमी कृष्णपक्षकी १३ त्रयोदशी आई परंतु त्रयोदशीके दिनवर्ष प्रवेशका वार बुध नहि मिलता है इस कारण इसमें १ एक तिथि युक्त करनेसे १४ चतुर्दशी हुई एवं तिथि निश्चय होनेके नंतर जन्म समयके स्पष्ट सूर्यकी१०राशी

१ रविवारसे वार गिनें जातेहैं ।

१६ अंशके समान अंश और वर्ष प्रवेश का वार बुध अमांत माघकृष्ण १४ के दिन मिलता है इसलिये सम्वत १९५६ शके १८२१ प्रवर्तमान्ये अमांत माघकृष्ण १४ चतुर्दशी बुधवारके दिन श्री सूर्योदयात् घट्यादि इष्ट ११।३०। १८ समयमें वर्ष २९ प्रवेश हुवा गताब्द २८

इति श्रीज्योतिर्विद्वरश्रीमन्महादेवकृतवर्षदीपकाख्यताजिकग्रंथेतदङ्गज श्रीनिवासविरचितायांसोदाहरणभाषाव्याख्यायामब्दप्रवेशाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

इष्टवारादिषुपातितगतपङ्क्तिवारादिषु शेषो दिनाद्यो धनम् ॥ १ ॥

भाषाटीका—अपने इष्ट वारादिकमेंसे पिछाडीकी गई हुई समीपकी पंक्ति (अवधी) के वारादिक (वार इष्ट घटी पल) हीन करनेसे शेष बचे वह दिनादिक धन चालक होवे ॥ १ ॥

आगामि पङ्क्तिवारादिषु पातितेष्टवारादिषु शेषो दिनाद्यऋणम् ॥ २ ॥

भाषाटीका आगेकी पङ्क्तिके वारादिक (वार इष्टघटी पल) मेंसे पिछाडीके अपने इष्ट वारादिक हीन करनेसे शेष बचे वह दिनादिक ऋण चालक होवे ॥ २ ॥ (अवधीके वारादिकमेंसें अपने वारादिक हीन करनेंसे ऋण और अपने वारादिकमेंसे अवधीके वारादिक घटानेसे धन चालक होता है)

दिनाद्ये गतिघ्ने षष्ट्याप्तेंशादिस्तेन पङ्क्तिस्थग्रहे संस्कृते स्पष्टः खगो वक्रे तु वैपरीत्यं संस्कृतौ ॥ ३ ॥

भाषाटीका- दिनादिक चालकको गतीसे गुणन करना ६० साठका भाग[1] देना आवे जो अंशादिकफल (अंश कला विकलात्मक ३ तीन फल) उनका पङ्क्ति (अवधी) के ग्रहमें संस्कार करनेसे (चालक धन हो तो युक्त और ऋण हो तो हीन करनेसे) स्पष्ट ग्रह होवे. और ग्रह वक्रगती होवे तो उन्ही अंशादिक फलोंका विपरीत संस्कार करना अर्थात् चालक धन हो तो ऋण और ऋण हो तो धन करना ॥ ३ ॥

गतर्क्षनाड्यः षष्टिशुद्धाः प्रथक् स्थाप्याः ॥ ४ ॥

भाषाटीका—गत नक्षत्र (जिस नक्षत्रमें वर्ष प्रवेश हो वह इष्ट नक्षत्र इसके पीछेका गयाहुवा गत नक्षत्र) का घटी पलोंकों साठमेंसें शोधकर दोजगे लिखना ४ ॥

---

१ साठका भाग देके अंशादिक फल लानेकी रीति उदाहणमें स्पष्ट लिखी हे

एकत्रेष्टघटयाद्याभयातम् ॥ ५ ॥

भाषाटीका–एक जगे इष्ट घटी पलयुक्त करना भयात होवे॥ ५ ॥

इतरत्रेष्टर्क्षघटयाद्याभभोगः ॥ ६ ॥

भाषाटीका–दूसरी जगे इष्टनक्षत्र (इष्ट समयमें वर्तमान नक्षत्र) की घटी पलयुक्त करना भभोग होवे ॥ ६ ॥

षष्टिघ्नं भयातं भभोगेनाप्तं स्पष्टं भयातम् ॥ ७ ॥

भाषाटीका–भयातको साठ ६० गुणा करना भभोगका भाग देना लब्ध घटयादिक स्पष्ट भयात होवे (भयातको साठ गुणा. करके भभोगका भाग देना लब्ध घटी आवे शेप बचे उनको ६० साठ गुणा करके फेर भभोगका भागदेना लब्ध पल आवे शेष बचे उनको साठगुणे करना फिर भभोगका भाग देना लब्ध विपल आवे ऐसे घटयादिक फल तीन आवे वह स्पष्ट भयात जानना) ॥ ७ ॥

गतर्क्षसंख्या षष्टिघ्ना भयातान्विता द्विघ्ना नवाप्तोंऽशादिरिंदोः ॥८॥

भाषाटीका–साठगुणी कीहुई गत नक्षत्रकी संख्या[1]में स्पष्ट भयात युक्त करके द्विगुण (दोगुणी) करना और नवका भाग देना लब्ध आवे जो अंशादिक फल ३वह अंशादिक स्पष्ट चंद्रहोवे गत नक्षत्रकी संख्याको ६० साठ गुणी करके उसमें स्पष्ट भयात मिलाना और उसको दोगुणी करना उसको नव ९ का भाग देना लब्ध अंश आवे शेष बचे उनको साठगुणे करना नीचेकी पल मिलाना फेर ९ नवका भाग देना लब्ध कला आवे शेष बचे उनको फेर साठगुणे करना नीचे लिखीः विपल मिलाना और ९ नवका भाग देना लब्ध आवे वह विकला जानना ऐसे अंश कला विकलात्मक फल तीन लावे वह स्पष्ट अंशादि चंद्र होवे अंशमें तीसका भाग देना लब्ध राशी शेष अंश समझना. ॥ ८ ॥

खखाष्टभभोगेन भक्ता अंशात्मिका गतिः ॥ ९ ॥

भाषाटीका–आठसौ८०० भभोगका भाग देना लब्ध आवे फल तीन वह अंशादिक चंद्रकी स्पष्ट गति होवे (अंशकों६०साठ गुणे करके कला मिलानेसे कलादिकगती होवे) ॥ ९ ॥

---

१ अश्विनीनक्षत्रकी आदि ले गत नक्षत्रपर्यंत गिननेंसे जो संख्या होवे उसको–

जनुरुदयभादिषु भांकमात्रे गताब्दांकयोगेऽर्कभक्ते मुन्था ॥ १० ॥

भाषाटीका-राश्यादिक (राशि अंश कला विकलात्मक) जन्म लग्नकी केवल राशिके अंक मेंही गताब्दसंख्याका अंक युक्त करना १२ बाराका भाग देना शेष बचे वह मुन्था जानना ॥ १० ॥

सूर्यैकांशभोगकाले मुन्था पंचकला भुनक्ति. ॥११॥

भाषाटीका-सूर्यके एक अंशके भोगसमयमें मुन्था पांच कला भोगतीहै (प्रतिदिन मुन्था ५ पांच कला चलतीहै) ॥ ११ ॥

उदाहरण.

अमांत माघ कृष्ण १४ चतुर्दशी बुधवारके दिन इष्ट ११।३०।१८। सेवर्ष प्रवेश हुवा इसके समीपकी पंक्ति (अवधि) पंचांगमें उसी दिन इष्ट २२ । १ की है यह वर्षप्रवेशसमयसे आगेकी है इसलिये सूत्रके अनुसार अवधीके वारादिक ४ । २२ । १ मेंसे वर्षप्रवेशके इष्ट वारादिक ४ । ११ । ३० घटाये शेष ० । १० । ३१ बचे ये दिनादिक ऋण चालक हुवा- इस दिनादिक चालक ० । १० । ३१ को सूर्यकी गति ६० । १९ से गोमूत्रिका लिखके गुणन किया सो ये आये

६०	१९
नंबर १ ०	० ४ नंबर
२ ६००	१९० ५
३ १८६०	५८९ ६

इनमें नंबर६ के अंकमें६०साठका भाग देके लब्ध९आये उनको नंबर पांचके अंकोंमें युक्त करके नंबर पांचके अंकोंको नंबर ३ तीनके अंकमें और नंबर ४ चारके अंकोंको नंबर २ दोके अंकोंमें मिलाये सो ये हुये फिर नंबर ३ तीनके अंकमें ६० साठका भाग दिया लब्ध ३४ आये इनको नंबर दोके अंकोंमें मिलाये ६३४ हुये इनमें ६० साठका भाग दिया लब्ध १० कला आई शेष ३४ विकला रही फेर कला १० में ६० साठका भाग दिया लब्ध ० अंश आया ऐसे साठका भाग देनेसे अंशादिक ० । १० । ३४ फल आये इनको अवधीमें स्थित सूर्य १० । १७ । ४ । ७ में ऋण किये १० । १६ । ५३ । ३३ शेष बचे ये स्पष्ट सूर्य हुवा इसीप्रकार

६०	१९
नंबर १ ०	
२ ६००	
३ २०५९	

शेष सर्व ग्रह किये परंतु राहु वक्रगती है इसकारण राहुकी गति ३ । ११ सें चालक ० । १० । ३१ कों उक्त रीतिसें गुणन करके ६० साठका भाग देके आये हुये ० । ० । ३४ अंशादिक फलोंका अवधीमें स्थित राहु ७ । २३ । ४० । ४० में विपरीत संस्कार किया अर्थात् चालक ऋण हैं इसकारण धन किया ७ । २३ । ४१ । १४ राहु स्पष्ट हुवा ।

स्पष्ट चन्द्र साधन

वर्षप्रवेशके दिन धनिष्ठाघट्या दिक ३७ । ५६ है-वर्ष प्रवेश धनिष्ठा नक्षत्र में हुवा है अतएव धनिष्ठा इष्टनक्षत्र और श्रवण गतनक्षत्र हुवा—गतनक्षत्र श्रवण की घटी ४१ पल ५१ को सूत्र ४ के अनुसार ६० साठ घटीमेंसे हीन किया १८ । ९ शेष बचे इनको दो जगे लिखे १८ । ९ एक जगे इष्टघटी ११।३० युक्त की २९ । ३९ भयात हुवा दूसरी जगे इष्ट नक्षत्र धनिष्ठाकी घटी ३७पल ५६ मिलाई ५६ ५ भभोग हुवा— भयातको ६० साठ गुणा करके

१८ ९	११ इष्ट. ३० घटी.	२९ भया- ३९ त.
१८ ९	३७इष्टनक्षत्र. ५६ घटी.	५६ भभो- ५ ग.

भभोगका भाग देना है परंतु भयात भभोग दोनों घट्यादिक है अतःप्रथम इन कों सवर्णित किये भयात१७७९ भभोग ३३६५ हुवे तदनंतर भयात १७७९ कों ६० साठ गुणा किया १०६७४० हुवे इनमें भभोग ३३६५ का भाग दिया लब्ध ३१ घटी आई शेष २४२५ बचे इनको ६० साठ गुणे किये १४५५०० हुवे भभोग ३३६५ का भाग दिया लब्ध ४३ पल हुई शेष ८०५ बचे उनको ६० साठ गुणे किये ४८३०० हुवे इनमें फेर ३३६५ का भाग दिया लब्ध १४ विपल आई ऐसे घट्यादिक ३१ । ४३ । १४ स्पष्ट भयात हुआ तदनंतर अश्विनीसे गत नक्षत्र श्रवण पर्यंत गिननेसे २२ संख्या आई ये गत नक्षत्रकी संख्या आई इसको६० साठ गुणीकी १३२० हुई इसमें स्पष्ट भयात ३१ । ४३ । १४ युक्त किया १३५१ । ४३ । १४ हुवे इनको २ द्विगुण किये२७०३ । २६ । २८ हुवे इनमें ९ नवका भाग दिया लब्ध ३०० अंश आये शेष ३ बचे इनकों ६० साठ गुणेकिये १८० हुवे इनमें नीचेके पल के अंक २६ मिलाये २०६ हुवे इनमें नवका भाग दिया लब्ध २२ कला आई शेष ८ बचे इनको ६० साठगुणे किये ४८० हुवे विपलके अंक २८

मिलाये ५०८ हुवे ९ का भाग दिया ५६ विकला आई शेष ९ का भाग देके उक्तरीतिसे अंशादिक फल ३ लाये३०।२२।५६ ये अंशादिक स्पष्ट चंद्र हुवा अंशमें ३० तीसका भाग दिया लब्ध १० राशी शेष अंश०बचे इसप्रकार स्पष्ट-चंद्र १०।०।२२।५६ राश्यादिक हुवा ।

गतिसाधन ।

आठसौ ८००।० में भभोग५६।५का भाग दिया परंतु दोनु घट्यादिक है इसलिये दोनोंको प्रथम सवर्णित किये भाज्य ४८००० भाजक ३३६५ हुवे भाज्यमें भाजकका भाग दिया लब्ध अंशादिक १४।१५।५२ चंद्रकी स्पष्ट गति हुई अंश १४ को ६० साठगुणे करके १५ मिलानेसे ८५५।५२ कलादिक गति हुई.

मुंथासाधन ।

जन्मलग्न ९।२३।२८।२९ की राशी ९ के अंकमें गताब्द संख्या २८ युक्त किये ३७।२३।२८।२९ हुवे १२ बाराका भाग दिया शेष १।२३।२८।२९ मुंथा हुई गती ५।०

अथ स्पष्टाः ग्रहाः सलवा० ।

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	मुं.
१०	१०	१०	११	७	११	८	७	१	१
१६	०	७	१	१८	२५	९	२३	२३	२३
५३	२२	३१	३५	५६	२	५४	४१	४१	२८
३९	५६	३६	८	५५	४८	५९	१३	१३	२९
६०	८५५	४८	७५	५	७१	४	३×	३×	५
१९	५२	५०	३२	३२	३२	९	११	११	०

नागर्क्षा गोङ्कदस्रास्त्रिदन्ताः क्रमोत्क्रमा मेषादीनां लंकोदयपलानि ॥ १२॥

भाषाटीका—नाग कहिये ८ ऋक्ष कहिये २७ ऐसे २७८ गो कहिये ९ अंक कहिये ९ दस्र कहिये २ ऐसे २९९ त्रि कहिये तीन ३ दंत कहिये ३२ ऐसे ३२३ ये क्रमसे और उत्क्रम (उलटे) से मेषादिक राशियोंके लंकोदय पल जानना ॥ १२ ॥

खचरार्द्धेन युताः स्वदेशोदयाः ॥ १३ ॥

भाषाटीका--अपने गामके चरखंडा[1] उक्त लंकोदय पलमें क्रमसे हीन और युक्त करना स्वदेशोदय (अपने गामके उदय) होवे॥ १३॥ जैसे रतलामके चरखंडा ५१। ४१।१७ है इनको लंकोदयपलमें क्रमसे प्रथम हीन किये नंतर युक्त किये ये नाच कोष्ठकमें लिखेहुवे स्वदेशोदय हुवे ऐसेही प्रत्येक अभीष्ट गामके स्वदेशोदय होते हैं ॥ १३॥

लंकादया.			चरखंडा		स्वदेशोदया.
मे.	२७८	मी.	५१	हीन किये	२२७
वृ.	२९९	कुं.	४१		२५८
मि.	३२३	म.	१७		३०६
क.	३२३	ध.	१७	युक्त किये.	३४०
सिं.	२९९	वृ.	४१		३४०
क.	२७८	तु.	५१		३२९

उदयास्त्रिंशदुद्धृता मेषादीनां पलाद्या गतयः ॥ १४ ॥

भाषाटीका--उदयोंके (लंकोदय और स्वदेशोदयके) तीस ३० का भाग देना आवे वह मेषादिक राशियोंकी पलादिक गती होवे (स्वदेशोदयोंके ३० तीसका भाग देनेसे स्वदेशके लग्नोंकी पलादिक गति एवं लंकोदयोंके ३०का भाग देनेसे लंकाके उदयोंकी पलादिक गति होती है ॥ १४॥

उदाहरण ।

मेष राशीके स्वदेशोदय २२७ के ३० तीसका भाग दिया लब्ध ७ शेष १७ बचे इनको ६० साठ गुणे किये १०२० हुवे फिर ३० का भाग दिया लब्ध ३४ ये मेषराशीके स्वदेशोदयकी पलादिक गति ७।३४ हुई ऐसेही बाराही राशियोंके जानना ॥ १४ ॥

---

१ गणेशदैवज्ञः ॥ मेषादिगे सायनभागसूर्ये दिनार्द्धजा भा पलभा भवेत्सा । त्रिस्था हतास्युर्दशभिः भुजंगैर्दिग्भिश्चरार्द्धानि गुणोद्धृतान्त्या ॥ १ ॥ सायन मेषार्कके आरंभ दिनमें मध्याह्न समयमें शंकुकी जो छाया हो वह पल भा होवे॥जिस समयके चरखंड करना हो उस गामकी पलभाको तीन जगे लिखना एक जगे १० दशगुणी दुसरी जगे ८ आठगुणी तीसरी जगे १० दशगुणी करना अंत्यमें ३ तीनका भाग देना उस गामके चरखंड होवे ।

लंकोदयोंकी पलादिकगतिका चक्र.

मे.०	वृ.१	मि. २	क. ३	सिं.४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं. १०	मी.११
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
९	९	१०	१०	९	९	९	९	१०	१०	९	९
१६	५८	४६	४६	५८	१६	१६	५८	४६	४६	५८	१६

रतलामशहरके स्वदेशोदयोंकी पलादिगतिका चक्र.

मे.०	वृ.१	मि. २	क. ३	सिं ४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं.१०	मी.११
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
३४	३६	१२	२०	२०	५८	५८	२०	२०	१२	३६	३४

शके वेदवेदाब्ध्यूनेऽयनांशकला ॥ १५ ॥

भाषाटीका—शकमेंसे ४४४ चारसें चुम्मालीस हीन करना शेष बचे वहअयनांशकला होती हैं(कलाके ६० साठका भाग देना लब्ध अंश शेष कला समझना)॥ १५॥

उदाहरण।

जैसे शके १८२१ का अयनांश करना है अतः शके १८२१ मेंसे ४४४ चारसें चुम्मालिस हीन किये १३७७ ये अयनांश कला हुई इसके ६० का भाग दिया लब्ध२२अंश शेष ५७ कला बची यह अंशादिक अयनांश हुवा ॥ १५॥

अयनांशहीने चक्रांशेऽवशिष्टांशाधस्ताच्छून्यत्रयं लेख्यम् ॥ १६ ॥

भाषाटीका—अयनाशको चक्रांश (३६० अंशों) मेंसे हीन करना शेषबचे हुवे अंशके नीचे तीन शून्य लिखना ॥ १६ ॥

ततस्त्रिंशत्रिंशदंशकोष्ठकेषु मेषादिगतियोगे भावाङ्गपत्रे ॥ १७ ॥

भाषाटीका—तदनंतर तीस२ अंशोंके कोष्ठकोमें लंकोदय और स्वदेशोदयकी मेषादिक राशियोंकी पलादिक गति क्रमसे (प्रथम मेषकी तदनंतर वृषभकी फेर मिथुन कर्क सिंह इस क्रमसे बारहों राशियोंकी पलादिक गती) युत करना भावपत्र और लग्नपत्र होवे अर्थात् लंकोदयोंकी मेषादिक राशियोंकी पलादिक गति युक्त करनेसे भावपत्र और स्वदेशोदयकी मेषादिक राशियोंकी गति क्रमसे युक्त करनेसे लग्नपत्र होता है ॥ १७ ॥

उदाहरण।

प्रथम तीनसेसाठ ३६० कोष्टकके दो चक्र बनाना उनके दक्षिण तरफ मेषादि १२ बाराराशी लिखना ऊपर० शुन्यको आदि ले २९ गुनतीसपर्यंत अंश लिखना तदनंतर अयनांश हीन करना३६० तीनसेसाठ अंशमेंसे और जो शेष बचे उस कोष्टकके तीसका भाग देना लब्धराशि शेष अंश बचेंगे उस राशी

अंशके नीचे तीन तीन शून्य लिखना जैसे अयनांश २२।५७ हैं यह २३ तेईसके समीप है इससे ३६० मेंसे २३ हीन किये ३३७ शेष वचे इसके तीस ३० का भाग दिया लब्ध ११ राशी शेष ७ अंश रहे इससे विना परिश्रम शीघ्र ज्ञात होगया कि ११ मीनराशी के ७ सातअंशके नीचे तीन शून्य लिखना ऐसे तीन शून्य लिखके फेर क्रमसे मेषादिक राशियोंकी पलादिक गति मिलाई भावपत्र और लग्नपत्र हुवे.

भावपत्रसर्वत्र अयनांश २३।०।०

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.
मे.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	०
०	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	९
	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	५२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१०	१६
वृ.	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	०
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३	९
	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	५८
मि.	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	०
२	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	१०
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
क.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	०
३	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१०
	३८	२४	१०	५४	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१०	४६
सिं.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	०
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	९
	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	५८
कं.	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	०
५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	९
	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६
तु.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	०
६	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५७	७	१७	९
	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१६
वृ.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	०
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३	९
	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	५८
ध.	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	०
८	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	१०
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
म.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	०
९	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१०
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	४६
कुं.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	०
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	९
	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	५८
मी.	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	०
११	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	९
	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६

लग्नपत्रं रत्नपुरे पलभा ५।८ अयनांश २३।०।० चरखंड ५१।४१।१७

रा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.
मे.	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	०
	५४	१	९	१६	२४	३१	२९	४७	५५	४	१२	२१	३०	३८	४७	५५	४	१३	२१	३०	३८	४७	५६	४	१३	२१	३०	३९	४७	५६	७
०	२	३६	१०	४४	१८	५२	३६	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	३४
वृ.	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	०
	४	१३	२२	३०	३९	४७	५६	५	१५	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५८	८	१८	२९	३९	४९	८
१	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	१२	१२	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६
मि.	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	०
	५९	९	२०	३०	४०	५०	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	१०
२	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	१२
क.	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	०
	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११
३	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	२०
सिं.	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	०
	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	२३	४८	५९	१०	२१	३२	११
४	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	२०
क.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	०
	४३	५४	५	१६	२७	३८	५९	०	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१०
५	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	५८
तु	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	०
	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	१०
६	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	५८
वृ.	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	०
	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	११
७	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	२०
ध.	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	०
	२९	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	४९	९	१९	२९	४०	५०	०	१०	२०	३१	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१३	२३	३३	११
८	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	३४	३६	४८	०	१२	३४	३६	४८	०	१२	२४	२०
म.	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	०
	४३	५३	४	१४	२४	३४	४४	५५	२	१२	२०	२९	३८	४६	५५	३	१२	२१	२९	३८	४६	५५	४	१२	२१	२९	३८	४७	५५	४	१०
९	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	१२
कुं.	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	०
	१२	२१	३०	३८	४७	५५	४	१३	२०	२८	३५	४३	५०	५८	५	१३	२१	२८	३६	४३	५१	५८	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१	५९	८
१०	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८	३६
मी.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	०
	७	१४	२२	२९	३७	४४	५२	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	०	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	७
११	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	०	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८	३४

भानुभांशजं लग्नपत्रकोष्ठकमिष्टान्वितं तन्न्यूनकोष्ठजं भांशं भानुकलाद्यान्वितं तत इष्टाल्पकोष्ठांतरलैष्यकोष्ठांतरेणाप्तमंशादिफलं पूर्वत्र योजितं लग्नं भवेत् ॥ १८ ॥

भाषाटीका—सूर्यकी राशी अंश प्रमाण लग्नपत्रके कोष्टकमें इष्ट घटी पल विपल युक्त करना (उससे इष्ट युक्त किये हुवे कोष्टकसे) अल्पकोष्टकके राशी अंश लेना (जिस कोष्टकमें इष्ट युक्त किये हुवे कोष्टकसे किंचित् न्यून अंक मिले उसके सामने जो राशी और ऊपर जो अंश होवे वे अंश लेना) राशी अंशके नीचे स्पष्ट सूर्यकी कलाविकला युक्त करना तदनंतर इष्ट युक्त किये हुवे कोष्टक और अल्प कोष्टकके अन्तर करे इष्टयुक्त कोष्टकमेंसे अल्पकोष्टकको हीन करे शेष बचे उस्में अल्पकोष्टक और उसके आगेका ऐष्य कोष्टकका अंतर करके भाग देना लब्ध आवे जो अंशादिक फल ३ तीन वह प्रथम आये हुवे राश्यादिकमें युक्त करना लग्न स्पष्ट होवे ॥ १८ ॥

लग्नपत्रस्थभानुभांशजकोष्ठं स्वाधःस्थितसप्तमकोष्ठकाद्धीनं दिनमानम् ॥ १९ ॥

भाषाटीका—सूर्यकी राशी अंशप्रमाण लग्नपत्रमें जो कोष्टक है उसको अपने नीचेके सातमें कोष्टकमेंसे हीन करना शेष बचे वह दिनमान जानना ॥ १९ ॥

तच्चषष्टिशुद्धं रात्रिमानम् ॥ २० ॥

भाषाटीका—दिनमानको ६० साठमेंसे शोधना रात्रिमान होवे ॥ २० ॥

सूर्योदयादिष्टे रात्र्यर्द्धयुते तुर्यभावेष्टम् ॥ २१ ॥

भाषाटीका—सूर्योदयात् घट्यादिक इष्ट समयमें रात्र्यर्द्ध (रात्रिमानका अर्द्ध) युक्त करना चतुर्थ भावका इष्ट होवे ॥ २१ ॥

एतदादाय भावपत्रतो लग्नवच्चतुर्थभावसाधनम् ॥ २२ ॥

भाषाटीका—इसप्रकार चतुर्थ भावका इष्ट लाकरके भावपत्रेपर लग्नसाधनकी रीतिके अनुसार (जैसे लग्न लाये हैं उसी तरहसे) चतुर्थ भावका साधन करना ॥ २२ ॥

लग्नशोधिततुर्यषष्ठांशो लग्ने पञ्चवारं योज्यस्ततस्सषष्ठांशोरूपाच्छुद्धस्तुर्ये पंचवारं योजितश्चेल्लग्नादयस्ससंधयः षड्भावाः ॥ २३ ॥

भाषाटीका—लग्न निकले हुवे चतुर्थ भावके षष्ठांशको(चतुर्थ भावमेंसे लग्नको हीन करना शेष बचे राश्यादिक उसकी राशीके अंकमें ६ छका भाग देना लब्ध राशी आवे शेष बचे उनको तीस ३० गुणे करके नीचेके अंश मिलाना ६ छका भाग देना लब्धअंश आवे शेष बचे उनको ६० साठगुणे करके नीचेकी कला मिलाना फेर ६

छका भाग देना लब्ध कला आवे शेषबचे उनको ६० साठ गुणेकरके विकला मिलाना फेर६ छका भाग देना लब्ध विकला आवे शेष बचे उनको फिर६०साठ गुणेकरके ६ छका भाग देना लब्ध आवे वह प्रतिविकला जानना—ऐसे६छका भाग देनेसे राश्यादिक फल आवे वह षष्ठांश होता है उस षष्ठांशको लग्नमें पांचवार युक्त करना तदनंतर फिर उस षष्ठांशको एकराशिमेंसे(१।०।०।०।०)शोधके चतुर्थ भावमें पांचवार मिलावे तो लग्नको आदिले संधीसहित ६ छ भाव होवे ॥ २३॥

एते षड्भोनाः शेषाः षड्भावाः ॥ २४ ॥

भाषाटीका—इन छही भावोंमेंसे छः छः राशी हीन करनेसे शेष रहे हुवे छहों भाव होवे ॥ २४ ॥

ग्रहःस्वाधिष्ठितभावारम्भसंधितो न्यूनो गतभावोत्थं
ताद्दग्विरामसंध्यधिक उत्तरभावोत्थं फलं प्रयच्छति ॥२५॥

भाषाटीका—ग्रह जिस भावमें स्थित होवे उस भावकी आरंभ (पहलेकी) संधिसे न्यन (कमती) हो तो गतभावजनित (पीछेके भावका) फल देवे तैसे ही विराम (आगेकी) संधिसे अधिक हो तो उत्तर (आगेके) भावजनित फलको देवे ॥ २५ ॥

ग्रहसंध्यंतरं नखघ्नं भावसंध्यंतरेणाप्तं फलं विंशोपकाः ॥ २६ ॥

भाषाटीका—ग्रहसंधिके अंतरको (ग्रह जिस भावमें स्थित होवे उस भावसे कमती हो तो आरंभसंधिके साथ और भावसे ग्रह अधिक हो तो विराम (आगेकी) संधिके साथ अन्तर करके) बीसगुणा करना और भावसंधिके अन्तरका (जिस संधीसे ग्रहका अंतर किया है उसी संधीसे भावके साथ अंतरकरके) भाग देना फल आवे वह विंशोपका जानना और यदि ग्रह आरंभसंधिसे न्यून हो वा विराम संधिसे अधिक हो तो जिस भाव और संधिके बीचमें ग्रह होवे उस भाव और संधिका अंतर करके ग्रह संधिके अंतरमें भाग देना अर्थात् आरंभसंधिसे ग्रह न्यून हो तो पहलेके भाव और संधिसे अंतर करना और ग्रह आगेकी संधिसे अधिक हो तो आगेके भावसे संधिका अंतर करके बीसगुणेकिये हुवे ग्रह संधिके अंतरमें भाग देना फल विंशोपका होवे॥ २६॥

इति ग्रहभावाध्यायः।

उदाहरण।

स्पष्टसूर्य १०।१६।५३।३९ है इसकी राशी १० अंश १६ के प्रमाण लग्नपत्रमें कोष्टक देखा ५७।२१।६ है इसमें इष्ट घट्यादि ११।३०।१८ मिलाया६८।५१ २४ हुवे घटीका अंक ६० साठसे अधिक है अतः साठका भाग दिया शेष ८। ५१।२४ रहे यह इष्ट युक्त किया हुवा लग्नपत्रका कोष्टक हुवा इस इष्टयुक्त कोष्टकसे अल्पकोष्टक लग्नपत्रमें ८।४५।४८ एक १ राशी ११ ग्यारा अंशके कोष्टकमें मिलताहै इस कारण १ वृषराशी ११ अंश लिये इसके नीचे सूर्यकी कला ५३ विकला ३९ युक्त किया १।११।५३।३९ हुवा तदनंतर इष्टयुक्त कोष्टक ८।५१।२४ और अल्पकोष्टक ८।४५।४८का अंतर किया० । ५। ३६। हुवा इस्में अल्प कोष्टक ८।४५।४८ और ऐष्य कोष्टक ८ । ५६ । ० के अंतर ० । १० । १२ का भाग दिया परंतु भाज्य भाजक दोनों पलादिक हैं अतएव इनको सवर्णित किये भाज्य ३३६ भाजक ६१२ हुवे भाज्य में भाजकका भाग दिया लब्ध ०शून्य अंश आया शेष बचे ३३६ को६०साठगुणे किये २०१६० हुवे इनमें फिर ६१२ भाजकका भाग दिया लब्ध ३२ कला आई शेष ५७६ बचे इनको ६० साठगुणे किये ३४५६० हुवे इनमें भाजकका (६१२) भाग दिया लब्ध ५६ विकला आई ऐसे अंशादिक ०।३२ ।५६ फल तीन आये इनको प्रथम आये हुवे राश्यादिक १।११।५३।३९ में युक्त किये१।१२।२६।३५ हुवे ये राश्यादिक स्पष्ट लग्न हुवा ।

दिनमानसाधन।

सूर्यकी राशी १० अंश १६ प्रमाण लग्नपत्रका कोष्टक५७।२१।६ को अपने नीचेके सातमें कोष्टक २६।९।४२ मेंसे हीन किया २८।४८।३६ दिनमान हुवा।

रात्रिमानसाधन।

दिनमान २८।४८।३६ को ६० साठमेंसे शोधा ३१।११।२४ रात्रिमान हुवा इसको आधा किया १५।३५।४२ रात्र्यर्द्ध हुवा ।

चतुर्थभाव इष्टसाधन।

सूर्योदयात् इष्ट ११।३०।१८ में रात्र्यर्द्ध १५ । ३५ । ४२ युक्त किया २७।६।० चतुर्थ भावका इष्ट हुवा ।

चतुर्थभावसाधन ।

स्पष्टसूर्य १०।१६।५३।३९ की राशी १० अंश १६ प्रमाण भावपत्रका कोष्टक ५६।४५।२४ में चतुर्थभावका इष्ट २७।६।० मिलाया ८३।५१।२४ हुवे घटी ६० साठसे अधिक है ६० साठका भाग दिया शेष २३।५१।२४ बचे यह इष्टयुक्त कोष्टक हुवा इससें न्यून कोष्टक भावपत्रमें २३।४२।२० तीन ३ राशी २७ अंशमें मिलता है इसलिये राशी ३ अंश २७ लिये. इसके नीचे कला विकलाके स्थानमें सूर्यकी कला ५३ विकला ३९ युक्त की ३।२७।५३।३९ हुवे नंतर इष्टयुक्त कोष्टक २३।५१।२४ और अल्प कोष्टक २३।४२।२० का अंतर किया ०।९।४ हुवा इसमें अल्पकोष्टक २३।४२।२० और उसके आगेका ऐष्य कोष्टक २३।५२।१८ का अंतर ०।९।५८ का भाग दिया परन्तु भाज्य भाजक दोनों पलादिक हैं अतएव दोनोंको प्रथम सवर्णित किये भाज्य ५४४ भाजक ५९८ हुवा भाज्य ५४४ में भाजक ५९८ का भाग दिया लब्ध ० अंश आया शेष ५४४ को ६० साठगुणे किये ३२५४० हुवे इनमें भाजक ५९८ का भाग दिया लब्ध ५४ कला आई शेष ३४८ बचे इनको ६० साठगुणे किये २०८८० हुवे इनमें भाजक ५९८ का भाग दिया लब्ध ३४ विकला आई ऐसे अंशादिक ०।५४।३४ फल तीन आये इनको प्रथम आये हुवे राश्यादिक ३।२७।५३।३९ में युक्त किये ३।२८।४८।१३ हुवे ये चतुर्थ भाव स्पष्ट हुवा.

भावसाधनका उदाहरण ।

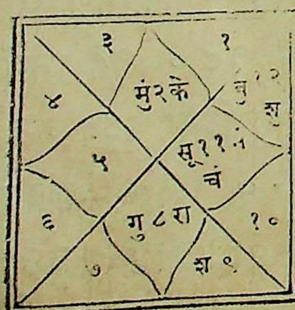
लग्नस्पष्ट १।१२।२६।३५ को चतुर्थ भाव ३।२८।४८।१३ मेंसे शोधा २।१६।२१।३८ शेष बचे इसकी राशीके २ अंकमें ६ छका भागदिया लब्ध ० राशी शेष २ को ३० तीसगुणेकिये ६० हुवे इनमें नीचेके १६ अंश मिलाये ७६ हुवे इनके ६ छका भाग दिया लब्ध १२ अंश आये शेष ४ बचे इनको ६० साठगुणे किये २४० हुवे कलाके अंक २१ युक्त किये २६१ हुवे फिर ६ का भाग दिया लब्ध ४३ कला आई शेष ३ बचे उनको ६० साठगुणे किये १८० हुवे इनमें विकलाके अंक ३८ मिलाये २१८ हुवे फिर ६ छका भाग दिया लब्ध ३६ विकला आई शेष २ बचे इनको फिर ६० साठगुणे किये १२० हुवे ६ छका भाग दिया लब्ध २० प्रतिविकला आई ऐसे छका भाग देके ०।१२।४३।३६।

२० फल पांच लाये ये षष्ठांश आया इसको लग्न १।१२।२६।३५ में युक्त किये १।२५।१०।११।२० द्वितीय भावकी आरंभ संधि हुई इसमें षष्ठांश ०।१२।४३।३६।३५ युक्त किया२।७।५३।४७।४०द्वितीय भाव हुवा द्वितीय भावमें फिर षष्ठांश ०।१२।४३।३६।२० मिलाया२।२०।३७।२४।० तृतीय भावकी आरंभ और द्वितीय भावकी विराम संधि हुई इसमें फिर षष्ठांश युक्त किया३।३।२१।०।२०तृतीय भाव हुवा इसमें फिर षष्ठांश०।१२।४३।३६।२० युक्तकिया ३ । १६ । ४ । ३६ । ४० तृतीय भावकी विराम और चतुर्थ भावकी आरंभ संधि हुई ऐसे लग्नमें षष्ठांश पांचवार युक्त किया फिर षष्ठांश ० ।१२।४३।३६ ।२० को एक राशी १।०।०।०।० मेंसे शोधा ० । १७। १६ । २३। ४० शेष बचे इनको चतुर्थ भावमें पांचवार युक्त किया लग्नादिक संधिसहित ६ छः भाव हुवे इन छः भावोंमेंसे ६ छः छः राशी घटाई शेषके ६ भाव हुवे.

ससंधयो द्वादशभावाः ।

१	सं.	२	सं.	३	सं.	४	सं.	५	सं.	६	सं.
१	१	२	२	३	३	३	४	५	५	६	६
१२	२५	७	२०	३	१६	२८	१६	३	२०	७	२५
२६	१०	५३	३७	२१	४	४८	४	२१	३७	५३	१०
३५	११	४७	२४	०	१६	१३	१६	०	२४	४७	११
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०
७	**सं.**	**८**	**सं.**	**९**	**सं.**	**१०**	**सं.**	**११**	**सं.**	**१२**	**सं.**
७	७	८	८	९	९	९	१०	११	११	०	०
१२	२५	७	२०	३	१६	२८	१६	३	२०	७	२५
२६	१०	५३	३७	२१	४	४८	४	२१	३७	५३	१०
३५	११	४७	२४	०	१६	१३	१६	०	२४	४७	११

वर्षाङ्गचक्रम् :



चलितचक्रम्



भावमें जो जो राशी आवे वे चलितमें लिखना नंतर ग्रह लिखना वहां सूर्य वर्षकुंडलिमें १० दशम भावमें स्थित है दशम भावकी विरामसंधिसे १०।१६।४ से सूर्य अधिक है इसलिये ये११ ग्यारहमें भावका फल देगा एवं

शुक्र ११ में भावमें स्थित है ११ ग्यारहमें भावकी विरामसंधि ११।२० से शुक्र ११।२५ अधिक है अतएव शुक्र १२ में भावका फल देगा ऐसे सर्वग्रह जानना।

विंशोपकानयन उदाहरण।

सूर्य १०।१६।५३।३९ और दशम भावकी विरामसंधि१०।१६।४।३६का अंतर किया ०।०।४९।३ हुवा इसको बीस २० गुणा किया १६।२३।० हुवे इनमें सूर्य दशम भावकी विरामसंधि और ग्यारहमें भावके बीचमें है इस लिये दशमभावकी विरामसंधि १० । १६ । ४ । ३६ और ग्यारहमा भाव ११। ३।२१।० के अंतर १७।१६।२४ का भाग दिया—परंतु दोनों भाज्य भाजक अंशादिक हैं इसलिये इनको प्रथम सवर्णित किये भाज्य ५८८६० भाजक ६२१८४हुवे भाज्य५८८६० में भाजक६२१८४का भाग दिया लब्ध० शून्य विश्वा आये शेष ५८८६० को ६० साठगुणे किये ३५३१६०० हुवे भाजक भावसंध्यंतर ६२१८४ का भाग दिया लब्ध ५७ प्रतिविश्वा आये ये सूर्यके विंशोपका हुवे इसीप्रकार सब ग्रहोंके विंशोपका जानना ॥

विंशोपकाः ।									
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	मुं.
०	१८	९	१७	९	७	१६	२	२	३
५७	१०	५४	५७	४६	७	४९	१९	१९	३९

इति श्रीज्योतिर्विद्वरश्रीमन्महादेवकृतवर्षदीपकाख्यताजिकग्रंथेतदङ्गजश्रीनिवास-
विरचितायां सोदाहरणभाषाव्याख्यायां ग्रहभाव साधनाध्यायो
द्वितीयः ॥ २ ॥

वक्राच्छज्ञचन्द्रार्कज्ञसितारेज्यार्किमंदेज्यामेषाद्याधिपाः ॥ १ ॥

भाषाटीका—वक्र कहिये मंगल अच्छ क० शुक्र ज्ञ क० बुध चंद्र क० चंद्र अर्क क० सूर्य ज्ञ क०बुध सित क०शुक्र आर क० मंगल इज्य क०गुरु अर्कि क० शनि मंद क० शनि इज्य क०गुरु मेषादिक राशियोंके क्रमसे स्वामी जानना॥ १॥

मेषादिराशियोंके स्वामी.												
मे. ०	वृ. १	मि. २	क. ३	सिं. ४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं १०	मी. ११	राशी.
मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	स्वामी

मेषगोनक्रकन्याकर्कान्त्यतुलादिवाकराद्युच्चर्क्षादशमतृतीयाष्टा विंशपञ्चदशपंचमसप्तविंशाविंशाःक्रमेण परमोच्चभागाः ॥ २ ॥

भाषाटीका—मेष कहिये मेष गो क० वृषभ नक्र क० मकर कन्या क० कन्या कर्क क० कर्क अंत्य क० मीन और तुला ये सूर्यादिक ग्रहोंकी क्रमसे उच्चराशी होवे अर्थात् मेषका सूर्य वृषभका चंद्र मकरा मंगल कन्याकका बुध कर्कका गुरु मीन का शुक्र तुलाका शनि उच्चका जानना और दशमक० १० तृतीयक० ३ अष्ट विंश क० २८ पञ्चदश क० १५ पंचम क० ५ सप्तविंश क० २७ विंश क० २० क्रमसे परमउच्चके अंश जानना अर्थात् ऊपर कहीहुई राशी और इन अंशोंके सूर्यादि ग्रह हो तो परम उच्चके जानना जैसे सूर्य मेषके दश अंशका है ये परम उच्चका हुवा इसी प्रकार चंद्र वृषभके तीन अंशका परम उच्चका मंगल मकरके २८ अठाईस अंशका बुध कन्याके १५ पंद्रह अंशका गुरु कर्कके पांच ५ अंशका शुक्र मीनके २७ सताईस अंशका शनि तुलाके २० वीस अंशका परम उच्चका जानना ॥ २ ॥

स्वोच्चसप्तमर्क्षास्तथांशाःक्रमशो नीचर्क्षाः परमनीचभागाः ॥ ३ ॥

भाषाटीका—सूर्यादिग्रहोंकी अपनी उच्चराशिसे सातमी राशी और अंश क्रमसे नीच राशी और परमनीचके अंश होवे ॥ ३ ॥

उच्चनीचराशिचक्रम् ।

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	
० १०	१ ३	९ २८	५ १५	३ ५	११ २७	६ २०	१	उच्चराशयः
६ १०	७ ३	३ २८	११ १५	९ ५	५ २७	० २०	७	नीचराशयः

मेषेऽङ्गाङ्गाष्टपंचेषवो गुरुशुक्र ज्ञारार्कजानां हद्दांशाः ॥ ४ ॥

भाषाटीका—मेषराशीमें अंग ६ अंग ६ अष्ट ८ पंच ५ इषु ५ इन अंशोंके क्रमसे गुरु शुक्र बुध मंगल शनी हद्दाके स्वामी जानना ॥ अर्थात् मेषराशीके ६ छ अंशपर्यंत हद्दाका स्वामी गुरु होता है उस्के आगेके ६ छह अंशका स्वामी शुक्र उस्के आगेके ८ अंशका स्वामी बुध उस्के आगेके ५ पांच अंशका स्वामी मंगल उस्के आगेके ५ अंशका स्वामी शनि इसीप्रकार बारहों राशियोंके हद्दांशके स्वामी समझना ॥ ४ ॥

वृषेष्टांऽगेभशराग्नयः सितज्ञेज्यमन्दाराणाम् ॥ ५ ॥

भाषाटीका–वृषराशिमें अष्ट ८ अंग ६ इभ ८ शर ५ अग्नि ३ इन अंशोंके यथाक्रम शुक्र बुध गुरु शनि मंगल हद्दाके स्वामी जानना ॥ ५ ॥

द्वंद्वेङ्गङ्गाशराद्र्यङ्गांशाज्ञशुक्रेज्यारमन्दानाम् ॥ ६ ॥

भाषाटीका–मिथुन राशिमें अंग ६ अंग६ शर ५ अद्रि७ अंग६ इन अंशोंके क्रमसे बुध शुक्र गुरु मंगल शनी हद्दाके स्वामी जानना ॥ ६ ॥

कर्केद्र्यङ्गाङ्गनगाब्ध्यंशाभौमाच्छज्ञेज्यार्कीणाम् ॥ ७ ॥

भाषाटीका–कर्कराशिमें अद्रि ७ अंग ६ अंग ६ नग ७ अब्धि ४ इन अंशोंके क्रमसे भौम शुक्र बुध गुरु शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ ७ ॥

सिंहेऽङ्गेष्वद्र्यङ्गाङ्गांशा ईज्यसितार्कीज्ञाराणाम् ॥ ८ ॥

भाषाटीका–सिंहराशिमें अंग ६ इषु ५ अद्रि ७ अंग ६ अंग ६ इन अंशोंके क्रमसे गुरु शुक्र शनि बुध मंगल हद्दाके स्वामी जानना ॥ ८ ॥

कन्यायां नगाशाब्ध्यगाक्ष्यंशा ज्ञाच्छेज्यारार्कीणाम् ॥ ९ ॥

भाषाटीका–कन्याराशिमें नग ७ आशा क० १० अब्धि ४ अग ७ अक्षि २ इन अंशोंके क्रमसे बुध शुक्र गुरु मंगल शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ ९ ॥

तुलेऽङ्गाष्टनगाद्र्यक्ष्यंशामन्दज्ञेज्यसिताराणाम् ॥ १० ॥

भाषाटीका–तुलराशिमें अंग ६ अष्ट ८ नग ७ अद्रि ७ अक्षि २ इन अंशोंके क्रमसे शनि बुध गुरु शुक्र मंगल हद्दाके स्वामी जानना ॥ १० ॥

कीटे सप्ताब्ध्यष्टशराङ्गांशावक्राच्छज्ञेज्यार्कीणाम् ॥ ११ ॥

भाषाटीका–वृश्चिक राशिमें सप्त ७ अब्धि ४ अष्ट ८ शर ५ अंग ६ इन अंशोंके यथाक्रम मंगल शुक्र बुध गुरु शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ ११ ॥

चापेर्केष्वब्धिशराब्ध्यंशा इज्यसितज्ञारमन्दानाम् ॥ १२ ॥

भाषाटीका–धनराशिमें अर्क १२ इषु ५ अब्धि ४ शर ५ अब्धि ४ इन अंशोंके क्रमसे गुरु शुक्र बुध मंगल शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ १२ ॥

नक्रे नगनगाब्ध्यष्टवेदांशाज्ञेज्याच्छार्किवक्राणाम् ॥ १३ ॥

भाषाटीका–मकरराशिमें नग ७ नग ७ अब्धि ४ अष्ट ८ वेद ४ इन अंशोंके क्रमसे बुध गुरु शुक्र शनि मंगल हद्दाके स्वामी जानना ॥ १३ ॥

घटे नगांगाद्रिपञ्चेषवः शुक्रज्ञेज्यारमन्दानाम् ॥ १४ ॥

भाषाटीका—कुंभराशीमें नग ७ अंग ६ अद्रि ७ पंच ५ इषु ५ इन अंशोंके यथाक्रम शुक्र बुध गुरु मंगल शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ १४ ॥

झषेर्काब्ध्यग्न्यङ्काक्ष्यंशाः सितेज्यज्ञारार्कीणाम् ॥ १५ ॥

भाषाटीका—मीनराशीमें अर्क १२ अब्धि ४ अग्नि ३ अंक ९ अक्षि २ इन अंशोंके क्रमसे शुक्र गुरु बुध मंगल शनि हद्दाके स्वामी जानना ॥ १५ ॥

हद्दाचक्रम् ।

मे. ०	वृ. १	मि. २	क. ३	सिं. ४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं. १०	मी. ११	
६ गु	८ शु	६ बु	७ मं.	६ गु	७ बु	६ श	७ मं	१२ गु	७ बु	७ शु	१२ शु	अंशस्वामी.
६ शु १२	६ बु १४	६ शु १२	६ शु १३	५ शु ११	१० शु १७	८ बु १४	४ शु ११	५ शु १७	७ गु १४	६ बु १३	४ गु १६	अंशस्वामी.
८ बु २०	८ गु २२	५ गु १७	६ बु १९	७ श १८	४ गु [illegible]	७ गु २१	८ बु १९	४ बु २१	४ शु १८	७ गु २०	३ बु १९	अंशस्वामी.
५ मं २५	५ श २७	७ मं २४	७ गु २६	६ बु २४	७ मं २८	७ शु २८	५ गु २४	५ मं २६	८ श २६	५ मं २५	९ मं २८	अंशस्वामी.
५ श ३०	३ मं ३०	६ श ३०	४ श ३०	६ मं ३०	२ श ३०	२ मं ३०	६ श ३०	४ श ३०	४ मं ३०	५ श ३०	२ श ३०	अंशस्वामी.

ग्रहे प्रथमद्रेष्काणगे तद्राशौ वह्नियोगे मध्यद्रेष्काणगे तद्राशौ सैके-न्त्यद्रेष्काणगे रसयोगे तद्राशौ मुनिभक्ते शेषेऽर्काद्याःपतयः ॥ १६ ॥

भाषाटीका—ग्रह प्रथमद्रेष्काणमें हो तो उसकी राशीके अंकमें ३ तीन मिलाना और मध्यद्रेष्काणमें हो तो उसकी राशीमें (१) एक युक्तकरना एवं अन्त्य (तीसरे) द्रेष्काणमें हो तो उसकी राशीमें ६ छ युक्तकरना नंतर उस राशीके ७ सातका भागदेना शेष १ बचे तो सूर्य २ बचे तो चन्द्र ३ तीन बचे तो मंगल ४ बचे तो बुध ५ बचे तो गुरु ६ बचे तो शुक्र ७ बचेतो शनि द्रेष्काणका स्वामी होताहै ॥ १६ ॥

द्रेष्काणचक्रम् ।

मे. ०	वृ. १	मि. २	क. ३	सिं. ४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं. १०	मी. ११		
मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	१०	अंश.
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	२०	अंश.
शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	३०	अंश.

टिप्पणी-१ द्रेष्काण १० अंशका होता है १० दश अंशपर्यंत प्रथमद्रेष्काण १० से २० अंशपर्यंत मध्यद्रेष्काण २० से ३० अंशपर्यंत अंत्यद्रेष्काणहोता है।

मेषसिंहचापेषु मेषाद्या वृषकन्यानक्रेषु मृगाद्या युग्मतुला-कुंभेषु तुलाद्याः कर्कालिमीनेषु कर्काद्या नवांशाः ॥ १७ ॥

भाषाटीका–मेष १ सिंह ५धन९ राशीमें मेषराशीको आदिले वृष२ कन्या ६ मकर १० राशिमें मकरराशीको आदिले मिथुन ३ तुला७ कुंभ११ राशीमें तुला राशीको आदिले कर्क ४ वृश्चिक ८ मीन १२ राशीमें कर्कराशिको आदिले नवांशविभाग की संख्यापर्यंत गिननेसे नवांश होता है–अर्थात् (जितनी संख्याके नवांशविभागमें होवे उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो राशी आवे उसका स्वामी नवांशका स्वामी होता है) ॥ १७ ॥

नवांशविभागचक्रम् ।									
१	२	३	४	५	६	७	८	९	नवांश वि.
३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०	अंश.
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	कला.

नवांशसारिणीचक्रम् ।													
मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	…	अंश.	कला.
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११		
१मे	१०म	७तु	४	१मे	१०म	७तु	४क	१मे	१०म	७तु	४क	३	२०
२वृ	११कुं	८वृ	५	२वृ	११कुं	८वृ	५सिं	२वृ	११कुं	८वृ	५सिं	६	४०
३मि	१२मी	९ध	६	३मि	१२मी	९ध	६कं	३मि	१२मी	९ध	६कं	१०	०
४क	१मे	१०म	७	४क	१मे	१०म	७तु	४क	१मे	१०म	७तु	१३	२०
५सिं	२वृ	११कुं	८	५सिं	२वृ	११कुं	८वृ	५सिं	२वृ	११कुं	८वृ	१६	४०
६कं	३मि	१२मी	९	६कं	३मि	१२मी	९ध	६कं	३मि	१२मी	९ध	२०	०
७तु	४क	१मे	१०	७तु	४क	१मे	१०म	७तु	४क	१मे	१०म	२३	२०
८वृ	५सिं	२वृ	११	८वृ	५सिं	२वृ	११कुं	८वृ	५सिं	२वृ	११कुं	२६	४०
९ध	६कं	३मि	१२	९ध	६कं	३मि	१२मी	९ध	६कं	३मि	१२मी	३०	०

गृहोच्चहद्दाद्रेष्काणनवांशाः पञ्चवर्गाः ॥ १८ ॥

१ एकराशीके ९ नव भागको नवांश कहतेहैं एक नवांशविभाग ३ तीन अंश २० कलाका होता है ।

भाषाटीका–ग्रह (राशिकेस्वामी) उच्च. हद्दा. द्रेष्काण और नवांश पंचवर्ग होते हैं । अर्थात् प्रथम ग्रहोंके राशीके स्वामी नंतर उच्च तदनंतर हद्दा द्रेष्काण नवांश लिखनेसे पंचवर्ग होता है॥ १८ ॥

यो ग्रहो यस्य त्र्यायत्रिकोणान्यतमगः ससुहृत् ॥ १९ ॥

भाषाटीका–जो ग्रह जिस ग्रहसे तीसरे ३ ग्यारहमें ११ नवमें ९ पांचमें ५ स्थानोंमें से किसी स्थानमें स्थित होवे वह उस ग्रहके मित्र होता है ॥ १९ ॥

केंद्रगस्तथा शत्रुः ॥ २० ॥ शेषस्थानस्थः समः ॥ २१ ॥

भाषाटीका–और जो ग्रह जिसग्रहसे केंद्र (१ । ४ । ७ । १०) स्थानोंमेंसे कोई भी स्थानमें स्थित होवे वह उसग्रहके शत्रु होता है ॥ २० ॥ शेष २ । ६ । ८ । १२ दूसरे छठे आठमें बारमें स्थानोंमें से कोई भी स्थानमें जिस ग्रहसे जो ग्रह स्थित होवे वह उसके सम होता है ॥ २१ ॥ इसप्रकार मैत्री चक्र बनाके उसके (मैत्रीचक्रके) अनुसार पंचवर्ग में आये हुवे ग्रहोंके नीचे मित्र सम शत्रु लिखना तदनंतर बल लिखना उसकी रीति कहते हैं ।

स्वगृहेत्रिंशल्लवाः सुहृद्भे सार्द्धद्वाविंशतिः
समभे तिथयः शत्रुभे सार्द्धसप्तबलम् ॥ २२ ॥

भाषाटीका–ग्रह स्वगृही (स्वराशीका) हो तो ३० तीस अंश मित्र राशीका हो तो २२ । ३० साढेबावीस अंश समराशीमें १५ पंदरा अंश शत्रुराशी में हो तो ७ । ३० साढ़ेसात अंश बल जानना ॥ २२ ॥

यथा भवेत्षड्भाल्पंतथानीचखेटांतरेतद्भागाङ्कभागस्स्वोच्चबलम् ॥२३॥

भाषाटीका–ग्रह और उसके नीचका अंतर जैसे होसके वैसे छः राशीसे अल्प करना (ग्रहमेंसे नीचको हीन करनेसे ६ छः राशीसे अल्प शेष बचे तो ग्रहमेंसे नीचको हीन करना और अधिक बचते होवे तो नीचमेंसे ग्रहको हीन करना) शेष राश्यंक अन्तरके अंश करके (राशीको ३० गुणीकरके अंश मिलाके) उसमें ९ नवका भागदेना लब्ध उच्चबल होवे॥ २३॥

स्वहद्दायां तिथ्यंशा मित्रहद्दायां सपादैका दशसमहद्दायां
सार्द्धसप्त शत्रुहद्दायां पादोनवेदांशा बलम् ॥ २४ ॥

भाषाटीका-ग्रह स्वराशीकी हद्दामें हो तो १५ पंदरा अंश मित्र ग्रहकी हद्दामें ११।१५ सवा ग्यारा अंश समग्रहकी हद्दामें ७।३० साढेसात अंश शत्रु ग्रहकी हद्दामें हो तो ३।४५ (पौनेचार अंश) बल जानना ॥ २४ ॥

स्वद्रेष्काणे दश मित्रद्रेष्काणे सार्द्धनगाः समद्रेष्काणे पञ्च
शत्रुद्रेष्काणे सार्द्धयमा अंशा बलम् ॥ २५ ॥

भाषाटीका-ग्रह स्वराशीके द्रेष्काणमें हो तो १० दश अंश मित्रग्रहके द्रेष्काणमें हो तो ७।३० साढेसात अंश समग्रहके द्रेष्काणमें ५ पांच अंश शत्रग्रहके द्रेष्काणमें हो तो २।३० अढाई अंश बल जानना ॥ २५ ॥

स्वनवांशे पञ्च मित्रांशे पादोनवेदाः समांशे सार्धयमा
रिप्वंशे सपादैको बलम् ॥ २६ ॥

भाषाटीका-ग्रह-स्वराशीके नवांशमें हो तो ५ पांच अंश मित्रनवांशमें ३।४५ पौनेचार अंश समनवांशमें हो तो २।३० ढाई अंश शत्रुनवांशमें हो तो १।१५ (सवा) अंश बल जानना ॥ २६ ॥

पंचवर्गबलकोष्टकम् ।

	स्व.	मित्र	सम	शत्रु	
स्व.	२० ०	२२ ३०	१५ ०	७ ३०	गृह
हद्दा.	१५ ०	११ १५	७ ३०	३ ४५	हद्दा
द्रेष्का.	१० ०	७ ३०	५ ०	२ ३०	द्रेष्काण
नवां.	५ ०	३ ४५	२ ३०	१ १५	नवांश

पंचवर्गबलैक्यवेदोद्धृते लब्धं विंशोपकात्मकं बलम् ॥ २७ ॥

भाषाटीका-पंचवर्गके बलके ऐक्य (योग) में ४ चारका भाग देना लब्ध आवे वह विश्वात्मक बल होवे ॥ २७ ॥

षडल्पोऽल्पबली रव्यधिकः पूर्णबली ॥ २८ ॥

भाषाटीका—आयाहुवा विश्वात्मक बल ६ छःसे अल्प होवे तो अल्पबली और १२ बारासे अधिक हो तो पूर्णबली ६ छःसे अधिक बारासे न्यून हो तो मध्यबली होता है ॥ २८ ॥

उदाहरण ।

सूर्य १०।१६।५३।३९ कुंभराशीका है इसका स्वामी शनि गृहका स्वामी आया एवं सूर्यका उच्च०।१०हद्दा—सूर्य कुंभराशीके ३हद्दांशमें (प्रथम७अंश फिर ६अंश मिलानेसे १३ होते हैं इससे अधिक अंश है सूर्य इसलिये दो अंश गये और तीसरे७अंशमें हुवा) है इसका स्वामी गुरु है ये सूर्यकी हद्दाका स्वामी हुवा—

द्रेष्काण—सूर्य मध्यद्रेष्काणमें है इसकी राशी १० में १ एक युक्त किया ११ हुवे सातका भागदिया ४ शेषबचे सूर्यको आदिले क्रमसे ४ बुध द्रेष्काणका स्वामी हुवा—नवांश—सूर्य कुंभराशीके ६ छठे नवांशविभागमें है (१६।४० से अधिक है) अतएव तुलाराशीसे नवांश विभागसंख्या६ पर्यंत गिननेसे मीनराशी आई इस्का स्वामी गुरु सूर्यके नवांशका स्वामी आया ऐसे ही सर्वग्रहके पंचवर्ग जानना—

बृहत्पंचवर्गचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
श मि	श्र मि	श मि	गु मि	मं श	गु मि	गु स	स्वगृह.
० १०	१ ३	९ २८	५ १५	३ ५	११ २७	६ २०	उच्च.
गु श	शु स	बु स	शु श	बु मि	मं स	गु स	हद्दा.
बु स	शु स	शु स	श श	र श	मं स	बु श	द्रेष्काण.
गु श्र	शु स	गु श्र	चं स	गु स्व	श श्र	बु श	नवांश.

मैत्रीचक्रम्.

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
श्र	श्र	श	गु	बु शु	गु	र चं मं	मित्र.
च शु	बु शु	बु शु	र मं चं	श	र चं मं	गु	सम.
चं मं गु	र म गु	र चं गु	शु श	र चं मं	बु श	बु शु	शत्रु.

मैत्रीसाधन उदाहरण.

सूर्यसें ११स्थानमें शनि स्थित है यह सूर्यके मित्र हुवा एवं सूर्य से १ स्थानमें चन्द्र मंगल १० स्थानमें गुरु स्थित है ये सूर्यके शत्रु हुवे और २ स्थानमें बुध शुक्र स्थित है वे सम हुवे—इसीप्रकार सर्वग्रहोंके मित्र शत्रु समझना ।

बलसाधन उदाहरण.

सूर्यके गृहका स्वामी शनी सूर्यका मित्र है इसलिये गृहमें सूर्यके नीचे २२। ३० अंश बल लिखा उच्चबल सूर्य १०।१६।५३।३९ नीच ६।१०।०।० सूर्य मेंसे नीच हीन किया४।६।५३।३९ शेष बचे इस्के अंश किये १२६।५३।३९ हुवे नवका भाग दिया लब्ध १४ आये शेष ० शून्य बची इस्को साठ गुणी की इसमें ५३ कला मिलाई ५३ हुए नवका भागदिया लब्ध ५ आये सूर्यका उच्चबल१४।५ हुवा—हद्दा—हद्दाका स्वामी गुरु सूर्यके शत्रु है अतः हद्दाका शत्रुबल ३।४५ सूर्यके नीचे हद्दामें लिखा—द्रेष्काण—सूर्यके द्रेष्काणका स्वामी बुध सूर्यके सम है इसलिये द्रेष्काणमें समका बल ५।० प्राप्त हुवा—

नवांश—सूर्यके नवांशका स्वामी गुरु सूर्यके शत्रु है अतएव नवांशमें सूर्यके नीचे शत्रु नवांश बल १ । १५ लिखा ये पंचवर्ग बल हुवा इन पाचोंका योग किया ४६।३५ पंचवर्गबलैक्य हुवा इस्में ४ चारका भाग दिया लब्ध ११। ३८।४५ आये ये सूर्यका विंशोपकात्मक बल हुवा ग्रहबल ६ से अधिक और १२बारासे न्यून है अतः मध्यमबल जानना एवं शेष चंद्रादिसर्वग्रहोंका आया

पंचवर्गबलचक्रम्।

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
२२ ३०	२२ ३०	२२ ३०	२२ ३०	७ ३०	२२ ३०	१५ ०	गृह.
१४ ५	९ ४२	१८ ५६	१ २९	५ ७	१९ ४७	१४ २७	उच्च.
३ ४५	७ ३०	७ ३०	३ ४५	११ १५	७ ३०	७ ३०	हद्दा.
५ ०	५ ०	५ ०	२ ३०	२ ३०	५ ०	२ ३०	द्रेष्का.
१ १५	२ ३०	१ १५	२ ३०	५ ०	१ १५	१ १९	नवां.
४६ ३५	४७ १२	५५ ११	३२ ३४	३१ २२	५६ २	४० ४२	योग.

विंशोपकात्मकबलम् ।						
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
११	११	१३	८	७	१४	१०
३८	४८	४७	११	५०	०	१०
४५	०	४५	०	३०	३०	३०
म.	म.	पू.	म.	म.	पू.	म.

चन्द्रार्कारेज्याः परस्परं मित्राणि शेषाश्च ॥ २९ ॥

भाषाटीका—अब अन्य आचार्यके मतकी स्थिरमैत्री लिखते हैं ॥ चंद्र, सूर्य, मंगल, गुरु, ये परस्पर मित्र जानना और शेष रहे बुध—शुक्र—शनि ये परस्पर मित्र जानना ॥ २९ ॥

इतरथा रिपवः ॥ ३० ॥

भाषाटीका—ऊपर कहेहुवे मित्रग्रहसे शेष रहे वे शत्रु होवे ॥ ३० ॥

स्थिरमैत्रीचक्रम् ।							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
चं. मं. गु.	र. मं. गु.	र. चं. गु.	शु. श.	र. चं. मं.	बु. श.	शु. बु.	मित्र.
बु. शु. श.	बु. शु. श.	बु. शु. श.	र. चं. मं. गु.	बु. शु. श.	र. मं. चं. गु.	र. चं. मं. गु.	

इस स्थिरमैत्रीके मित्रशत्रुके अनुसार पंचवर्गबल लानेकी रीति कहतेहैं—

स्वस्वाधिकारबलार्द्धं मित्रर्क्षे बलं तदर्धं शत्रुभे शेषं प्राग्वदित्येके॥३१॥

भाषाटीका—ग्रह ३० हद्दा १५ द्रेष्काण १० नवांश ५ के कहेहुवे अपने अपने स्वराशीके बलको स्वराशीगत ग्रहमें यथावस्थित (ग्रहमें ३०हद्दा में १५ द्रेष्काणमें १० नवांशमें ५) ही जानना और अपने अपने स्वका आधा आधा बल मित्रराशिगत ग्रहमें और मित्रराशिगत ग्रहका आधा आधा बल शत्रुराशिगत ग्रहमें जानना अर्थात् स्वमें पूरा मित्रमें स्वका आधा शत्रुमें मित्रका आधा लिखना जैसे गृहमें स्वराशीका ३० अंश बल है उसका आधा १५ मित्र

राशीगतका बल और उसका आधा ७ । ३० शत्रुराशिगतका बल हुवा है शेष रीति प्रथम कहे समान करना ऐसा कितनेक आचार्यका मत है ॥ ३१ ॥

उदाहरण ।

ग्रहमें—सूर्यकी राशीका स्वामी शनि स्थिर मैत्रीमें सूर्यका शत्रु है इसकारण सूर्यके नीचे गृहमें स्वके बल ३० के आधेका आधा लिखा ७ । ३० उच्चबल पूर्वानीत लिखा १४।५ हद्दामें—सूर्यकी हद्दाका स्वामी गुरु स्थिर मैत्रीमें सूर्यके मित्र है अतएव हद्दाके स्वराशीके बल १५ का आधा ७।३० लिखा—एवं सर्यके द्रेष्काणका स्वामी बुध स्थिरमैत्रीमें सूर्यके शत्रु है इसलिये द्रेष्काणके स्वराशीके बल १० का आधेका आधा २।३० द्रेष्काणमें सूर्यके नीचे लिखा नवांश—सूर्यके नवांशका स्वामी गुरु सूर्यके मित्र है अतएव नवांशबल ५।० का आधा २। ३० नवांशमें सूर्यके नीचे लिखा इन पाचोंका योग किया ३४ । ५ आया इनके ४ चारका भाग दिया लब्ध ८।३१।१५ विंशोपकात्मक बल हुवा ये ६ छहसे अधिक है इसवास्ते मध्यमबल हुवा—ऐसेही शेष ग्रहोंका बलजानना—इति—

बलचक्रम्.

	ग्रह	हद्दा	द्रेष्का	नवां.
स्व.	३०	१५	१०	५
मित्र	१५	७ ३०	५ ०	२ ३०
शत्रु	७ ३०	३ ४५	२ ३०	१ १५

स्थिरमैत्रीमित्रशत्रुवशेन पंचवर्ग-बलचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
७ ३०	७ ३०	७ ३०	७ ३०	१५ ०	७ ३०	७ ३०	गृह.
१४ ५	९ ४२	१८ ५६	१ २९	५ ७	१९ ४७	१४ २७	उच्च.
७ ३०	३ ४५	३ ४५	७ ३०	३ ४५	३ ४५	३ ४५	हद्दा.
२ ३०	२ ३०	२ ३०	५ ०	५ ०	२ ३०	५ ०	द्रेष्का.
२ ३०	१ १५	२ ३०	१ १५	५ ०	२ ३०	२ ३०	नवां.
३४ ५	२४ ४२	३५ ११	२२ ४४	३३ ५२	३६ २	३३ १२	योग.
८ ३१ १५	६ १० ३०	८ ४७ ४५	५ ४१ ०	८ २८ ०	९ ० ३०	८ १८ ०	विंशोपका-त्मकबलम्.
म.	म.	म.	म.	म.	म.	म.	बल.

१ बलका योग करना उसके चारका भाग देना आदि रीति ।

भादयोऽर्कांशांता द्वादश वर्गाः ॥ ३२ ॥

भाषाटीका–स्वगृहको आदिले द्वादशांशपर्यंत (स्वगृह १ होरा २ द्रेष्काण ३ चतुर्थांश ४ पंचमांश ५ षष्ठांश६ सप्तमांश ७ अष्टमांश८ नवमांश९ दशमांश १० एकादशांश ११ द्वादशांश १२) द्वादशवर्ग होवे ॥ ३२ ॥

भाद्यधिपाः प्राग्वत् ॥ ३३ ॥

भाषाटीका–राशियोंके स्वामी प्रथम कहे समान जानना ॥ ३३ ॥

विषमर्क्षे सूर्यशशिनोः समर्क्षे व्यत्ययेन होरा ॥ ३४ ॥

भाषाटीका--विषमराशीमें प्रथम सूर्य–दूसरी चन्द्रकी होरा होवे और सम-राशीमें विपरीत (प्रथम चन्द्र द्वितीय सूर्यकी) होरा होवें ॥ ३४ ॥

स्वेषु नवर्क्षेशा द्रेष्काणपाः ॥ ३५ ॥

भाषाटीका–प्रथम द्रेष्काणमें अपनी राशिका स्वामी दूसरे (मध्य) द्रेष्का-णमें अपनी राशीसे पांचमी राशीका स्वामी तृतीय (तीसरे) द्रेष्काणमें अपनी राशीसे नवमी राशीका स्वामी द्रेष्काणका स्वामी जानना ॥ ३५ ॥

केचित्प्राग्वत् ॥ ३६ ॥

भाषाटीका–केईक आचार्य जो पंचवर्गमें प्रथम द्रेष्काण कहाहै वही करना ऐसा कहतेहैं ॥ ३६ ॥

स्वर्क्षजकेंद्रेशा वेदांशपाः ॥ ३७ ॥

भाषाटीका–अपनी राशीसे प्रथम चतुर्थांशमें अपनी राशीका स्वामी दूसरेमें ४ चौथी राशीका स्वामी तीसरेमें ७ सातमी राशीका स्वामी चौथेमें १० दशमी राशीका स्वामी चतुर्थांशका स्वामी होवे ॥ १७ ॥

ओजर्क्षेभौमार्किज्यज्ञसिताः समर्क्षे प्रतिलोमतः शरांशपाः ॥ ३८ ॥

भाषाटीका–विषम (एकी) राशीमें प्रथम पंचमांशमें भौम दूसरेमें शनि

---

१ पंदरा १५ अंशकी १ एक होरा होती है (० अंशसे १५ अंशतक प्रथम होरा १५ अंशसे ३० अंशपर्यंत दूसरी होरा होवे–) २ दशअंशका १ द्रेष्काण होता है।

३ एकराशीके४चार भागको कहते हैं एक चतुर्थांश विभाग७ अंश३०तीस कलाका होताहै–

४ एकराशीके ५ पांचमें भागको कहते हैं– एक पंचमाश ६ छह अंशका होताहै–

चतुर्थांशविभाग० ।				
१	२	३	४	
७ ३०	१५ ०	२२ ३०	३० ०	अंश. कला.

तीसरेमें गुरु चौथेमें बुध पांचवेमें शुक्र समराशीमें विपरीत (१ शु. २ बुध. ३ गुरु. ४ शनि. ५ मंगल.) पंचमांशके स्वामी होते हैं ॥ ३८ ॥

विषमर्क्षे मेषाद्याः समभे तुलाद्याः षष्ठांशाः ॥ ३९ ॥

भाषाटीका—विषमराशीमें मेषराशीको आदिले समराशीमें तुलाराशीको आदिले गिननेसे षष्ठांशके स्वामी होते हैं ॥ ३९ ॥

ओजभे स्वभाद्या युग्मर्क्षे तत्सप्तमर्क्षाद्याः सप्तमांशाः ॥ ४० ॥

भाषाटीका—विषम राशीमें अपनी राशीको आदिले समराशीमें अपनी राशीसे जो सातमी राशी हो उसको आदिले सप्तमांश विभागकी संख्यापर्यंत गिननेसे जो राशी आवे उस्के स्वामी सप्तमांशके स्वामी होवे (ग्रह जितनी संख्याके सप्तमांशविभागमें होवे उतनी संख्यापर्यंत विषम राशिमें अपनी राशीसे, सममें सातमी राशीसे गिनना सप्तमांश होवे) ॥ ४० ॥

चरभेऽजाद्याः स्थिरभे चापाद्या उभयभे सिंहाद्या अष्टमांशाः ॥ ४१ ॥

भाषाटीका—चर (१ । ४ । ७ । १०) राशीमें मेषराशीको आदिले स्थिर (२ । ५ । ८ । ११) राशीमें धनराशीको आदिले द्विस्वभाव (३ । ६ । ९ । १२) राशीमें सिंहराशीको आदिले जितनी संख्याके अष्टमांश विभागमें ग्रह होवे उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो राशी आवे उसका स्वामी अष्टमांशका स्वामी होवे ॥ ४१ ॥

---

१ एकराशीके ६ छट्ठे भागको कहते हैं—एक षष्ठांश ५ पांच अंशका होताहै—

२ एक राशीके ७ हिस्सेको कहते हैं एक सप्तमांश विभाग ४ अंश १७ कलाका होता है।

३ एकराशीके ८ आठ भागको कहते हैं—एक अष्टमांश विभाग ३ अंश ४५ कलाका होता है।

सप्तमांशविभाग.

१	२	३	४	५	६	७
४	८	१२	१७	२१	२५	३०
१७	३४	५१	८	२५	४२	०
८	१७	२५	३४	४२	५२	०

अष्टमांशविभाग.

१	२	३	४	५	६	७	८	
३	७	११	१५	१८	२२	२६	३०	अंश
४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	कला

नवांशाः प्राग्वत् ॥ ४२ ॥

भाषाटीका–नवांशके स्वामी प्रथम कहचुके हैं उस्के समान करना ॥ ४२ ॥

यस्य ग्रहस्य दशांशैकादशांशौ कर्तव्यौ तदीयभादौ दशैकादश-गुणिते तद्दशांशादि भादिस्फुटः ॥ ४३ ॥

भाषाटीका–जिस ग्रहके दशांश तथा एकादशांश करना होवे उस (ग्रह) की राशी अंश कलाविकलाको दशांशमें १० दशगुणी एकादशांशमें ११ इग्यारा गुणी करना क्रमसे कलामें ६० साठका भाग देना लब्ध ऊपरके अंशमें युक्तकरना अंशमें ३० तीसका भाग देना लब्ध राशीमें मिलाना राशीमें १२ बाराका भाग देना शेषबचे वह दशांश एकादशांशके राश्यादि स्पष्टहोवे इस स्पष्टकी राशीके स्वामी दशांश एकादशांशके स्वामी होते हैं ॥ ४३ ॥

स्वभादर्कांशाः ॥ ४४ ॥

भाषाटीका–अपनी राशीसे जितनी संख्याके द्वादशांशमें ग्रह होवे उतनी संख्यापर्यंत गिननेसे जो राशी आवे उस्का स्वामी द्वादशांशका स्वामी होवे ॥ ४४ ॥

स्वमित्रोच्चशुभवर्गाःशुभा अन्येऽधमाः ॥ ४५ ॥

भाषाटीका–स्व, मित्र, उच्च और शुभग्रहके वर्ग शुभ अन्य (शत्रु सम नीच और पाप आदिकके) वर्ग अधम (नेष्ट) होते हैं–अर्थात् जिस ग्रहके द्वादशवर्गमें शुभग्रहोंका स्वराशिस्थ मित्रराशिस्थ, उच्चराशिस्थ, ग्रहोंका वर्ग अधिक होवे वह ग्रह शुभफल देगा और जिसके द्वादशवर्गमें पापग्रहोंका शत्रुराशिस्थ ग्रहोंका नीचगतग्रहोंका वर्ग अधिक आवे वह ग्रह श्रेष्ठ होवे तथापि नेष्ट फल देगा ॥ ४५ ॥

---

१ एक राशीके १२ बारा भागको कहते हैं–एक द्वादशांश २ अंश ३० कला (ढाई अंश) का होता है–

द्वादशांशविभाग.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	विभागसंख्या.
२ ३०	५ ०	७ ३०	१० ०	१२ ३०	१५ ०	१७ ३०	२० ०	२२ ३०	२५ ०	२७ ३०	३० ०	अंश. कला.

वर्गेशे स्वर्क्षगे विंशतिमित्रर्क्षेतिथयः
समर्क्षे दशारिपुभे पंच बलम् ॥ ४६ ॥

भाषाटीका—द्वादशवर्गके वर्गका स्वामी स्वराशीका हो तो वीस २० अंश मित्रराशीका हो तो १५ पंदरा अंश समराशीका हो तो १० दश अंश शत्रुराशीका हो तो ५ पांच अंश बल जानना ॥ ४६ ॥

स्व.	मि.	स	श.
२०	१५	१०	५
०	०	०	०

द्वादशवर्गजबलैक्येऽर्कभक्ते विंशोपकाः ॥ ४७ ॥

भाषाटीका—द्वादशवर्गके बलके योगमें बारा १२ का भाग देना लब्ध विंशोपकात्मक बल होवे ॥ ४७ ॥

उदाहरण।

सूर्य १०।१६।५३।३९ की राशी कुंभका स्वामी शनी सूर्यके गृहका स्वामी हुवा—होरा—सूर्य विषमराशीकी दूसरी होरामें है इस्का स्वामी चंद्र होराका स्वामी हुवा—द्रेष्काण—सूर्य मध्यद्रेष्काणमें है इस कारण अपनी राशी ११ कुंभसे पांचमी राशी ३ मिथुनका स्वामी बुध द्रेष्काणका स्वामी आया—एवं सूर्य तृतीय चतुर्थांश विभागमें है इसलिये अपनी राशी ११ से सातमी राशी ५ सिंहका स्वामी सूर्य सूर्यके चतुर्थांशका स्वामी हुवा— पंचमांश—विषमराशिस्थित सूर्य तीसरे पंचमांशविभागमें है अतएव विषमराशीमें तीसरे पंचमांशका स्वामी गुरु सूर्यके पंचमांशका स्वामी हुवा—एवं सूर्य ४ चौथे षष्ठांशमें है और विषमराशीका है इसलिये मेषराशीसे षष्ठांशविभागकी संख्या ४ चार पर्यंत गिना कर्कराशी आई इस्का स्वामी चंद्र सूर्यके षष्ठांशका स्वामी हुवा एवं सप्तमांशविभागमें सूर्य ४ चतुर्थ संख्याके विभागमें स्थित है यह विषमराशी गत है इसवास्ते अपनी राशी ११ कुंभसे ४ चार पर्यंत गिननेसे ४ चोथी वृषभ राशी आई इस्का स्वामी शुक्र सूर्यके सप्तमांशका स्वामी हुवा—एवं अष्टमांश-विभागमें सूर्य ५ पांचमें अष्टमांशमें स्थित है और स्थिर राशी ११ का है अतः धनराशीको आदिले ५ पांच संख्यापर्यंत गिननेसे मेषराशि आई इस्का स्वामी भौम सूर्यके अष्टमांशका स्वामी हुवा—नवांशके स्वामी लानेकी युक्ती प्रथम कही है उसी रीतिके समान नवांश विभागमें ६ छठे नवांशमें सूर्य स्थित है इस कारण

तुलराशी (३।७।११ के नवांश ७ तुलसे गिनना) से ६ संख्यापर्यंत गिननेसे १२ मीनराशी आइ इसका स्वामी गुरु सूर्यके नवांशका स्वामी हुवा--सूर्य १० । १६ । ५३ । ३९ को दशांश करना है इस कारण १० दसगुणा किया १०० । १६० । ५३० । ३९० हुवा--विकला कला साठसे अधिक हैं इससे विकला (३९०) में साठका भाग दिया लब्ध ६ कलामें कला (५३६) के साठका भाग दे लब्ध ८ अंशमें युक्तकिये अंश तीससे अधिक हैं इसलिये अंश (१६८) में ३० तीसका भाग दिया लब्ध ५ पांच राशीके अंक १०० में युक्त किया १०५ हुये राशी (१०५) में १२ बाराका भाग दिया शेष ९ । १८ । ५६ । ३० राश्यादिक बचा ये सूर्यका दशांश हुवा इसकी राशी १० का स्वामी शनी सूर्यके दशांशका स्वामी हुवा एवं एकादशांशमें सूर्य १० । १६ । ५३ । ३९ को ११ ग्यारा गुणा किया ११० । १७६ । ५८३ । ४२९ हुवा विकला कलामें साठका अंशमें तीसका राशीमें १२ बाराका क्रमसे भाग देनेसे शेष बचे ८ । ५ । ५० । ९ यह सूर्यका एकादशांश स्पष्टहुवा इसकी राशी ९ धनका स्वामी गुरु सूर्यके एकादशांशका स्वामी हुवा—एवं अपनी राशी ११ कुम्भसे सूर्य ७ सातमें द्वादशांशमें है इसलिये ७ सातसंख्यापर्यंत गिननेसे ५ सिंह राशी आई इसका स्वामी सूर्य सूर्यके द्वादशांशका स्वामी हुवा—इस प्रकार सूर्यके द्वादशवर्ग हुये ऐसेही शेष ग्रहोंके तथा भावोंके और सहमादिकोंके द्वादशवर्ग जानना—सूर्यके द्वादशवर्गमें स्वराशीके वर्ग २ मित्रके २ शुभग्रहके ७ वर्ग हैं इनका योग किया ११ ग्यारा होते हैं इसकारण सूर्य शुभफल देगा—ऐसेही सर्वग्रहोंके शुभाशुभफल समझना—

द्वादशवर्गबलउदाहरण ।

सूर्यके—ग्रह (राशी) का स्वामी शनी सूर्यके मित्र है इसकारण १५ । ० पंधराका बलग्रहमें प्राप्त हुवा एवं होरामें सूर्यकी होराका स्वामी चन्द्र सूर्यका शत्रु है अतः ५ । ० बल प्राप्त हुवा—एवं द्रेष्काणमें द्रेष्काणपती बुधका समराशीका बल १० । ० चतुर्थांशमें चतुर्थांशपति सूर्यका स्वका २० । ० बल पंचमांशमें पंचमांशके स्वामी गुरुका शत्रुका ५ । ० बल षष्ठांशमें षष्ठांशके स्वामी चन्द्रका शत्रुराशीका बल ५ । ० सप्तमांशमें, सप्तमांशके स्वामी शुक्रका समराशीका १० । ०

बल अष्टमांशमें अष्टमांशपति भौमका शत्रुराशीका ५। ० बल नवांशमें नवांशका स्वामी गुरुका शत्रुका ५। ० बल—दशांशमें दशांशके स्वामी शनीका मित्र बल १५। ० एकादशांशमें एकादशांशके स्वामी गुरुका शत्रुबल ५। ० द्वादशांशमें द्वादशांशका स्वामी सूर्य स्वराशीका है इसलिये स्वका २०। ० बल प्राप्त हुवा—ये सूर्यके द्वादशवर्गका बल हुवा इसका योग किया १२०। ० आया इसमें १२ बाराका भाग दिया लब्ध १०। ० सूर्यका विंशोपकात्मक द्वादशवर्ग बल हुवा ऐसेही शेष ग्रहोंका जानना—इति ॥

ग्रहाणांद्वादशवर्गचक्रम्.

र.	च	मं	बु.	गु.	शु.	श.	
१० श मि	११ श मि	११ श मि	१२गु मि	८ म श	१२ गु मि	९ गु स	गृ.
४ चं श	५ र श	५ र श	४ चं स	५ र श	५ र श	५र स	हो.
३ बु स	११ श मि	११ श मि	१२गु मि	१२गु स्व	८ म स	९ गु स	द्रे.
५ र स्व	११श मि	२ शु स	१२गु मि	२ श मि	९ गु मि	१२गु स	च.
९ गु श	१ मं श	११ श मि	२ शु श	१०श स	८ मं स	११श स्व	पं.
४ चं श	१ मं श	२ शु स	७ श श	१० श स	१२गु मि	२शु श	ष.
२ शु स	११श मि	१२ गु श	६ बु स्व	६ बु मि	११ श श	११श २०	स.
१ म श	९ गु श	११ श मि	५ र स	२ शु मि	११ श श	७शु श	अ.
१२गु श	७ शु स	९ गु श	४ चं स	९ गु स्व	११ श श	३बु श	न.
१०श मि	५ र श	७ शु स	३ बु स्व	५ र श	११ श श	१२गु स	द.
८ ग श	३ बु स	५ र श	२ शु श	१२ गु स्व	११ श श	८मं मि	ए.
५ र स्व	११श मि	२ शु स	१२ गु मि	३ बु मि	१० श श	१२गु स	द्वा.
११	८	१०	११	७	३	११	शुभ.
१	४	२	१	५	९	१	पाप.
श्रे.	श्रे.	श्रे.	श्रे.	श्रे.	ने.	श्रे	फल

द्वादशवर्गबलचक्रम्.

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
१५ ०	१५ ०	१५ ०	१५ ०	५ ०	१५ ०	१० ०	गृह.
५ ०	५ ०	५ ०	१० ०	५ ०	१० ०	१५ ०	होरा.
१० ०	१५ ०	१५ ०	१५ ०	२० ०	१० ०	१० ०	द्रेष्काण.
२० ०	१५ ०	१० ०	१५ ०	१५ ०	१५ ०	१० ०	चतुर्थांश.
५ ०	५ ०	१५ ०	५ ०	१० ०	१० ०	२० ०	पंचमांश.
५ ०	५ ०	१० ०	५ ०	१० ०	१५ ०	५ ०	षष्ठांश.
१० ०	१५ ०	५ ०	२० ०	१५ ०	५ ०	२० ०	सप्तमांश.
५ ०	५ ०	१५ ०	१० ०	१५ ०	५ ०	५ ०	अष्टमांश.
५ ०	१० ०	५ ०	१० ०	२० ०	५ ०	५ ०	नवमांश.
१५ ०	५ ०	१० ०	२० ०	५ ०	५ ०	१० ०	दशांश.
५ ०	१० ०	५ ०	५ ०	२० ०	५ ०	१५ ०	एकादशांश.
२० ०	१५ ०	१० ०	१५ ०	१५ ०	५ ०	१० ०	द्वादशांश.
१२० ०	१२० ०	१२० ०	१४५ ०	१५५ ०	१०५ ०	१३५ ०	योग.
१० ०	१० ०	१० ०	१२ ५	१२ ५५	८ ४५	११ १५	विंशोपकात्मक बल.
म.	म.	म.	पू.	पू.	म.	म.	बल.

स्वभे शतं कलानां मित्रभे पंचाशत् शत्रुभे पञ्चविंशतिः ॥ ४८ ॥

भाषाटीका—स्वराशीमें १०० सो कला मित्रराशीमें ५० पचाश कला शत्रुराशीमें २५ पचीस कला स्थिर मैत्रीके मित्रशत्रुवशात् द्वादशवर्ग बल जानना ४८॥

स्व.	मि.	श.	
१०० ०	५० ०	२५ ०	कला.

तदैक्ये षष्टिभक्ते विंशोपका इत्येके ॥ ४९ ॥

भाषाटीका—स्थिरमैत्रीके मित्रशत्रुवशात् लायेहुवे द्वादशवर्गके बलके ऐक्य (योग) में ६० साठका भाग देना लब्ध आवे वह विंशोपकात्मक बल होवे ऐसा कितनेक आचार्यका मत है ॥ ४९ ॥

उदाहरण।

द्वादशवर्गमें सूर्यकी राशीका स्वामी शनि स्थिर मैत्रीमें सूर्यका शत्रु है इसलिये सूर्यके नीचे गृहमें २५।०कला बल लिखा--एवं होराका स्वामी चंद्र मित्र है सूर्यके इसकारण ५०कला बल होरामें लिखा--द्रेष्काणका स्वामी बुध शत्रु है सबब शत्रुका २५कला बल द्रेष्काणमें चतुर्थांशमें सूर्य स्वराशीका है अतः स्वका १००कला बल--एवं पंचमांशमें--पंचमांशका स्वामी गुरु मित्र है अतएव मित्रका ५० कला बल और षष्ठांशका स्वामी चंद्रभी मित्र है इसलिये षष्ठाशमेंभी ५० कला बल लिखा और सप्तमांशका स्वामी शत्रु है अतः सप्तमांशमें शत्रुका २५ कला बल अष्टमांशका स्वामी भौम मित्र है इसलिये अष्टमांशमें मित्रका ५० कला बल नवांशका स्वामी गुरुमित्र है सबब नवांशमें मित्रका बल५०कला और दशांशका स्वामी शनि सूर्यके शत्रु है इसवास्ते दशांशमें शत्रुका २५ कला बल लिखा और एकादशांशका स्वामी गुरु मित्र तथा द्वादशांशका स्वामी सूर्य स्वका है इसलिये एकादशांशमें मित्रका ५० कला बल और द्वादशांशमें स्वका १०० कला बल लिखा ये द्वादशवर्ग बल हुवा इसका योग किया ६०० आये ६० साठका भाग दिया लब्ध १०।० विंशोपकात्मक सूर्यका द्वादशवर्ग बल हुवा ऐसेही शेष चन्द्रादिग्रहोंका द्वादशवर्गबल जानना—इति ॥

स्थिरमैत्रीवशात् द्वादशवर्गबलचक्रम्.

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.		
२५ ०	२५ ०	२५ ०	२५ ०	५० ०	२५ ०	२५ ०	१	गृह.
५० ०	५० ०	५० ०	२५ ०	५० ०	२५ ०	२५ ०	२	होरा.
२५ ०	२५ ०	२५ ०	२५ ०	[illegible] ०	२५ ०	२५ ०	३	द्रेष्काण.
१०० ०	२५ ०	२५ ०	२५ ०	२५ ०	२५ ०	२५ ०	४	चतुर्थांश.
५० ०	५० ०	२५ ०	५० ०	२५ ०	२५ ०	१०० ०	५	पंचमांश.
५० ०	५० ०	२५ ०	५० ०	२५ ०	२५ ०	५० ०	६	षष्ठांश.
२५ ०	२५ ०	५० ०	१०० ०	२५ ०	५० ०	१०० ०	७	सप्तमांश.
५० ०	५० ०	२५ ०	२५ ०	२५ ०	५० ०	५० ०	८	अष्टमांश.
५० ०	२५ ०	५० ०	२५ ०	१०० ०	५० ०	५० ०	९	नवमांश.
२५ ०	५० ०	२५ ०	१०० ०	५० ०	५० ०	२५ ०	१०	दशमांश.
५० ०	२५ ०	५० ०	५० ०	१०० ०	५० ०	२५ ०	११	एकादशांश.
१०० ०	२५ ०	२५ ०	२५ ०	२५ ०	५० ०	२५ ०	१२	द्वादशांश.
६०० ०	४२५ ०	४०० ०	५२५ ०	६०० ०	४५० ०	५२५ ०		योग.
१० ०	७ ५	६ ४०	८ ४५	१० ०	७ ३०	८ ४५		विंशोपकात्मकबलम
म.	म.	म.	म.	म.	म.	म.		बल.

स्वभस्वोच्चर्क्षान्यतरस्थितौ ग्रहस्य प्रथमं हर्षपदम् ॥ ५० ॥

भाषाटीका–स्वराशी वा अपनी उच्चराशीमेंसे कोई भी राशीका जो ग्रह होवे (ग्रह स्वराशीका हो वा अपनी उच्चराशीका हो तो) उस ग्रहका प्रथम हर्ष-पद होवे ॥ ५० ॥

गोत्रिषट्कीशबाणांत्यगेषु सूर्यादिषु द्वितीयम् ॥ ६१ ॥

भाषाटीका–सूर्यको आदिले गो कहिये ९ त्रि क० ३ ०षट् क ६ कु कं० १ ईश क० ११ बाणक० ५ अंत्य क० १२ बारमें स्थानमें यथाक्रम ग्रह स्थित

हो तो द्वितीय हर्षपद होवे-(सूर्य ९ चन्द्र ३ मङ्गल ६ बुध १ गुरु ११ शुक्र ५ शनि १२ में स्थानमें हो तो दूसरा हर्षपद होवे) ॥ ५१ ॥

सूर्यारेज्या नराः शेषाः स्त्रियः॥ ५२ ॥

भाषाटीका-सूर्य मंगल गुरु पुरुषग्रह,शेष चन्द्र बुध शुक्र शनि स्त्रीग्रह जानना ५२

दिने पुमान् रात्रौ स्त्री तृतीयम् ॥ ५३ ॥

भाषाटीका-दिनमें वर्षप्रवेश हो तो पुरुषग्रह रात्रिमें स्त्रीग्रह बलवान् जानना तृतीय तीसरा हर्षपद होवे ॥ ५३ ॥

तुर्यभतस्त्रिषु त्रिषु नृस्त्रियौ तुर्यम् ॥ ५४ ॥

भाषाटीका-चतुर्थभावसे तीन तीन स्थानमें पुरुषग्रह और स्त्रीग्रह स्थित हो तो चतुर्थ हर्षपद होवे-(४ । ५ । ६ पुरुषग्रह ७ । ८ । ९ स्त्रीग्रह १० । ११ । १२ पुरुषग्रह १ । २ । ३ स्त्रीग्रह स्थित हो तो ४ हर्षपद जानना)॥५४॥

चतुर्ष्वेषु प्रत्येकं पंचविंशोपका बलम् ॥ ५५ ॥

भाषाटीका-इन चारही हर्षपदोंमें प्रत्येक (एक एकके प्रति) के पांच पांच विंशोपका बल जानना ॥ ५५ ॥

इति बलाध्यायस्तृतीयः ।

उदाहरण ।

यहां शुक्र उच्चराशीका है इसलिये प्रथम हर्षपदमें ये बलवान् हुवा-सूर्यको आदिले कोई ग्रह द्वितीय हर्षपद स्थानोंमें नहीं है अतः द्वितीय हर्षपद किसीका नहीं आया-दिनमें वर्षप्रवेश हुवा है इससे पुरुषग्रह (सूर्य मंगल गुरु) तृतीयहर्ष बलदाता हुये एवं चतुर्थस्थानसे तीन तीनमें पुरुष स्त्री ग्रह देखनेसे ८ आठमें शनि स्त्रीग्रह और १० । ११ में सूर्य, मंगल, पुरुषग्रह स्थित हो ये चतुर्थ हर्षपदमें बली हुवे-इति ॥

हर्षपदचक्रम्.

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	
०	०	०	०	०	५	०	प्रथम.
०	०	०	०	०	०	०	द्वितीय.
५	०	५	०	५	०	०	तृतीय.
५	०	५	०	०	०	५	चतुर्थ.
१०	०	१०	०	५	५	५	योग.

इति श्रीज्योतिर्विद्वरश्रीमन्महादेवकृतवर्षदीपिकाख्यताजिकग्रन्थे तदंगजश्रीनिवासविरचितायां सोदाहरणभाषाव्याख्यायां बलसाधनाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

अथ दृष्टिसाधनमाह

पश्योनदृश्येद्विदिग्भशेषेतद्विनांशा अर्धास्तिथिशु-
द्धास्तथा त्र्यंकशेषे भोग्यांशा एव वेदाष्टशेषे च सार्द्धा
अंशाः पञ्चवेदतः शुद्धास्तथैव तर्काभ्रशेषेंशाद्विघ्नाः
षष्टिशुद्धाः कलाद्याहृष्टिरन्यर्क्षे तदभावः ॥ १ ॥

इति दृष्टेरध्यायः ।

भाषाटीका–पश्य[1]ग्रहको हीन करना दृश्यग्रहमेंसे दो २ राशी १० दशराशी शेष बचे तो राशीके विना अंशोंको आधे करना और १५ पंदरामेंसे शोधना तैसेही तीन ३ राशी ९ नवराशी शेष बचे तो अंशोंको तीसमेंसे शोधना–एवं ४ चार राशी ८ आठराशी शेष बचे तो राशी विना अंशोंको डेढे (अंशोंको आधे करके उन्ही अंशोंमें मिलाना) करना और ४५ पैंतालीसमेंसे शोधना इसीप्रका ६ छःराशी० शून्यराशी शेष बचे तो राशीविना अंशोंको दोगुणे करना ६० साठमेंसे शोधना कलादिक दृष्टि होवे और इन उक्तराशियोंसे अन्यराशी शेष बचे तो दृष्टिका अभाव (दृष्टिनहीं) जानना ॥ १ ॥

दृष्टिचक्रम्.

२	१०	३	९	४	८	०	६
अंशा-ऽर्द्धा १५शु.	अंशा-ऽर्द्धा १५ शु.	अंशा- ३० शु.	अंशा- ३० शु.	अंशा- डेढा ४५. शु.	अंशा- डेढा ४५ शु.	अंशा- द्विगु ६० शु.	अंशा- द्विगुणा ६०शु.

---

१ जिस ग्रहपर दृष्टि करना हो वह दृश्य जो देखना हो वह पश्य (पश्यतीति द्रष्टा दर्शनार्हो दृश्यः)

ग्रहोपरिग्रहाणां दृष्टिचक्रम् ।

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	
०	०	०	०	०	०	०	
०	२६	४१	०	१	४	११	र.
०	५९	१६	०	२	५	३१	
०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	९	१२	०	चं.
०	०	०	३६	२७	३०	०	
०	०	०	०	०	०	०	
०	४५	०	०	५	८	०	मं.
०	४४	०	०	४३	४६	०	
०	०	०	०	०	०	०	
३०	०	११	०	१७	०	४	बु.
३८	०	५४	०	२२	०	१०	
०	०	०	०	०	०	०	
२७	११	१८	१८	०	०	०	गु.
५७	२७	३५	५९	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	१३	३५	०	१४	शु.
०	०	०	६	५१	०	५३	
०	०	०	०	०	०	०	
६	१०	१३	२१	१८	२२	०	श.
५९	१४	४८	४१	४	४२	०	

उदाहरण ।

दृश्य सूर्य १० । १६ । ५३ । ३९ मेंसे पश्य चन्द्र । १० । ० । २२ ।५६ को हीन किया शेष ० । १६ । ३० । ४३ बचे इसके राशी विना अंशादिक १६ । ३० । ४३ को द्विगुण किये ३३ । १ । २६ हुवे इनको ६० साठमेंसे सोधे २६ । ५९ कलादिक सूर्यपर चन्द्रकी दृष्टि हुई इसीतरह क्रमसे सर्व ग्रहोंपर ग्रहोंकी दृष्टी जानना– और भावपर दृष्टि करना हो तो भावदृश्यग्रह पश्य समझके दृष्टि करना भावोपरि ग्रहोंकी दृष्टि होवे।

इति दृष्टिसाधनाध्यायश्चतुर्थः

अथ सहमाऽध्यायः ।

सर्वत्रसहमसाधने शुद्ध्याश्रयतः शोध्यहीने
क्षेपकयुक्ते सहमसिद्धिः ॥ १ ॥

भाषाटीका–सर्व सहमसाधनेमें शुद्ध्याश्रय[१]मेंसे शोध्यको हीन करके क्षेपक युक्त करना सहमसिद्ध होवे ॥ १ ॥

शोध्यभादेरारभ्य शुद्ध्याश्रयभादितोऽर्वाक्
क्षेपाभावे सिद्धसहमभं सैकं कार्यम् ॥ २ ॥

भाषाटीका–शोध्यकी राशी अंशको आदि ले शुद्ध्याश्रयकी राशी अंशके

१ जिसमेंसे हीन करना कहा हो व शुद्ध्याश्रय और जिसको हीन करनेका कहा है वह शोध्य।

पहले क्षेपककी राशी नहीं आवे तो सिद्धसहमकी राशीमें एक युक्त करना शुद्धयाश्रय और शोध्यके बीचमें क्षेपक नहीं आवे तो एक मिलाना) ॥ २॥

क्षेपकानुक्तौ लग्नं योज्यम् ॥ ३॥

भाषाटीका—जिस सहमसाधनमें क्षेपक नहीं कहा हो उसमें लग्न युक्त करना (लग्नको क्षेपक समझना) ॥ ३ ॥

समयानुक्तौ रात्रौ शोध्यशोधकौ व्यस्तौ कार्यौ ॥ ४ ॥

भाषाटीका—जिस सहमसाधनमें समय नहीं कहा हो उस सहमके साधनमें रात्रीमें वर्षप्रवेश हो तो शोध्यशोधकको व्यस्त (उलटे) करना अर्थात् शोध्यको शुद्धयाश्रय और शुद्धयाश्रयको शोध्य मानके सहम करना ॥ ४ ॥

सूर्योने चन्द्रे पुण्यसहमः ॥ ५ ॥

भाषाटीका—चंद्रमेंसे सूर्यको हीन करनेसे पुण्यसहम होवे ॥ ५ ॥

चन्द्रोनार्के गुरुज्ञानज्ञातिसहमानि ॥ ६ ॥

भाषाटीका—चन्द्रमाको सूर्यमेंसे हीन करनेसे गुरु,ज्ञान,ज्ञाति,सहम होतेहैं ॥ ६ ॥

पुण्योनेज्ये यशोदेहसैन्यघातम् ॥ ७ ॥

भाषाटीका—गुरुमेंसे पुण्यसहमको हीन करनेसे यश, देह, सैन्य, घात, सहम होतेहैं ॥ ७ ॥

पुण्योनज्ञाने शुक्रान्विते मित्रम् ॥ ८ ॥

भाषाटीका—पुण्यसहमको ज्ञानसहममेंसे हीन करके शुक्र मिलानेसे मित्र सहम होवे ॥ ८ ॥

कुजोनपुण्ये माहात्म्यधैर्यशौर्यम् ॥ ९ ॥

भाषाटीका—पुण्यसहममेंसे मंगलको हीन करनेसे माहात्म्य धैर्य शौर्य सहम होते हैं ॥ ९ ॥

शुक्रोनमन्दे इच्छा ॥ १० ॥

भाषाटीका—शुक्रको शनिमेंसे हीन करनेसे इच्छासहम होवे ॥ १० ॥

लग्नेशोनारे सामर्थ्यं चेदंगेशो भौमस्तदा जीवाच्छोधनीयः ॥ ११ ॥

भाषाटीका—लग्नके स्वामीको भौममेंसे हीन करनेसे सामर्थ्य सहम होवें यदि लग्नेश्वर भौमही होवें तो गुरुमेंसे लग्नेश्वरको हीन करना ॥ ११ ॥

सद्गा मंदोनजीवे भ्राता ॥ १२ ॥

भाषाटीका–सदा अर्थात् दिनरात्रिमें सदाही शनिको हीन करना गुरुमेंसे भ्राता सहम होवे ॥ १२ ॥

दिने चन्द्रोनेज्ये सार्के रात्रावर्कोनजीवे सेन्दौ गौरवम् ॥ १३ ॥

भाषाटीका–दिनका इष्ट हो तो चन्द्रको हीन करना गुरुमेंसे सूर्ययुक्त करना रात्रिका इष्ट हो तो सूर्यको हीन करना गुरुमेंसे चन्द्र युक्त करना गौरवसहम होवे ॥ १३ ॥

भानूनार्किजे राजतातौ ॥ १४ ॥

भाषाटीका–सूर्यको हीन करना (निकालना) शनिमेंसे राज और तात (पिता) सहम होवे ॥ १४ ॥

शुक्रोनेन्दौ माता कान्तिश्च ॥ १५ ॥

भाषाटीका–शुक्रको निकालना चन्द्रमेंसे माता और कान्ति सहम होवे ॥ १५ ॥

इज्योनमन्दे जीवितोपायौ ॥ १६ ॥

भाषाटीका–गुरुको हीन करना शनिमेंसे जीवित और उपायसहम होवे ॥ १६ ॥

ज्ञोनारे कर्म ॥ १७ ॥

भाषाटीका–बुधको घटाना भौममेंसे कर्मसहम होवे ॥ १७ ॥

सदाचन्द्रो नाङ्गे रोगः ॥ १८ ॥

भाषाटीका–दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदाही चन्द्रको हीन करना लग्नमेंसे रोगसहम होवे ॥ १८ ॥

लग्नपोनेन्दौ कामः कर्काङ्गे तु सदा लग्नेशोनार्के ॥ १९ ॥

भाषाटीका–लग्नके स्वामीको हीन करना चंद्रमेंसे कामसहम होवे कर्कलग्न होवे तो सदा (दिनरात्रमें) लग्नेशको सूर्यमेंसे हीन करना सो कामसहम होवे ॥ १९ ॥

वक्रोनेज्ये कलिक्षमे ॥ २० ॥

भाषाटीका–मंगलको हीन करना गुरुमेंसे कलि और क्षमा सहम होवे ॥ २० ॥

मन्दोनेज्ये ज्ञान्विते शास्त्रम् ॥ २१ ॥

भाषाटीका—शनिको हीन करना गुरुमेंसे बुध मिलाना शास्त्रसहम होवे ॥ २१ ॥

सदा चन्द्रोनज्ञे बंधुः ॥ २२ ॥

भाषाटीका—दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदाही चन्द्रको हीन करना बुधमेंसे बंधुसहम होवे ॥ २२ ॥

ज्ञोनेन्दौ पराश्रयः ॥ २३ ॥

भाषाटीका—बुधको हीन करना चन्द्रमेंसे पराश्रय सहम होवे ॥ २३ ॥

सदा चन्द्रोनाष्टमे मन्दान्विते मृतिः ॥ २४ ॥

भाषाटीका—दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदाही चन्द्रको हीन करना अष्टम भावमेंसे शनि युक्त करना मृत्यु सहम होवे ॥ २४ ॥

सदा धर्मेशोनधर्मे धनेशोनधने लाभेशोनलाभे देशान्तरधनलाभाः ॥२५ ॥

भाषाटीका—दिनका इष्ट हो वा रात्रीका सदाही नवम भावके स्वामीको हीन करना नवम भावमेंसे धन भावके स्वामीको हीन करना धनभावमेंसे लाभभावके स्वामीको हीन करना लाभभावमेंसे देशान्तर १ धन२ लाभ३ सहम होवे॥ २५॥

सदा सूर्योनभृगौ पराङ्गना ॥ २६ ॥

भाषाटीका—दिनका इष्ट हो वा रात्रीका सदाही सूर्यको हीन करना शुक्रमेंसे पराङ्गना (परस्त्री) सहम होवे ॥ २६ ॥

मन्दोनेन्दौ दास्यम् ॥ २७ ॥

भाषाटीका—शनिको हीन करना चन्द्रमेंसे दास्य सहम होवे ॥ २७ ॥

सदा बुधोनचन्द्रे वाणिज्यम् ॥ २८ ॥

भाषाटीका—सदा (दिनरात्रमें) बुधको हीन करना चंद्रमेंसे वाणिज्य सहम होवे ॥ २८ ॥

दिवार्कोनमन्दे सूर्यभपयोगे रात्रौ चन्द्रोनमन्दे चन्द्रर्क्षेशयोगे कार्यसिद्धिः ॥ २९ ॥

भाषाटीका—दिनका इष्ट हो तो सूर्यको हीन करना शनिमेंसे और उसमें सूर्यकी[१] राशीका स्वामी मिलाना रात्रिसमयका इष्ट हो तो चन्द्रको हीन करना शनिमेंसे और उसमें चन्द्रकी राशीका स्वामी मिलाना कार्यसिद्धि सहम होवे ॥ २९ ॥

---

१ जिस राशिमें स्थित होवे उस राशीका स्वामी ।

कोणोनशुक्रे विवाहभार्ये ॥ ३० ॥

भाषाटीका–शनिको हीन करना शुक्रमेंसे विवाह और भार्या (स्त्री) सहम होवे ॥ ३० ॥

ज्ञोनेज्य आधानम् ॥ ३१ ॥

भाषाटीका–बुधको हीन करना गुरुमेंसे आधान (गर्भ) सहम होवे ॥ ३१ ॥

सदा चन्द्रोनमन्दे षष्ठान्विते सन्तापः ॥ ३२ ॥

भाषाटीका–दिनका इष्ट हो वा रात्रीका सदा चंद्रको हीन करना शनिमेंसे और उसमें ६ छट्ठा भाव मिलाना संताप सहम होवे ॥ ३२ ॥

सदा भौमोनसिते श्रद्धा ॥ ३३ ॥

भाषाटीका–दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा भौमको हीन करना शुक्रमेंसे श्रद्धा सहम होवे ॥ ३३ ॥

सदा पुण्योनज्ञाने प्रीतिः ॥ ३४ ॥

भाषाटीका–सदा दिनका इष्ट हो वा रात्रीका पुण्य सहमको हीन करना ज्ञान सहममेंसे प्रीति सहम होवे ॥ ३४ ॥

मन्दोनारे ज्ञान्विते जाड्यम् ॥ ३५ ॥

भाषाटीका–शनीको हीन करना मंगलमेंसे और उसमें बुधयुक्त करना जाड्यसहम होवे ॥ ३५ ॥

शश्वज्ज्ञोनारे व्यापारः ॥ ३६ ॥

भाषाटीका–सदा (दिनरात्रिके इष्टमें) बुधको हीन करना भौममेंसे व्यापारसहम होवे ॥ ३६ ॥

चन्द्रोनार्कजे जलपातः ॥ ३७ ॥

भाषाटीका–चंद्रको हीन करना शनिमेंसे जलपात सहम होवे ॥ ३७ ॥

अर्कजोनभौमे शत्रुः ॥ ३८ ॥

भाषाटीका–शनिको हीन करना भौममेंसे शत्रु सहम होवे ॥ ३८ ॥

बुधोनपुण्ये ज्ञान्विते दारिद्र्यम् ॥ ३९ ॥

भाषाटीका–बुधको निकालना पुण्य सहममेंसे और उसमें बुध युक्त करना दारिद्र्य सहम होवे ॥ ३९ ॥

शश्वच्चन्द्रोनजीवशुक्रयोः पुत्रौ ॥ ४० ॥

भाषाटीका-दिनका इष्ट हो वा रात्रीका सदा चंद्रको हीन करना गुरु और शुक्रमेंसे पुत्र पुत्री सहम होवे अर्थात् गुरुमेंसे चंद्रको हीन करे तो पुत्रसहम और शुक्रमेंसे चंद्रको घटावे तो पुत्रीसहम होवे ॥ ४० ॥

दिनेर्कोनस्वोच्चे रात्रौ चन्द्रोनस्वोच्चे मंडलेशः ॥ ४१ ॥

भाषाटीका-दिनका इष्ट हो तो सूर्यको हीन करना अपने उच्च (०रा०१० अं०)मेंसे रात्रिसमयका इष्ट हो तो चंद्रको हीन करना अपने उच्च (१रा०३अं०) मेंसे मंडलेशसहम होवे ॥ ४१ ॥

मन्दोनसार्द्धत्रिभे जलपथः ॥ ४२ ॥

भाषाटीका-शनीको हीन करना साढे तीन राशी (३ राशी १५ अंश) मेंसे जलपथसहम होवे ॥ ४२ ॥

मन्दोनपुण्ये बन्धनम् ॥ ४३ ॥

भाषाटीका-शनिको हीन करना पुण्यसहममेंसे बंधन सहम होवे ॥ ४३ ॥

अर्कोनपुण्ये लाभान्वितेश्वः ॥ ४४ ॥

भाषाटीका-सूर्यको हीन करना पुण्यसहममेंसे और उसमें लाभ११मा भाव मिलाना अश्वसहम होवे ॥ ४४ ॥

सदा जीवोनेन्दौ गजः ॥ ४५ ॥

भाषाटीका-सदा (दिनका इष्ट हो वा रात्रिका) गुरुको हीन करना चन्द्रमेंसे गजसहम होवे. ॥ ४५ ॥

रिपुसहमोनांत्ये पशुः ॥ ४६ ॥

भाषाटीका-शत्रुसहमको हीन करना १२बारामें भावमेंसे पशुसहम होवे ॥ ४६ ॥

शश्वत्कोणोनाङ्गारयोर्व्यसनकृषी ॥ ४७ ॥

भाषाटीका-दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा शनिको लग्न और मंगलमेंसे हीन करनेसे व्यसन और कृषि सहम होवे (लग्नमेंसे शनि हीन करनेसे व्यसन और भौममेंसे शनिहीन करनेसे कृषि सहम होवे) ॥ ४७ ॥

सदा पुण्योनार्कजे मन्दयुते बन्धमोक्षः ॥ ४८ ॥

भाषाटीका-सदा (दिनरात्रमें) पुण्य सहमको हीन करना शनिमेंसे और उसमें शनियुक्त करना बन्ध मोक्ष सहम होवे ॥ ४८ ॥

सदेज्योनपुण्ये सारे दुःखम् ॥ ४९ ॥

भाषाटीका–सदा (दिनरात्रिके इष्टमें) गुरुको हीन करना पुण्यसहममेंसे भौम मिलाना दुःख सहम होवे ॥ ४९ ॥

कुजोनमन्दे उष्ट्रः ॥ ५० ॥

भाषाटीका–मंगलको निकालना शनिमेंसे उष्ट्र सहम होवे ॥ ५० ॥

मन्दोनार्के पितृव्यः ॥ ५१ ॥

भाषाटीका–शनिको हीन करना सूर्यमेंसे पितृव्यसहम होवे ॥ ५१ ॥

षष्ठेशोनषष्ठे सान्त्ये आखेटः ॥ ५२ ॥

भाषाटीका–छट्ठे भावके स्वामीको छट्ठेभावमेंसे हीन करके बारमा भाव मिलानेसे आखेट (शिकार) सहम होवे ॥ ५२ ॥

ज्ञोनेन्दौ भृत्यः ॥ ५३ ॥

भाषाटीका–बुधको चंद्रमेंसे हीन करनेसे भृत्य सहम होवे ॥ ५३ ॥

अर्कोनेज्ये बुद्धिः ॥ ५४ ॥

भाषाटीका–सूर्यको गुरुमेंसे हीन करनेसे बुद्धिसहम होवे ॥ ५४ ॥

सदा तुर्येशोनलग्ने निधिः ॥ ५५ ॥

भाषाटीका–दिनका इष्ट हो वा रात्रिका सदा चतुर्थ भावके स्वामीको लग्नमेंसे हीन करनेसे निधि सहम होवे ॥ ५५ ॥

सदा शुक्रोनकोणे ऋणम् ॥ ५६ ॥

भाषाटीका–सदा दिनरात्रके इष्टमें, शुक्रको शनीमेंसे हीन करनेसे ऋण सहम होवे ॥ ५६ ॥

सदा बुधोनेन्दौ सत्यम् ॥ ५७ ॥

भाषाटीका–सदा(दिनरात्रिमें)बुधको चंद्रमेंसे हीन करनेसे सत्यसहम होवे५७

स्वेशेन शुभेन वाऽब्देशेन वा युतं दृष्टं वा सहमं
स्वेशपाके वृद्धिदमन्यथा विपरीतम् ॥ ५८ ॥

भाषाटीका–अपने स्वामीसे अथवा शुभग्रहसे वा वर्षेश्वरसे युक्त होवे वा दृष्ट होवे जो सहम वह अपने स्वामीकी दशामें फलवृद्धि करे और विपरीत होवे तो विपरीत फलकी वृद्धि करे अर्थात् अपने स्वामीसे शुभग्रहसे वा वर्षेश्वरसे युक्त वा दृष्ट नहीं होवे वह विपरीत(उलटा)फलकी वृद्धि अपने स्वामीकी दशामें करे५८

प्रथमं जन्मकालिकं सहमबलाबलं जानीयात् ॥ ५९ ॥

भाषाटीका—प्रथम जन्मसमयमें सहमोंका बल निर्बल जानना (जन्मसमयमें सर्व सहम करना नंतर जन्मकुंडलीमें देखना जो सहम अपने स्वामीसे लग्नेश्वरसे और शुभग्रहसे युक्त होवे वा दृष्ट होवे६।८।१२मा आदि दुष्ट स्थानके शिवाय शुभस्थानमें स्थित होवे वह बलवान् जानना और इससे विपरीत होवे वह निर्बल जानना) ५९

तत्र यानि बलीयांसि तेषामेव संभवः ॥ ६० ॥

भाषाटीका—जन्मसमयमें जो जो सहम बलवान् होवे उन्ही सहमोंका संभव जानना ॥ ६० ॥

प्रतिवर्षं सम्भवतापन्नान्येव कार्याणि नेतराणि नैष्फल्यात् ॥ ६१ ॥

भाषाटीका—प्रतिवर्ष (हरवर्ष) जिन जिन सहमका जन्मसमयमें सम्भव आया हो वेही सहम करना जिनका संभव नहीं है वे शेष सहम निष्फलदाता हैं इसलिये नहीं करना ॥ ६१ ॥

प्रश्ने पृच्छकेष्टकार्यसहमं कार्यम् ॥ ६२ ॥

भाषाटीका—प्रश्नसमयमें पूछनेवालेका जो अभीष्टकार्य हो वह सहम करना ६२

इति सहमाऽध्यायः पंचमः ५ ।

उदाहरण ।

यहां दिनमें वर्षप्रवेश हुवा है इस कारण सूत्रमें कहे हुवे शोध्य सूर्य १० । १६ । ३९ । ३९ को शुद्धयाश्रय चंद्र १० । ० । २२ । ५६ मेंसे घटाया ११।१३।२९।१७ शेष बचे इसमें क्षेपक नहीं कहा है इसलिये लग्न १।१२। २६ । ३५ युक्त किया ० । २५ । ५५ । ५२ ये पुण्य सहम सिद्ध हुवा शोध्य सूर्यकी राशी १० अंश १६ को आदिले शुद्धयाश्रय चंद्रकी राशी १० अंश० पर्यंत गिननेसे क्षेपक (लग्न) की राशी १ वृषभ बीचमें आगई है इसलिये सिद्ध सहमकी राशीमें १ एक युक्त नहीं किया. इसी प्रकार शेष सहम जानना.

अथ कतिचित्सहमाः

पुण्य	गुरु ज्ञान	इच्छा	पुत्र	राज्य	धन	लाभ	शत्रु	रोग	जीवि
०	२	९	११	०	४	५	४	४	३
२५	२८	२७	१	५	१८	२७	१०	२४	३
५५	५७	१८	०	२७	४५	५०	३	३०	२४
५२	१८	४६	३४	५५	१४	४०	१२	१४	३९

इति श्रीज्योतिर्विद्वरश्रीमन्महादेवकृतवर्षप्रदीपकाख्यताजिकग्रंथेतत्सूनुश्रीनिवासविरचितायां सोदाहरणभाषाव्याख्यायां सहमसाधनाध्यायः पञ्चमः ॥ ५ ॥

अथ सहमसारणीकोष्ठकम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	संख्या	
पुण्य	गुरु ज्ञान ज्ञाति	यश देह सैन्य घात	मित्र	माहात्म्यधैर्य शौर्य	इच्छा	सामर्थ्य	भ्राता	गौरव	राज तात	माता कांति	जीवित उपाय	कर्म	रोग	काम	कालि क्षमा	शास्त्र	बंधु	पराश्रय	मृति	देशांतर	सहमनाम. नामतुल्यफलम्.	
सू	चं	पुण्य	पुण्य	मं	शु	ल. प.	श	च	सू	शु	गु	बु	चं	ल. प.	मं	श	चं	बु	चं	९ प	शोध्य	दिवा
चं	सू	गु	ज्ञान	पुण्य	श	मं ×	गु	गु	श	चं	श	मं	ल	चं ※	गु	गु	बु	चं	अष्टम.	९ भा	शुध्याश्रय	
चं	सू	गु	ज्ञान	पुण्य	श	मं	श	सू	श	चं	श	मं	चं	चं	गु	गु	चं	चं	चं	९ प	शोध्य	रात्रौ
सू	चं	पुण्य	पुण्य	मं	शु	ल. प.	गु	गु	सू	शु	गु	बु	ल	ल. प.	मं	श	बु	बु	अष्टम.	९ भा	शुध्याश्रय	
ल	ल	ल	शुक्र	ल	ल	ल	ल	सू. दि. चं. रा.	ल	ल	ल	ल	ल	ल	ल	बुध	ल	ल	शनि	ल	क्षेपक	सदा

+ लग्नेशचंद्र होतो सदा गुरुमेंसे हीन करना. + कर्कलग्नहोतो सदा लग्नेशको सूर्यमेंसे हीन करना.

२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	संख्या.	
धन.	लाभ.	पराङ्गना.	दास्य.	वाणिज्य.	कार्यसिद्धि.	विवाह भार्या.	आधान.	संताप.	श्रद्धा.	प्रीति.	जाड्य.	व्यापार.	जलपात.	शत्रु.	दारिद्य.	पुत्र.	पुत्री.	मंडलेश.	जलपथ.	बंधन.	सहमनाम तुल्यफलम्.	
२ प.	११प.	सू.	श.	बु.	सू.	श.	च.	चं.	मं.	पुण्य.	श.	बु.	चं.	श.	बु.	चं.	चं.	सू.	श.	श.	शोध्य	दिवा.
२ भा.	११भा.	शु.	चं.	चं	श.	शु.	गु.	श.	शु.	ज्ञान.	मं.	मं.	श.	मं.	पुण्य.	गु.	शु.	० रा. १० अं.	३ रा. १५अं.	पुण्य.	शुध्या-श्रय.	
२ प.	११प.	सू.	चं.	बु.	चं	शु.	गु.	चं.	मं	पुण्य.	मं.	बु.	श.	मं.	पुण्य.	चं.	च.	चं.	३ रा. १५ अं.	पुण्य.	शोध्य.	रात्रौ.
२ भा.	११भा.	शु.	श.	चं.	श.	श.	बु.	श.	शु.	ज्ञान.	श.	मं.	चं.	श.	बु.	गु.	शु.	१ रा. २ अं.	श.	श.	शुध्या-श्रय.	
ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	सू.प.रा. चं.रा.प.	ल.	ल.	९ भा.	ल.	ल.	बुध.	ल.	ल.	ल.	बुध.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	क्षेपक	सदा.

अथ सहमसारणीकोष्टका:

४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	संख्या	
अश्व	गज	पशु.	व्यसन.	कृषि	बंधमोक्ष	दुःख	इष्ट	पितृदय	आखेट	भृत्य	बुद्धि	निधि	ऋण.	सत्य	सहमनाम तुल्यफलं	
सू.	गु.	शत्रुस	श.	श.	पुण्य	गु.	मं	श.	षष्ठेश	बु.	सू.	भा ४स्था	शु.	बु.	शोध्य	दिवा
पुण्य	चं.	१२भा	ल.	म.	श.	पुण्य	श.	सू.	६भा.	चं.	गु.	ल.	श.	चं.	शुध्याश्रय	
पुण्य	बृ.	१२भा	श.	श.	पुण्य	मं.	श.	सू.	६भा.	चं.	गु.	च.श.	शु.	बु.	शोध्य	रात्री
सू.	चं.	शत्रुस	ल.	मं.	श.	पुण्य	मं.	श.	षष्ठेश	बु.	सू.	ल.	श.	चं.	शुध्याश्रय	
११भा	ल.	ल.	ल.	ल.	श	मं.	ल.	ल.	११भा	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	क्षेपक	सदा

अथाब्देशनिर्णयः ।

दिनेर्कशुक्रार्किसितेज्यचन्द्रज्ञारार्किभौमेज्यचन्द्रा रात्रौ ॥ जीवेन्दुज्ञारार्कसितार्किशुक्रमन्दारेज्यचन्द्रा मेषादित्रिराशिपाः ॥ १ ॥

अब वर्षेश्वरका निर्णय कहते हैं ।

भाषाटीका–दिनमें सूर्य, शुक्र, शनि, शुक्र, गुरु, चंद्र, बुध, मंगल, शनि, मंगल, गुरु, चंद्र, रात्रिमें, गुरु, चंद्र, बुध, मंगल, सूर्य, शुक्र, शनि, शुक्र, शनि, मंगल, गुरु, चंद्र, मेषराशीको आदिले क्रमसे त्रिराशिपति जानना ॥ १ ॥

अथ त्रिराशिपतिचक्रम्.

मे. ०	वृ. १	मि. २	क. ३	सि. ४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं. १०	मी. ११	
र	शु	श	शु	गु	चं	बु	मं	श	मं	बृ	चं	दिवा.
ग	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	गु	चं	रात्रि.

जन्माङ्गेशो वर्षाङ्गेशस्त्रिराशिपो मुन्थेशो दिनेर्कभेशो निशीन्दुभेशश्चेति पञ्चाधिकारिणः ॥ २ ॥

भाषाटीका–जन्मलग्नका स्वामी १ वर्षलग्नका स्वामी २ वर्षलग्नका त्रिराशिपति ३ मुंथाका स्वामी ४ दिनमें सूर्यकी राशीका स्वामी रात्रिमें चन्द्रकी राशीका स्वामी ५ ये पांचही अधिकारी जानना ॥ २ ॥

एषां बलाधिकोऽङ्गद्रष्टा वर्षेशः ॥ ३ ॥

---

१ वर्षलग्न जिस राशीका हो उसका दिनमें वर्षप्रवेश हो तो दिनका रात्रिमें रात्रीका त्रिराशिपति देखना ।

भाषाटीका—इन पंचाधिकारियोंमें जो ग्रह अधिक बलवान् होके वर्षलग्नको देखता हो वह वर्षेश्वर होता है ॥ ३ ॥

बलसाम्ये तु दृष्ट्याधिकः ॥ ४ ॥

भाषाटीका—अनेक ग्रहका बल समान (बरोबर) हो तो जिसकी लग्नपर दृष्टि अधिक होवे वही वर्षेश्वर होगा ॥ ४ ॥

उभयसाम्येऽधिकाधिकारी ॥ ५ ॥

भाषाटीका—अनेक ग्रहोंका बल और लग्नपर दृष्टि दोनूं समान (बरोबर) होवे तो जिस ग्रहका अधिकार जादा आया हो वह वर्षेश्वर होगा ॥ ५ ॥

त्रितयसाम्ये मुन्थेशः ॥ ६ ॥

भाषाटीका—बल दृष्टि अधिकार यह तीनों समान हो तो मुन्थेशही वर्षेश होगा६

पञ्चानामपि मध्ये कोपि नाङ्गं पश्येत्तदा मुन्थेशवर्षलग्नेशौ
यश्चोक्ताधिकार्यन्तःपाती तदितरोपि जनुस्समये
वर्षांगराशिद्रष्टा भवेत्तदैतेषां योऽधिकबलः स वर्षेशः ॥ ७ ॥

भाषाटीका—पांचों अधिकारियोंमेंसे कोईभी वर्षलग्नको नहीं देखते होवे तो मुन्थेश वर्षलग्नेश और दोनोंसे अन्यग्रह जो वर्षमें अधिकारी होकर जन्मकुण्डलीमें वर्षलग्नकी राशीको देखता हो तो इन तीनोंमेंसे जो अधिकबल हो वही वर्षेश होगा ॥ ७ ॥

त्रयाणां बलसाम्ये मुन्थेशः ॥ ८ ॥

भाषाटीका—तीनों अधिकारियोंका बल समान (बरोबर) हो तो मुन्थेशही वर्षेश होगा ॥ ८ ॥

उक्तरीत्या चन्द्रस्याब्दपत्वप्राप्तौ तदित्थशालिनोब्दपत्वमन्यथा तद्भेशस्येत्येके ॥ ९ ॥

भाषाटीका—उक्तरीतिसे चन्द्रको वर्षेशत्व प्राप्त हो तो (चंद्र वर्षेश होता हो तो) चन्द्रसे जो ग्रह इत्थशाल करता हो वही वर्षेश होगा और कोई ग्रह इत्थशाल नहीं करता हो तो चन्द्रकी राशीका स्वामी वर्षेश होगा यह कितनेक आचार्योंका मत है ॥ ९ ॥

वर्षांगेशो राजा समयेशः सेनापतिर्मुन्थेशो मन्त्री जन्माङ्गेशः पुरेशस्त्रिराशिपो रससस्यधात्वधिप इत्येके ॥ १० ॥

भाषाटीका–वर्षलग्नेश राजा समयपति सेनाधिप मुन्थेश मंत्री जन्मलग्नेश पुराधिप त्रिराशिपति रस धान्य धातु इनका अधिपति होता है यह कितनेक आचार्योंका मत है ॥ १० ॥

इत्यब्देशनिर्णयाऽध्यायः ६ ।

उदाहरण ।

पंचाधिकारी.				
जन्मल.	रा.प.	श.	८	म.
वर्षल.	रा.प.	शु.	११	पू.
त्रि.	रा.प.	शु.	११	पू.
मुन्था.	रा.प	शु.	११	पू.
सूर्य	रा.प.	श.	८	पू.

इन पांचों अधिकारियोंमें शुक्र अधिक बली है और वर्षलग्नको मित्रदृष्टिसे देखता है इस लिये वर्षेश्वर शुक्र पूर्णबली हुवा–

इति श्रीज्योतिर्विद्वरश्रीमन्महादेवकृतवर्षदीपके तदंगजश्रीनिवासविरचितायां सोदाहरणभाषाव्याख्यायामब्देशनिर्णयाध्यायः ६ षष्ठः ॥

अथ दशाविचारः ।

सलग्नखेटानां मध्ये यो न्यूनांशो भवेत्तस्यांशाद्यः प्रथमं लेख्याः ॥१॥

अब दशाविचार कहते हैं ।

भाषाटीका–लग्नसहित सूर्यादि सातही ग्रहोंमें जो ग्रह न्यून (अल्प) अंशका होवे उसके अंशादि (अंश कला विकला) प्रथम लिखना ॥ १ ॥

ततस्तदधिकांशानामंशाद्याः क्रमशो लेख्याः ॥ २ ॥

भाषाटीका–फेर उस (अल्प अंशके) ग्रहसे अधिक अधिक अंशके ग्रहोंके अंशादिक क्रमसे लिखना (अल्प अंशके ग्रहसे अधिक अंशके ग्रहके अंशादिक लिखना तदनंतर उससे अधिक अंशके ग्रहके अंशादिक फेर उससे अधिकके अंशादिक इस क्रमसे सबसे अधिक अंशके ग्रहके अंशपर्यंत लिखना) ॥ २ ॥

इमे हीनांशसंज्ञकाः ॥ ३ ॥

भाषाटीका–उक्तप्रकार लिखे हुवे ग्रहोंके ये अंशादिक इनको हीनांश संज्ञक जानना ॥ ३ ॥

द्वयोरंशादिसाम्ये बलाधिकस्य पूर्वा दशा ॥ ४ ॥

भाषाटीका—दो ग्रहोंके अंशादिक (अंश कला विकला) समान (बरोबर) हो तो उनमेंसे जो अधिक बलवान् होवे उसकी प्रथम दशा जानना (प्रथम उसके अंशादिक लिखना) ॥ ४ ॥

बलसाम्येऽल्पगतिकस्य ॥ ५ ॥

भाषाटीका—दो ग्रहोंका बल समान हो तो जो अल्पगती ग्रह होवे उसकी प्रथम दशा जानना ॥ ५ ॥

उदाहरण.

यहां लग्नसहित सूर्यादि ग्रहोंमें सर्वसे न्यून अंश चन्द्रके हैं अतएव चन्द्रके अंश ० कला २२ विकला ५६ पहले लिखे चन्द्रसे अधिक अंशका बुध है इसलिये चंद्रके नंतर बुधके अंशादिक १ । ३५ । ८ लिखे एवं बुधसे अधिक भौम भौमसे अधिक अंशादि शनिके इस क्रमसे अधिक अधिक अंशके ग्रह क्रमसे सर्वाधिकांश ग्रहपर्यंत लिखे ये हीनांश हुवे—

हीनांशाः ।							
चं.	बु.	मं.	श.	ल	र	गु.	शु.
०	१	७	९	१२	१६	१८	२५
२२	३५	३१	५४	२६	५३	५६	२
५६	८	३६	५२	३५	३९	५५	४८

पात्यकृतौ प्रथमखेटस्य यथास्थितांशाः ॥ ६ ॥

भाषाटीका—पात्यांश करनेके समय प्रथम ग्रहके (जो सर्व ग्रहसें अल्प अंशादिकका ग्रह हीनांशमें प्रथम लिखा है उसके) अंशादिक यथा स्थित (जो अंशादिक हो वेही) प्रथम लिखना ॥ ६ ॥

ततः प्रथमं द्वितीयाद्द्वितीयं च तृतीयादित्यादि
क्रमेण शोधयेत् ॥ ७ ॥ इमे पात्याः ॥ ८ ॥

भाषाटीका—तदनंतर प्रथम लिखे ग्रहके अंशादिकको दूसरे ग्रहके अंशादिकमेंसे दूसरेके अंशादिकको तीसरेमेंसे तीसरेके अंशादिकको चौथेमेंसे इस क्रमसे शोधते जाना ॥ ७ ॥ ये पात्यांश होवे ॥ ८ ॥

उदाहरण ।

हीनांशमें सबसे न्यून अंशका चंद्र प्रथम लिखा है उसके अंशादि प्रथम वेही ० । २२ । ५६ लिखे इनको आगे जो दूसरा ग्रह बुधके अंशादिक १ । ३५ । ८ है उसमेंसे हीन किये १ । १२ । १२ शेष बचे यह बुधके अंशादि हुवे. तदनंतर बुधके अंशादिक १ । ३५ । ८ को तीसरे भौमके अंशादिक ७ । ३१ ३६ मेंसे घटाये ५ । ५६ । २८ शेष बचे ये मंगलके हुवे फेर भौमके अंशादिकको चौथे शनिके अंशादिकमेंसे घटाये ऐसे क्रमसे घटानेसे ये पात्यांश हुवे–पात्यांशका ऐक्य सबसे अधिक अंशके ग्रहके अंशके समान आता है ।

पत्यांशाः ।								
चं.	बु.	मं.	श.	ल.	र.	गु.	शु.	यो.
०	१	५	२	२	४	२	६	२५
२५	१२	५६	२३	३१	२७	३	५	२
५६	१२	२८	२३	३६	४	१६	५३	४८

वर्षदिनानि पात्यैक्येन भजेल्लब्धं दिनाद्यं ध्रुवम् ॥ ९ ॥

भाषाटीका–वर्षके दिनोंको (३६० को वा ३६५ । १५ । ३१ । ३० को) पात्यांशाके ऐक्य (योग) का भाग देना लब्ध आवे वह दिनादिक ध्रुव जानना ॥ ९ ॥

उदाहरण ।

वर्षदिनादि ३६० । ० । ० के पात्यांशयोग २५ । २ । ४८ का भाग दिया परंतु भाज्य भाजक दोनों दिनादि कहे इसकारण इनको सवर्णित किये भाज्य १२९६००० में भाजक पात्यांश योग ९०१६८ का भाग दिय लब्ध १४ दिन आये शेष ३३६४८ बचे इनको ६० साठ गुणे किये २०१८८८० हुवे इनमें ९०१६८ का भाग दिया लब्ध २२ घटी आई शेष ३५२०४ बचे इनको ६० साठ गुणे किये २११२२४० इनमें भाग ९०१६८ का दिया लब्ध २३ पल आई शेष ३८३७६ बचे इनको ६० साठ गुणे किये २३०२५६० हुवे इनमें ९०१६८ का भाग दिया लब्ध २५ विपल आई इस प्रकार पात्यैक्यका भाग देनेसे दिनादिक १४ । २२ । २३ । २५ ध्रुव आया–

ध्रुवेण स्वस्वपात्यांशा हता दिनाद्या दशाः ॥ १० ॥

भाषाटीका—दिनादिक ध्रुवसे अपने अपने पात्यांशको गुणन करना सो दिनादिक दशा होवे ॥ १० ॥

उदाहरण ।

दिनादिक ध्रुव १४ । २२ । २३ । २५ । से चंद्रकी पात्यांश ०।२२।५६ को गुणन किये ५ । २९ । ३७ हुवे ये दिनादिक चंद्रकी दशा हुई इसी प्रकार सब ग्रहोंके पात्यांशको गुणन करके लाये ये दिनादिक दशा आई इसका योग वर्षदिनके समान ३६० । ०० बरोबर आया इसलिये दशा शुद्ध समझना ।

दिनादिदशाःस्पष्टाः ।

	च.	बु.	मं.	श.	ल.	र.	गु.	शु.	
	०	०	२	१	१	२	०	२	मास
	५	१७	२५	४	६	३	२१	२७	दिन
	२९	१७	२३	२०	१८	५८	३१	३८	घटी
	३७	४५	३३	५२	५८	३६	४४	५४	पल
१९५६	१९५६	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	संवत
१०	१०	११	२	३	४	६	७	१०	
१६	२२	९	५	९	१५	११	११	१६	उत्ती-
५३	२३	४१	४	२५	४४	४३	१४	५३	र्णार्के
३९	१६	१	३४	२६	२४	०	४४	३८	

यस्य दशामानं पात्यांशैक्येन भक्तं तल्लब्धदिनाद्येन स्वस्व-
पात्यांशा हताः पाकेशतोऽन्तर्दशादिनाद्याः ॥ ११ ॥

भाषाटीका—जिस ग्रहमें अंतर्दशा करना हो उसके दशामानमें (जितने दिनकी दशा होवे उतने दिनकी संख्याको दशामान कहते हैं) पात्यांशके ऐक्यका भाग देना लब्ध आवे जो दिनादिक ध्रुव उससे अपने अपने पात्यांश गुणन करना दशाके स्वामीको आदिले (जिसमें अंतर्दशा करना हो उस ग्रहकी प्रथम दशा उसके आगे जो ग्रह हो उसकी दूसरी दशा इस रीतिसे क्रमसे) दिनादिक अंतर्दशा होवे ॥ ११ ॥

१ ग्रह स्पष्ट करनेके उदाहरणमें गोमूत्रिका गुणनकी रीति लिखी है उस रीतिसे।

उदाहरण ।

यहां मंगलकी दशामें अंतर्दशा करना है–मंगलकी दशा ८५ दिन २३ घटी ३३ पलकी है यह दशाका मान है इसमें पात्यांशके ऐक्य २५।२।४८ का भाग दिया भाज्य भाजक सवर्णित किये भाज्य ३०७४१३ में भाजक ९०१६८ का भाग देनेसे लब्ध दिनादिक ३।२४।३३ ध्रुव हुवा इससे प्रथम मंगलकी पात्यांशगुणन की २०।१५।१५ आये ये मंगलमें मंगलकी दिनादिक अंतर्दशा हुई इसी प्रकार फिर क्रमसे शनि लग्न रवि गुरू आदिकरके पात्यांश गुणेकिये भौममें अंतर्दशा हुई–

भौममध्येऽतर्दशा ।

	मं.	श.	ल.	र.	गु.	शु.	चं.	बु.	
	२० १५ १७	८ ८ ५१	८ ३६ ५०	१५ १० ३०	७ ० १५	२० ४७ २६	१ १८ ११	४ ६ ८	दिन घटि पल
१९५६	१९५६	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	संवत
११ ९ ४१ १	११ २९ ५६ १८	० ८ ५ ९	० १६ ४१ ५९	१ १ ५२ २९	१ ८ ५३ ४४	१ २९ ४० १०	२ ० ५८ २२	२ ५ ४ ३२	उत्ती- र्णांकः

अथ मुग्धादशामाह ।

जन्मभसंख्यायां गताब्दान्योजयेत् द्व्यूना नवोद्धृताः शेषे सूर्यं-
द्वारराह्विज्यमन्दज्ञकेतुशुक्राणामेकादिक्रमतो दशाद्याः ॥ १२ ॥

अब मुग्धा दशा कहते हैं.

भाषाटीका–जन्मनक्षत्रकी संख्यामें गताब्दसंख्या मिलाना २ दो निकालना नवका भाग देना एक १ को आदि ले शेष बचे तो क्रमसे १ सूर्य २ चंद्र. ३ भौम ४ राहु ५ गुरु ६ शनि ७ बुध ८ केतु ९ शुक्रकी आद्य दशा जानना. (एक बचे तो सूर्यकी २ बचे तो चंद्रकी ३ तीन बचे तो भौमकी इत्यादि क्रमसे आद्य दशा जानना) ॥ १२ ॥

धृतित्रिंशदेकविंशतिचतुःपञ्चाशदष्टचत्वारिंशन्न्यूनषष्ट्येकपंचा-
शदेकविंशतिषष्टिसंख्यातानि सूर्यादीनां मुग्धादशादिनानि ॥ १३ ॥

भाषाटीका—धृति कहिये १८ त्रिंशत् क० ३० एकविंशति क० २१ चतुपञ्चा-शत् क० ५४ अष्टचत्वारिंशत् क० ४८ न्यूनषष्टी क० ५७ एकपंचाशत् क० ५१ ए-कविंशति क० २१ षष्टि क० ६० संख्यादिन सूर्यादिग्रहोंके मुग्धादशाके दिन जानना अर्थात् (सूर्यके १८ चंद्रके ३० मंगलके २१ राहूके ५४ गुरुके ४८ शनीके ५७ बुधके ५१ केतुके २१ शुक्रके ६० दिन मुग्धा दशाके दिन जानना) ॥ १३ ॥

उदाहरण.

जन्मनक्षत्र चित्राकी संख्या १४ में गताब्दसंख्या २८ युक्तकिये ४२ हुवे इनमेंसे २ दो हीन किये शेष ४० बचे इनमें ९ नवका भाग दिया शेष ४ बचे. एकको आ-दि ले क्रमसे गिननेसे ४ चोथी राहुकी ५४ दिनकी आद्य दशा हुई. (राहु दशामें वर्ष प्रवेश हुवा)

भगणोनजन्मेन्दुलिप्ताः खखाष्टशेषिता आद्यदशा दिनहताःखाभ्रे प्रा
प्ता दिनादिभोग्यदशा ॥ १४ ॥

भाषाटीका—बारा १२ राशीमेंसे हीन किये हुवे जन्मके चंद्रकी कला[1]के ८०० आठसें का भाग देना शेष बचे कला उसको आद्य दशा (सूत्र १२ के अ-नुसार आई हुई दशा) के दिनोंसे गुणन करना और ८०० आठसे का भाग देना लब्ध फल ४ आवे वह दिनादिक भोग्यदशा जानना ॥ १४ ॥

दशा दशाहताःषष्ट्यधिकत्रिशतेनाप्ता अन्तर्दशादिनाद्या
मुग्धायाम् ॥ १५ ॥

भाषाटीका—दशाके दिनको दशाके दिनसे गुणन करना तीनसे साठ ३६० का भाग देना लब्ध आवे वह मुग्धादशामें दिनादिक अन्तर्दशा होवे ॥ १५ ॥

इति दशाध्यायः ।

उदाहरण.

जन्मसमयका चंद्रस्पष्ट. ५ । २९ । १९ । ४९ । इसको बारा १२ राशी-

---

१ राशीको ३० तीसगुणी करके अंश मिलाना अंश होवे अंशको साठगुणे करके कला मिलानेसे कला होती है.

मसे हीन किया ६।०।४०।११ हुवे इसकी कला१०८४०।११की इसमें८०० आठसेका भाग दिया शेष ४४० । ११बचे इनको आद्य दशा राहुकी आई उसके दिन ५४ से गुणे किये २३७६९ । ५४ हुये इनमें ८०० आठसेका भाग दिया लब्ध २९ दिन आये शेष ५६९ । ५४ को ६० साठ गुणे किये ३४१ ९४ हुवे फिर ८०० का भाग दिया लब्ध घटी ४२ आई शेष ५९४ को फिर साठ ६० गुणे किये ३५६४० हुवे ८०० का भाग दिया लब्ध ४४ पल आई शेष ४४० को फेर ६० साठ गुणे किये २६४०० हुवे ८०० का भाग दिया लब्ध ३३ विपल आई ऐसे फलचार २९ । ४२ । ४४ । ३३ । आये ये दि-नादिक राहुकी स्पष्ट भोग्य दशा आई–

अथ मुग्धादशाचक्रम् ।

	रा.भो.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.भु.
मास	०	१	१	१	०	२	०	१	०	०
दिन	२९	१८	२७	२१	२१	०	१८	०	२१	२४
घटि.	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	१७
पल.	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	१५
विपल	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	२७
१९५६	१९५६	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५८
१०	११	१	३	४	५	७	८	९	९	१०
१६	१६	४	१	२२	१३	१३	१	१	२२	१६
५३	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	५३
३९	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	३९
०	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	०

इति श्रीज्योतिर्विद्वर श्रीमन्महादव कृतवर्षदीपकाख्य ताजिकग्रन्थे तत्सूनुश्रीनिवासविर-चितायां सोदाहरण भाषा व्याख्ययां दशासाधनाध्यायः ७ सप्तमः ।

अथ मासादिः ।

गतमाससंमितराशियुक्तजन्मार्कतुल्यार्कें मासप्रवेशः ॥ १ ॥

अब मासादिसाधन लिखते है ।

भाषाटीका–गतमासकी संख्याके समान राशियुक्त किये हुवे जन्मसमयके

सूर्यके समान (बरोबर) सूर्य जिस दिन आवे उस दिन मासप्रवेश होवे ॥ १ ॥

गतदिनसम्मितांशामासार्के युतास्तत्सदृशेऽर्के दिनप्रवेशः ॥ २ ॥

भाषाटीका–गतदिनकी संख्याके समान (बरोबर) अंशमासके सूर्यमें युक्तकरनेसे जो सूर्य होवे उसके समान सूर्य जिस दिन आवे उस दिन दिनप्रवेश होवे (जिस मासमें जितनी संख्याका दिन प्रवेश करना होवे उसके गतदिनकी जो संख्या होवे उतनेही अंश उसमासके सूर्यमें मिलाना. उसके समान सूर्य जिस दिन आवे उस दिन दिनप्रवेश होगा) ॥ २ ॥

उदाहरण ।

जैसे दूसरा मासप्रवेश करना है इसके पिछाडी गत मास १ एक हुवा इस लिये जन्मके १० । १६ । ५३ । ३९ सूर्यकी राशीके अंकमें १ एक युक्त किया ११ । १६ । ५३ । ३९ यह २ द्वितियमासप्रवेशका सूर्य हुवा ।

इस सूर्यके बरोबर सूर्यके दिन दूसरा मास प्रवेश होगा इसीप्रकार जितने गतमास होवे उतनीही राशी जन्मार्कमें मिलाते जाना और १२ बारा ही मासके सूर्य लाना ।

दिनप्रवेश ।

दूसरे मासका ११ ग्यारहमां दिन प्रवेश करना है इग्यारादिन प्रवेशमें १० दस दिन गत हुवें हैं इस लिये १० दश अंश मासके ११ । १६ । ५३ । ३९ सूर्यमें मिलाये ११ । २६ । ५३ । ३९ यह दिन ११ के प्रवेशका सूर्य हुवा. इस सूर्यके समान सूर्य आवेगा उस दिन ११ ग्यारवां दिन प्रवेश होगा ॥

मासार्कासन्नपंक्त्यर्कयोरंतरस्य कलाः कृत्वार्कभुक्तिभक्तात्तदिनादि पङ्क्तिवारादिमध्ये पङ्क्त्यर्कादधिकेऽर्के युक्तेन्यथा हीने मासप्रवेश कालः ॥ ३ ॥

भाषाटीका–मासप्रवेशका सूर्य और उसके समीपकी पंक्तिका (अवधी) सूर्य इन दोनोके अंतरकी कला[१] करना सूर्यकी गतीका (पंक्तिके सूर्यकी गतीका) भाग देना लब्ध आवे जो दिनघटी पलात्मक तीन फल उनकों पंक्तिके वारादिक

१ अंशको ६० साठगुणा करके कला मिलानेसे होती है ।

(वार इष्ट घटी पल) में पंक्ति (अवधी) के सूर्यसे मासप्रवेशका सूर्य अधिक हो तो युक्त करना और अवधीके सूर्यसे मासप्रवेशका सूर्य न्यून हो तो आयेहुवे दिनादि फलपंक्तिके वारादिकमेंसे हीन करना सो मासप्रवेशका वारादिका समय होवे ॥ ३ ॥

उदाहरण ।

द्वितीय मासप्रवेशका सूर्य ११ । १६ । ५३ । ३९ इसके समीपकी पंक्ति (अवधी) का सूर्य ११ । १४ । ५९ । ३० इनका अंतर किया १ । ५४ । ९ हुवे इसकी कला ११४ । ९ के अवधीके सूर्यकी गति ५९ । २३ का भाग दिया—भाज्यभाजक कलादिक है अतः इनको सवर्णित किये. भाज्यपिंड ६८४९ भाजकपिंड ३५६३ हुवा—भाज्यमें भाजकका भाग दिया लब्ध १ दिन आया—शेष ३२८६ बचे इनको ६० साठ गुणे किये १९७१६० हुवे इनमें ३५६३ का भाग दिया लब्ध ५५ घटी आई शेष ११९५ को ६० साठ गुणे किये ७१७०० हुवे इनमें फिर३५६३ का भाग दिया लब्ध२० पल आये ऐसे दिनघटी पलादिक फल १ । ५५ । २० लब्ध आये इनको पंक्तीके सूर्यसे मासप्रवेशका सूर्य अधिक है इसलिये अवधीके वार इष्टघटी पल ४ । २२ । १ में युक्त किये ६ । १७ । २१ हुवे ये २ मासप्रवेशका इष्टसमय हुवा—अर्थात् (पौर्णिमांत चैत्रकृष्ण ३० अमावास्या शुक्रवारके दिन इष्टघटी १७ पल २१ से मास द्वितीय प्रवेश होगा) ऐसेही दिन प्रवेशका उदाहरण समझना—

एवं दिनप्रवेशकालः ॥ ४ ॥

भाषाटीका—मासप्रवेशकालकी जो रीती कही है इसीप्रकार दिनप्रवेशकाल लाना—अर्थात् दिनप्रवेशका सूर्य और उसकी समीपकी पंक्तीका सूर्य इन दोनोंके अंतरकी कला करना पंक्तीके सूर्यकी गतीका भाग देके दिनादिक फल ३ लाना उनको पंक्तीके वारादिकमें पंक्तीके सूर्यसे दिनप्रवेशका सूर्य अधिक हो तो मिलाना न्यून हो तो हीन करना दिनप्रवेशकाल होवे ॥ ४ ॥

उभयत्र स्पष्टाः खगा भावादयश्च कार्याः ॥ ५ ॥

भाषाटीका–मासप्रवेशसमयमें और दिन प्रवेशसमयमें स्पष्टग्रह भाव, आदि शब्दसे चलित पंचवर्गी बल द्वादशवर्ग षडेशा[1] सप्तेशा[2] आदिक करना ॥ ५ ॥

पात्यैक्येन मासदिनानि भजेल्लब्धेन स्वस्वपात्यांशा हता दिनाद्या मासदशाः ॥ ६ ॥

भाषाटीका–पात्यांशके[3] ऐक्यका मासके दिन ३० में भाग देना लब्ध आवे जो ध्रुव उससे अपने अपने पात्यांश गुणे करना दिनादिक मासदशा होवे ॥ ६ ॥

मासप्रवेशर्क्षे सप्तयुतेऽङ्कहृते एकादिशेषे आचंभो राजिशबुके शुनामाद्यादशा ॥ ७ ॥

भाषाटीका–मासप्रवेश नक्षत्रकी (जिस नक्षत्रमें मासप्रवेश होवे उसकी) संख्यामें सात मिलाना ९ नवका भाग देना ऐकको आदिले शेष बचे तो क्रमसे आ (सू) चं–(चंद्र) भौ (भौम) रा (राहु) जि–(गुरु) श (शनि) बु (बुध) के (केतु) शु (शुक्र) की आद्य (प्रथम) दशा जानना ॥ ७ ॥

मुग्धार्कभागमिता दिनाद्या मासदशाः ॥ ८ ॥

भाषाटीका–मुग्धा दशाके १२ बारमें भागके समान दिनादिक मासदशा जानना–(मुग्धादशाके दिनमें १२ का भाग देनेसे जो दिनादिक आवे वह मास दशाके दिनादिक आवै–) ॥ ८ ॥

उदाहरण ।

जैसे सूर्यकी मुग्धादशाके दिन १८ हैं इसके १२ का भाग देनेसे लब्ध दिन १ घटी ३० आई यह मासदशामें सूर्यके दिन हुवे इसीप्रकार सर्वग्रहके समझना–

---

१ मासप्रवेशमें षडेशा–जन्मपति १ वर्षलग्नपति २ मासलग्नपति ३ मुंथापति४त्रिराशिपति ५ समयपति. ६

२ दिनप्रवेशमें सप्तेशा करना–जन्मपति १ वर्षपति२ मासलग्नपति ३ दिनलग्नपति ४ मुंथापति ५ त्रिराशिपति ६ समयपति ७

३ मासमें भी प्रथम कही रितिके अनुसार हीनांश पात्यांश करके ऐक्य करना.

दिनादिक मुग्धा मासदशा.								
र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श	व	के.	शु.
१ ३०	२ ३०	१ ४५	४ ३०	४ ०	४ ४५	४ १५	१ ४५	५ ०

उदाहरण ।

जैसे द्वितीय मासप्रवेश उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रमें हुवा है इसकी संख्या २६ में ७ मिलाये ३३ हुवे ९ नवका भाग दिया शेष ६ बचे १ एकको आदिले क्रमसे आदं भोराजी आदी दशा गिननेसे ६ छठी शनीदशामें मासप्रवेश हुवा यह आद्य (प्रथमदशा) हुई इसके आगे क्रमसे ग्रहोंकी मासदशा आई ।

मासदशा.									
श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	
४ ४५	४ १५	१ २५	५ ०	१ ३०	२ ३०	१ १५	४ ३०	४ ०	

दिनप्रवेशस्पष्टलग्ननक्षत्रे सप्तयुतेङ्कहृते एकादिशेषे प्रागुक्तानामाद्या दिनदशा ॥ ९ ॥

भाषाटीका—दिनप्रवेशसमयके स्पष्टलग्न और नक्षत्रकी संख्यामें ७ सात मिलाना ९ नवका भाग देना एकको आदिले शेष बचे वह प्रथम कहे हुवे नाम (र १ चं. २ मं. ३ रा. ४ गु. ५ श. ६ बु. ७ के. ८ शु. ९ की आद्य दिन दशा होवे) ॥ ९ ॥

मुग्धांगभागमिता घटचादयः ॥ १० ॥

भाषाटीका—मुग्धा दशाके दिनके ६ छठे भागके समान (बरोबर) घटचादिक मुग्धा दिनदशा जानना—जैसे सूर्यकी दिन १८ की दशा इसके ६ का भाग दिया लब्ध ३ घटी आई ये सूर्यकी दिनदशा ऐसेही सर्व ग्रहकी जानना ॥ १० ॥

मुग्धा दिनदशा घट्यादि.									
र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	
२ ०	५ ०	२ ३०	९ ०	८ ०	९ ३०	८ ३०	३ ३०	१० ०	घ. प.

प्रश्नांगस्य भं विना लिप्ताः कृत्वा खतिथ्युद्धृता लब्धोभादि
मध्येऽङ्गर्क्षयुतामुंथार्थे स्पष्टं लग्नम् ॥ ११ ॥

भाषाटीका—प्रश्नलग्नकी राशीविना अंशादिककी कला करना ख(०)तिथी(१५) ऐसे १५० देढसेका भाग देना लब्ध राश्यादि फल(राशि—अंश कला—विकला)चार आवे उसकी राशीके अंकमें प्रश्नलग्नकी राशीका अंक मिलाना मुंथाके वास्ते स्पष्ट लग्न होवे ॥ ११ ॥

प्रश्नांगात्तुर्येशो जन्मेशो ज्ञेयः ॥ १२ ॥

भाषाटीका-प्रश्नलग्नसे चतुर्थराशिका स्वामी जन्मेश जानना-अर्थात पंचाधिकारोंमें जन्मलग्नपतिके स्थानमें प्रश्नलग्नसे चतुर्थराशीका स्वामी जो हो वह लिखना १२

प्रश्नपत्रतो वर्षकरणे इयान्विशेषः ॥ १३ ॥

भाषाटीका—प्रश्नपत्रपर वर्ष बनानेमें इतनाही विशेष जानना (और सर्व रितिमें कुछ न्यूनाधिक नहीं है) ॥ १३ ॥

पाराशरकुलोत्पन्नो महादेव उदुंबरः ॥
पाठकाख्यचणो रत्नललामपुटभेदने ॥ १ ॥
रेवाशंकरसंभूतिः कृतवान्वर्षदीपकम् ॥
त्र्यङ्कार्द्रीन्दुमितेशाके कन्यार्कप्रथमेदिने ॥ २ ॥

भाषाटीका—रतलाम शहरमें पाठक ऐसे, उपनामसे प्रसिद्ध पराशर कुलमें उत्पन्न (पाराशरगोत्र) उदुंबरज्ञातीय रेवाशंकरजीके पुत्र महादेव ज्योतिर्वित् शालिवाहन १७९३ सतरासे तिरानवेके शकमें कन्यासंक्रांतिके प्रवेशके प्रथम दिनमें वर्षदीपक करते हुवे ॥ १ ॥ २ ॥

इति मासाद्यध्यायः ८.

इति महादेवकृतवर्षदीपकं समाप्तम् ॥

आसीद्रत्नपुरेपराशरकुलोत्पन्नोद्विजोदुम्बरः
ख्यातःपाठकनामतोगुणनिधिःश्रीनन्दरामाभिधः ॥
तत्सूनुर्गणितागमज्ञतिलकःश्रीमोतिरामाह्वयो
रेवाशङ्कर आगमेषु निपुणस्तस्मादभूद्धार्म्मिकः ॥ १ ॥
तदात्मजउदारधीर्गणकमौलिचूडामणि
रभूद्धरणिमण्डले गुणनिधिर्महादेववित् ॥
तदङ्गजनुषा त्विदं विवरणं सता प्रीतये
सहस्यशुचिपक्षतौ कठजटोन्मितेऽगाच्छके ॥ २ ॥

इति श्रीज्योतिर्विद्वरश्रीमन्महादेवकृतवर्षदीपकाख्यताजिकग्रंथे तदंगजश्रीनिवासविरचिता सोदाहरणभाषाव्याख्या समाप्ता ॥

उच्चबलसारणीचक्रम् ।

अंशा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	'	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	.
०	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	०
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	
	३	३	३	३	२	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	
१	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	८	१३	२०	२६	३३	१
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	
	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	
२	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	६०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	२
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	
	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	
३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	३
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	२०	२०	-	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	
	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	
४	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	
	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	
५	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	५
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	२०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	

ग्रह नीचके अंतरके राशि अंशके कोष्टकमें उच्चबल स्पष्ट जानना.

मासप्रवेशपत्रम्।

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
म. ०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	म. ०
	२१	२२	२३	२४	२५	२७	२८	२९	३०	३१	३३	३४	३५	३६	३७	३९	४०	४१	४२	४३	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५२	५३	५४	५५	
	२	१४	२७	३९	५०	४	१४	२७	४०	५१	२	१४	२८	३८	५१	४	१६	२७	४०	५२	३	१४	२५	३६	४५	५४	३	११	२१	३१	
वृ. १	२	१	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	वृ. १
	५६	५७	५८	५९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२१	३२	२३	२४	
	३२	४५	५१	५८	२	७	१३	१७	२७	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२१	१९	१५	१०	३	५६	४८	३८	२८	१७	५	५४	४१	२७	११	
मि. २	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	मि. २
	१४	२५	२६	२६	२७	२८	२८	२९	३०	३०	३१	३१	३२	३२	३३	३३	३४	३४	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	
	५४	३६	१८	५९	३९	१८	५८	३५	१०	४५	१८	५१	२२	५१	२१	४९	११	४४	९	३३	५५	१७	३६	१३	९	२३	२४	४५	५४	०	
क. ३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	क. ३
	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३६	३६	३६	३५	३५	३५	३४	३४	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०	२९	२९	२८	
	४	७	८	७	४	०	५४	४७	४०	३२	२२	८	५२	३२	१३	५१	२७	२	३४	६	८	८	३८	७	३६	२	२७	५१	१५	३८	
सिं. ४	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	सिं. ४
	२८	२७	२६	२५	२५	२४	२३	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	
	०	२२	४०	५८	१८	४१	४८	३	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	२६	३३	३९	४४	४८	५२	५६	५७	५७	५०	५७	५६	५५	५३	४४	
क. ५	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	क. ५
	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४६	४५	४४	४३	४२	४१	३९	३८	३७	३६	३५	३३	३२	३१	३०	२९	२७	
	४०	३८	३५	२८	२१	११	३	५३	४१	३७	२९	१९	८	५५	४४	३४	२३	१२	१	४९	३७	२३	१२	०	४७	३५	२१	७	५३	४१	
तु. ६	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	तु. ६
	२६	२५	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	
	३२	१७	४	५२	४१	२९	२०	१०	०	५१	४२	३३	२४	१४	६	५८	५०	४३	३६	३०	२४	१९	५५	१२	९	७	६	५	४	४	
वृ. ७	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	वृ. ७
	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४३	४२	४१	४०	३९	३९	३८	३७	३६	३६	३५	३४	३४	३३	३२	३२	३१	३०	३०	
	४	६	७	१०	१४	१७	२३	२९	३६	४४	५४	४	१४	३४	३७	५०	३	१८	३४	५०	६	२३	४१	१	२२	४३	५	२८	५१	१६	
ध. ८	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	ध. ८
	२९	२९	२८	२८	२७	२७	२६	२६	२५	२५	२४	२४	२३	२३	२३	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	
	४४	११	३८	७	३७	७	३९	१०	४२	१५	४८	२२	५७	३२	११	४९	२८	८	४९	३१	१४	५८	४४	३०	१८	८	५९	५३	४५	३९	
म. ९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	म. ९
	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२५	२६	२६	
	३६	३१	३१	३१	३२	३४	४०	४६	५४	२	१२	२४	३६	४९	४	२०	३८	५७	१७	३९	२	२६	५०	१५	४०	५	३२	५९	२७	५७	
कुं. १०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	१	कुं. १०
	२७	२७	२८	२९	२९	३०	३०	३१	३१	३२	३३	३३	३४	३५	३५	३६	३७	३८	३८	३९	४०	४१	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४७	
	२७	५८	३०	३	३७	१०	६	२१	५६	३	१०	४९	३०	१०	५३	३६	१९	२	४७	३३	२०	७	५५	४४	३४	२५	१७	९	२	५६	
मी. ११	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	मी. ११
	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	१	२	३	४	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	१९	
	५१	४६	४६	३९	३६	३३	१३	३३	३४	३५	३७	३९	४१	४५	४९	५३	५८	४	१०	१७	२४	३२	४०	४८	५७	७	१७	२८	३९	५०	

वर्षप्रवेशके बारादिकमें अग्रिमसूर्यके राशी अंशके कोष्टमेंके वारादिक मिलाना फिर कोष्टकके और अग्रिमकोष्टकके साथ अन्तर करके सूर्यकी कला विकलाको गुणन करना आवे जो फल वह वर्षप्रवेशके वारादिक मिलाये हुवे कोष्टकमें अग्रिम कोष्टक अधीक हो तो मिलाना न्यून हो तो पलमेंसे हीन करना द्वितीय मास प्रवेश वारादिक होवे एवं उसके आगेके सूर्यके राशी अंशज कोष्टमें द्वितीयमासके वारादि मिलाना तृतीयादिक मास होवे।

स्थिरखलचक्राणि।

मेष. ०

अंशाः	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३।२०	१२।	११॥।	१६।	४।	११॥।	८॥	४।	७।
६।०	१२	११।	१५।	४॥	११॥	१०॥	४॥	७॥
६।४०	११	१०।	१४॥	५॥	८॥।	९॥	५॥	८॥
१०।०	११।	१०॥	१४।	६।	९	१३।	५।	८॥
१२।०	१२॥।	११॥	१५।	५॥	९।	११॥	४॥।	८।
१३।२०	१२॥।	११	१३।	७।	९।	११।	४॥।	८।
१६।४०	१३॥।	१३	१३	७॥	९॥	९।	५॥।	८॥
२०।०	१२॥	११	१२॥।	८॥	९।	९।	५	८॥।
२३।२०	११।	११।	१४॥।	५।	९॥	९॥	४॥।	८॥
२५।०	११॥	११॥	१५॥।	५॥	९॥।	११	४॥	८।
२६।४०	१०॥	१०॥।	१२॥।	५॥	९	८	७।	९।
३०।०	१०॥	११	१२।	६॥	९॥।	१०॥।	७॥	९

वृषभ. १

अंशाः	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३।२०	८	८॥।	६	१०	७	१७	८॥	११॥।
६।४०	८	८॥	६	११।	८	१७	८॥	११॥।
८।०	८।	८॥	६॥।	९॥	८	१६॥।	७॥।	११॥
१०।०	८।	८॥।	६।	११॥।	८।	१४॥।	७॥।	११॥
१३।२०	८॥।	१०॥।	७॥	१०	८।	१४	७	११
१४।०	८	१०।	६॥	१०॥	८	१५	७॥।	७॥
१६।४०	९।	११।	७।	७॥।	१०॥।	१४	६॥।	१०॥
२०।०	९।	११	७।	८।	११	१३।	६॥।	१०॥।
२२।०	८॥।	१०	६	८	१०॥।	१३॥	८॥	११
२३।०	७॥।	९	६	९	८।	१४।	११।	१२
२६।४०	८॥	८॥	६	९॥।	८।	१४।	११।	१२
२७	७॥	८	५॥।	१०।	७॥।	१४॥	११॥	१२॥
३०।०	८।	९	८	९।	८॥।	१३॥	९	११॥

मिथुन. २

अंशाः	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३।२०	८	८॥	६	१४॥।	९।	१०॥।	८	११॥।
६।०	८	८॥।	६॥।	१४॥	१०।	१०॥।	७॥।	१०॥
६।४०	८	८॥।	६॥।	१२॥	१०।	११॥	७॥।	१२
१०।०	८	८॥।	६	१२॥।	१०॥।	११॥	७॥।	८।
१२।०	७॥।	७।	७	१३	८॥।	११॥।	९	११॥
१३।२०	८॥	९।	७॥।	१२।	११॥	८॥।	८	१०॥
१६।४०	८॥	९	७॥।	१२।	११॥	८॥।	८	१०॥
१७।९	८॥।	९॥	८	१२	१२॥	८॥	७।	१०।
२०।०	८॥।	९।	९॥।	१२	११	८	७।	१०-
२३।२०	९॥।	९।	९	१२	१०।	८।	७।	९॥।≡
२४।२०	९॥	९	८	१८॥	१०	९।	९॥।	१०।
२६।४०	८॥	८	५।	१३॥	९।	१०	१०॥	१०।
३०।०	८॥	७॥।	५।	१४।	९॥	९।	१०॥।	१२

बृहत्पंचवर्गी बलग्रहकी राशी अंशके समान कोष्टकमें जो हो वह लिखना पांचसे अल्प हीनबली होता है.

कर्क. ३									सिंह. ४									कन्या. ५								
	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.		र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.		र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३।२०	९॥	१४॥	९॥	९॥	११॥।	८	६॥	६॥	३।२०	११॥।	९।	७॥।	८॥	१२	५।	८॥।	७॥।	३।२०	६॥।	६	५।	१७।	७॥।	७॥	११।	९।
६।४०	११॥।	१२॥।	९।	७॥	११॥।	७॥।	६॥	८॥	६।०	१२।	९	६॥।	८॥	१२॥।	६॥।	९॥।	८	६।४०	६।	६	५॥	१७।	७॥।	७॥।	११।	९।
७।०	९।	१२॥	९	८॥	११॥	८।	६॥।	८॥।	६।४०	११।	८	६	९॥	९॥।	९॥	९॥।	७॥।	७।०	६॥।	६।	५॥।	१७	८॥	८॥	१०॥	९॥।
१०।०	८	१२॥	६	९॥	१०॥	११	७।	९॥	१०।०	११	८	६	१०।	९	९॥।	९॥।	८॥	१०।०	६॥।	६।	६	१५।	८॥।	८॥।	१०॥	९॥।
१३।०	८	१२॥	६	१०॥	११॥	११।	८	९॥	११।०	११	९॥	७	८॥।	११॥।	७॥।	७॥।	७॥।	१३।२०	४॥।	५॥	६	१६	७।	७।	११।	९।
१३।२०	८	१२॥	६।	१२	१०॥	१८।	८	१०॥	१३।२०	१२	९॥	७	८॥।	११॥।	६	९॥।	७॥।	१६।४०	४॥	५	५	१६।	६॥।	६॥।	११॥	९॥
१६।४०	८।	१२॥	७	११॥।	१०॥	७।	७॥।	९	१६।४०	१२	९॥।	७	९	११॥।	५॥।	९॥।	७॥	१७।०	४॥	५	५	१६॥।	६॥।	६॥।	११॥	९॥
१७।१०	८।	१२॥	६।	१२	११।	७।	७॥।	९	१७।०	११॥	८।	६॥।	९॥।	११।	६	१०।	७॥।	२०।०	५।	५॥।	६।	१५॥।	९॥	९॥	१०।	९॥
२०।०	९	१२॥	७	९	१२॥	६।	६॥।	८	२०।०	११॥	८।	६॥।	११॥	११।	६।	८।	७॥।	२१।०	५॥	६॥।	६॥	१६	९॥।	९॥।	१०॥	८॥।
२२।०	९।	१५	७।	७॥	१२॥।	५॥।	७।	७॥	२२।२०	११।	८।	८।	११।	११	६॥	८॥	७॥	२२।२०	५॥	६॥।	८॥	१६	७॥।	६।	१०॥	८
२६।०	८।	१४	७।	७॥।	१२॥	५॥।	७।	७॥	२४।०	११॥	८॥	९	१०	१०।	६॥	८।	७॥	२६।४०	६	६	८॥	१६	७॥।	६।	१०॥	८
२६।४०	८।	१४	६।	८॥।	९॥	६॥।	१०।	८॥	२६।०	१२॥	९।	१२	८।	११	४॥	७।	६।	२८।०	५	५॥।	८।	१६॥।	७॥	६॥	१०॥।	८।
३०।०	८॥	१४।	६॥	८॥	११॥	६॥।	९॥।	८	३०।०	१२॥	९।	११॥	८।	११॥	४।	७।	६।	३०।०	४	४॥।	८॥	१७॥।	६	७॥	१२॥।	८।

पांचसे अधिक मध्यमबली. दशसे अधिक पूर्णबली होता है.

तुला. ६									वृश्चिक. ७									धन. ८								
	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.		र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.		र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३।२०	४॥	६॥	६।	११	६।॥	११॥	१३।	८॥	३।२०	८।	८।	१७	७॥	९।	५॥	८॥	४॥	३।२०	८।	८	११	८॥	१२॥	६।	८।	४
६।०	४।॥	६।॥	७।	११	७।	१०॥	१३।	८	६।४०	८।॥	७॥	१७	७।	९	४।॥	८।	४॥	६।४०	८।	७॥	१०।	७।॥	१२	६।	८।॥	८।॥
६।४०	४।॥	६।॥	७।	१२।	७।	१०॥	११	८	७।०	८	७॥	१६।॥	८।	८।॥	५।	८॥	४।॥	१०।०	८॥	७॥	१०।	७	१२॥	७।	८।॥	४।॥
१०।०	४।॥	६॥	६।॥	१२।॥	७।॥	१०।॥	११।	८	१०।०	७	६॥	१४	९	७।॥	६।॥	९॥	५॥	१२।०	९।	१०।	११।	६।	११॥	८।	७।	५।
१३।२०	३।॥	४।	५	१४।	६	११।॥	१४॥	८।॥	११।०	८॥	६॥	१६।॥	८॥	७।॥	८।॥	९॥	५॥	१३।२०	८।	९॥	१०।	७।	११	८।॥	८।	५।
१४।०	३।॥	४।	६	१४।	६	११॥	१४।	८।॥	१३।२०	८॥	६॥	१३	१०।	७।॥	७	९।	५॥	१६।४०	९।	९	१०॥	७।	१०।॥	८।॥	७।	५।
१६।२०	४।॥	५।	७	१४।	९।	१०।॥	१३॥	७।॥	१६।४०	८।॥	९	१२।॥	९।॥	८	६।	९	५	१७।०	८	८।॥	१०।	८	१०॥	९	८॥	५।
२०।०	५।	५।	७।	११	९॥	१०॥	१२॥	७॥	१९।०	९	७	१३॥	९।॥	८॥	६।	९	४।॥	२०।०	८।	८।॥	१०।	९।॥	१०।॥	७।	८।	५॥
२१।०	५॥	६	८।॥	१०॥	१०।॥	१०।	१०॥	६।॥	२०।०	९	८	१४।	९	११॥	६।	८	४	२१।०	७॥	७	९॥	९।॥	९।॥	८॥	१०।	६।
२३।२०	५	४॥	७।॥	१०॥	८	१३।	११।	६।॥	२३।०	७।॥	७	१३।	११	९॥	६।	९॥	४।॥	२३।२०	८॥	८	१२॥	७	१०।॥	७।॥	९।	५।
२६।४०	४।॥	४॥	६।॥	१०।॥	७॥	१४	११।॥	६।॥	२४।०	७।॥	७।	१३॥	७।॥	९॥	५।	९।	९।॥	२६।०	८।॥	८।	१३॥	६॥	११	६।॥	८।॥	५।
२८।०	४।॥	४॥	६।॥	१०।	७॥	१३।	११॥	६।॥	२६।४०	७	६।	१२।॥	८।॥	६।॥	७।	१२।	४।॥	२६।४०	८	७॥	१७।॥	७॥	९।॥	७।॥	११॥	६
३०।०	४।॥	४॥	३।॥	१०।	८।	१०॥	१०।॥	७।॥	३०।०	७।	६।॥	१३।॥	८।	७॥	७	११।	५।	३०।०	८।	७॥	१७।	७।॥	१०॥	८	११॥	६

स्थिरमैत्रीतः पंचवर्गबलचक्रम् ।

मकर ९.

	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३।२०	६।॥	६	९।	८	५।॥	९॥	१४॥	७॥
६।०	६।॥	६	९।॥	७।॥	५।॥	९॥	१४।	७।॥
६।४०	६।॥	५॥	१०।	७।॥	६॥	९।	१३॥	८
१०।०	८	६॥	१०॥	७॥	८॥	८॥	१३।॥	६।॥
१३।२०	८।	७॥	११	७।	७।॥	८॥	१२	६।॥
१४।०	९	७।	११।	८॥	७॥	९॥	१२॥	७।
१६।४०	७॥	६॥	१०।	८॥	४।॥	१२॥	१३।	८।
२०।०	८।	६॥	१०॥	९	४।॥	११।॥	१३	८।
२२।०	९।॥	७।	९।॥	८	५।	११।॥	१२।॥	८
२३।०	८।॥	९॥	९॥	८	५।	१४॥	१४	८
२६।०	९॥	९।॥	९।॥	८	५।	९।॥	१४॥	८
२६।४०	१०॥	१२॥	१२॥	७	६।	९	१७।॥	७।
३०।०	९।	१३॥	१३॥	७॥	६	९।	१३	७॥

कुंभ १०.

	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३।२०	७	६।	८॥	१०॥	४॥	४।॥	१५	८।॥
६।४०	७।	६।॥	९॥	१०।	४॥	१२	१३	८॥
७।०	७।	६।॥	८।॥	१०।	५॥	१२	१३	८॥
१०।०	७॥	६।॥	८।॥	८।	५।॥	१४	१३।	९॥
१३।०	७।	६॥	८।	९।॥	४।॥	११	१३।॥	८।
१३।२०	८	७॥	९।	८।॥	७॥	१०।	१२।॥	८।
१६।४०	८।	७॥	९।	८॥	७।॥	१०॥	१२।॥	८।॥
२०।०	८॥	८	९॥	८।	८।॥	१०।	११।॥	८॥
२३।२०	९।	९।॥	१२॥	६।	७	९।॥	११	७
२५।०	९	९।॥	११॥	६॥	६।॥	१०।॥	११।	८।
२६।[illegible]	८।	८।॥	८॥	७॥	५।॥	११।॥	१४	९।
३०।०	८।	८।॥	८॥	८	५।	११	१४	९।

मीन ११.

	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३।२०	९।॥	९	९।	९।॥	१०।	१२॥	७।॥	८
६।४०	१०।॥	९॥	१०॥	५॥	१०॥	१२	७।॥	८
७।०	१०।॥	९।	१०।	६।	१३।	१२।	८	८।
१०।०	९।॥	१०॥	९।॥	५।	१३	१२	५।	७।॥
१३।०	११।॥	१०।॥	११	४	१६	९।	५।	७
१६।२०	११।॥	११।	११।॥	६।॥	१६।	६॥	४।॥	६।॥
१६।४०	११	१०।	१०।॥	६॥	१३	९।॥	५॥	७॥
१९।०	११	१०।	१०।	६॥	१४।	९॥	५॥	७।॥
२०।०	१२	११।	१३	३।॥	१५।	८॥	४॥	७॥
२३।२०	११।॥	११	१३।॥	४।	१७	९	५॥	७।
२६।४०	११।॥	११॥	११।॥	४॥	१३॥	९	५।	७।
२८।०	१२।	११॥	१४	४	१४।	६	४।॥	७
३०।०	११।	१०॥	११	५।	१३।	९॥	७	८

इति वर्षप्रदीपकं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ।

पत्रीमार्गप्रदीपिका शुद्धाशुद्धपत्र.

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृ०	पं०
श्रीधरं	चाच्युतं	१	१०
होवं	होवे	८	१५
सार्द्धांश	सार्द्धांश	१३	१४
१४ । ५३ । ५	५३ । ५	१४	१५
समशत्रु	सम, शत्रु	१७	१८
स्वामी	स्वामी	१८	१०
अंशांके	अंशोंके	१९	६
भागका	भागकों	१९	टिप्पण्यां
आनी	अपनी	१९	१९
सतमास	सप्तमांश	२०	३
भौमाद्धौ	भौमातुग्लौ	४७	५
खाद्यं	खाद्ये	४७	१९
भवेरवे	भवेरवे	४८	७
५	६	४९	१५
छाया	छाय	५०	५
प्रकीत्यते	प्रकीर्त्यते	५५	२
कलो	कला	५७	१२
त्र्यशं	त्र्यंशं	५८	४
पयन्त	पर्यन्त	५८	२४
नवशांमें	नवांशमें	५८	टिप्पण्यां
स्वीमी	स्वामी	६१	२
कला १९० । १३	कला १९०१३	६१	६
भागदेके ३)	भागदेके) ३।	६२	७
नुणी	गुणी	६२	२६

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृ०	पं०
चंद्रकीहोवे	चंद्रकी होराहोवे	६६	४
दिय	दिया	६७	१७
उसक	उसका	७०	११
१७०२००	१७२००	७०	१३
सूधहै	सुधैहै	७१	१
मंतदशा	मंतर्दशा	७१	७
बु॑ः	बुधैः	७१	७
हतेताद्दाः	हतेताद्दा	८४	८
सतसठ	सनसठ	८५	८
युंक्तः	युंक्तो	८५	१४
पत्रीमार्ग	पत्रीमार्ग	८७	७
कृतेऽय	कृतेयं	८७	१७
दोप	दीप	८९	५
श्व क्षम	श्वँक्षम	८९	९
वर्षद्दीपक	वर्षदीपक	८९	१३
नमस्कर	नमस्कार	८९	१८
दयात्पूव	दयान्पूर्व	८९	२४
खाभ्रेभासा	खाभ्रेभाषा	९०	१८
नवांतांऽशा	नवातांऽशा	९४	१३
८००भभोग	८००केभभोग	९४	२४

६०	१९
नंबर १ ०	० ४ नंबर
२ ६००	१९० ५
३ १८६०	५८९ ६

६०		१९	
नंबर१	०	०	४नंबर
२	६००	१९०	५
३	१८६०	५८९	६

९५ १५

६०	१९
नंबर १ ०	
२ ६००	
३ २०५९	

६०		१९
नंबर १	०	
२	६००	
३	२०५९	

९५ १९

[illegible]

0.0	0.1	0.2	0.3	0.4	0.5	0.6	0.7	0.8	0.0
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
000	001	002	003	004	005	006	007	008	010
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
010	011	012	013	014	015	016	017	018	020
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
020	021	022	023	024	025	026	027	028	030
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
030	031	032	033	034	035	036	037	038	040
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
040	041	042	043	044	045	046	047	048	050
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
050	051	052	053	054	055	056	057	058	060
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
060	061	062	063	064	065	066	067	068	070
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

༡	༢	༣	༤	༥	༦	༧	༨	༩	༡༠
༡	༤	༩	༡༦	༢༥	༣༦	༤༩	༦༤	༨༡	༡༠༠
༡༡	༡༢	༡༣	༡༤	༡༥	༡༦	༡༧	༡༨	༡༩	༢༠
༡༢༡	༡༤༤	༡༦༩	༡༩༦	༢༢༥	༢༥༦	༢༨༩	༣༢༤	༣༦༡	༤༠༠
༢༡	༢༢	༢༣	༢༤	༢༥	༢༦	༢༧	༢༨	༢༩	༣༠
༤༤༡	༤༨༤	༥༢༩	༥༧༦	༦༢༥	༦༧༦	༧༢༩	༧༨༤	༨༤༡	༩༠༠
༣༡	༣༢	༣༣	༣༤	༣༥	༣༦	༣༧	༣༨	༣༩	༤༠
༩༦༡	༡༠༢༤	༡༠༨༩	༡༡༥༦	༡༢༢༥	༡༢༩༦	༡༣༦༩	༡༤༤༤	༡༥༢༡	༡༦༠༠
༤༡	༤༢	༤༣	༤༤	༤༥	༤༦	༤༧	༤༨	༤༩	༥༠
༡༦༨༡	༡༧༦༤	༡༨༤༩	༡༩༣༦	༢༠༢༥	༢༡༡༦	༢༢༠༩	༢༣༠༤	༢༤༠༡	༢༥༠༠
༥༡	༥༢	༥༣	༥༤	༥༥	༥༦	༥༧	༥༨	༥༩	༦༠
༢༦༠༡	༢༧༠༤	༢༨༠༩	༢༩༡༦	༣༠༢༥	༣༡༣༦	༣༢༤༩	༣༣༦༤	༣༤༨༡	༣༦༠༠
༦༡	༦༢	༦༣	༦༤	༦༥	༦༦	༦༧	༦༨	༦༩	༧༠
༣༧༢༡	༣༨༤༤	༣༩༦༩	༤༠༩༦	༤༢༢༥	༤༣༥༦	༤༤༨༩	༤༦༢༤	༤༧༦༡	༤༩༠༠
༧༡	༧༢	༧༣	༧༤	༧༥	༧༦	༧༧	༧༨	༧༩	༨༠
༥༠༤༡	༥༡༨༤	༥༣༢༩	༥༤༧༦	༥༦༢༥	༥༧༧༦	༥༩༢༩	༦༠༨༤	༦༢༤༡	༦༤༠༠
༨༡	༨༢	༨༣	༨༤	༨༥	༨༦	༨༧	༨༨	༨༩	༩༠
༦༥༦༡	༦༧༢༤	༦༨༨༩	༧༠༥༦	༧༢༢༥	༧༣༩༦	༧༥༦༩	༧༧༤༤	༧༩༢༡	༨༡༠༠
༩༡	༩༢	༩༣	༩༤	༩༥	༩༦	༩༧	༩༨	༩༩	༡༠༠
༨༢༨༡	༨༤༦༤	༨༦༤༩	༨༨༣༦	༩༠༢༥	༩༢༡༦	༩༤༠༩	༩༦༠༤	༩༨༠༡	༡༠༠༠༠

[illegible] ༡༦-༢ [illegible] ༤

[illegible] ༢ [illegible] ༣༠ [illegible] ༡༨

[illegible] ༡ [illegible] ༤-༡

၀၈၁	၀၈၂	၀၈၃	၀၈၄	၀၈၅	၀၈၆	၀၈၇	၀၈၈	၀၈၉	၀၉၀
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
၀၉၁	၀၉၂	၀၉၃	၀၉၄	၀၉၅	၀၉၆	၀၉၇	၀၉၈	၀၉၉	၁၀၀
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
၁၀၁	၁၀၂	၁၀၃	၁၀၄	၁၀၅	၁၀၆	၁၀၇	၁၀၈	၁၀၉	၁၁၀
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
၁၁၁	၁၁၂	၁၁၃	၁၁၄	၁၁၅	၁၁၆	၁၁၇	၁၁၈	၁၁၉	၁၂၀

[illegible]